₹15

दिसम्बर 2012

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कानि

- दंगों का मनोविज्ञान
  –विभूति नारायण राय
- सामाजिक सद्भाव का संकट
  –वेद व्यास
- महिला सशक्तीकरण
  –डॉ॰ मुहम्मद अहमद
- आतंकवाद : समस्या एवं समाधान
  –इक़बाल अहमद

اجمالی تعارف و تاثرات

درس گاہ اسلامی اٹکی

رانچی (جھارکھنڈ) 835301



دینی و دنیوی علوم کا حسین امتزاج

Address
NAZIM
DARSGAH ISLAMI
Itki, Ranchi (Jharkhand), Pin No. 835301

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 22 अंक 6 दिसम्बर 2012

उनको इसके सिवा कोई आदेश नहीं दिया गया था कि अल्लाह की बन्दगी करें अपने दीन को उसके लिए ख़ालिस करके, बिल्कुल एकाग्र होकर और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें । –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं
संपादकीय मामलों के लिए लिखें–
संपादक, 'कान्ति' मासिक
डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव
जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025
ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार
एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–
प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक
डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव
जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025
फ़ोन–09818799223 (011) 26949430, 26949539

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 15/- विशेषांक रु० 25/-
वार्षिक रु० 160/-, दो वर्ष 300/-, पांच वर्ष 700/-
सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–60 रियाल
यूरोप व अमेरिका से–25 US डॉलर
वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

सत्कर्म तुम करते रहो...

सत्कर्म तुम करते रहो जो कभी मिटता नहीं,
पाषाण पर रोपा गया पौधा कभी फलता नहीं ।

उठो, हिम्मत-हौसले से निज कर्तव्य में लग जाओ,
कुंठा, निराशा, हताशा को पास कभी मत लाओ ।
जो है सच्चा इन्सान कभी पुरुषार्थ से डिगता नहीं,
पाषाण पर.....

बनो पाषाण सत्य के, ईमानदारी को अपनाओ,
दूषित वातावरण को असीम स्वच्छता पहुंचाओ,
सुप्त अंतर्मन कभी अपने अभीष्ट को पाता नहीं,
पाषाण पर.....

सूरज डूबता है इसलिए कि उसे है फिर उगना,
अपमान सहकर इन्सान को सम्मान मिलता दुगना ।
संकल्प से इन्सान का सोचा हुआ टलता नहीं,
पाषाण पर.....

चींटी को देखो वह कितनी अधिक है स्वावलम्बी,
बार-बार गिर-गिरकर भी चढ़ जाती है गगनचुंबी ।
जो स्वाभिमानी है, वह दूसरों पर पलता नहीं,
पाषाण पर.....

है राह जो सबके लिए, उस राह पर कांटे न बो,
दो चार दिन सुख के लिए, इन्सानियत अपनी न खो।
इन्सान सच्चा वह है, जो इन्सान को छलता नहीं,
पाषाण पर.....

● **डॉ० मुहम्मद अहमद**



कहां क्या है ?

सत्कर्म तुम करते रहो... (कविता)	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	3
क़ुरआन ज्योति		5
हदीस मंजरी		6
भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ ठोस प्रयासों की ज़रूरत (संपादकीय)		7
मानवता में ही सबकी भलाई (आपके पत्र)		9
दिलों पर राज करने वाले महान सम्राट उमर (रज़ि॰)	–सुशीला	15
अपनी बुद्धि का सदुपयोग कीजिए	–अबरार अहमद	17
आतंकवाद की समस्या एवं समाधान	–इक़बाल अहमद	19
भारत-पाकिस्तान के एकीकरण का सवाल	–डॉ॰ रवि शर्मा 'मधुप'	21
चार ग़ज़लें	–अहद प्रकाश	25
गुजरात का नरमेध यज्ञ (विशेष आयोजन)	–एस॰एल॰ सागर	26-27
गुजरात का सच	–डॉ॰ राम पुनियानी	28
दंगों का मनोविज्ञान	–विभूति नारायण राय	29
बिंदिया (कहानी)	–मुहम्मद सलीम ख़ान	33
बोझ. (कविता)	–इन्तिज़ार नईम	40
जीवन-दर्शन (उद्‌गार)	–डॉ॰ सुरेन्द्र अज्ञात	41
महिला सशक्तीकरण–प्रयासों के पुनरावलोकन की ज़रूरत	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	43
सामाजिक सद्‌भाव का संकट	–वेद व्यास	45
चीन में मुसलमान (बालवीथी)	–संकलित	49



(1) संबंध-विच्छेद का एलान[1] है और अल्लाह और उसके रसूल की ओर से उन मुशरिकों (बहुदेववादियों) को जिनसे तुमने समझौते किये थे।[2] (2) तो तुम लोग देश में चार महीने और चल-फिर लो[3] और जान रखो कि तुम अल्लाह को विवश करने वाले नहीं हो, और यह कि अल्लाह सत्य के इन्कारियों को रुसवा करने वाला है।

–क़ुरआन, 9 : 1,2

1. यह व्याख्यान आयत 1 से 37 तक सन् 09 हि॰ में उस समय अवतरित हुआ था जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰) को हज के लिए रवाना कर चुके थे। उनके पीछे जब ये आयतें उतरीं तो नबी (सल्ल॰) ने हज़रत अली (रज़ि॰) को भेजा, ताकि हाजियों की जन-सभा में इसे सुनाएं और फिर निम्नलिखित चार बातों का भी एलान कर दें–

(1) जन्नत में कोई ऐसा आदमी दाख़िल न होगा जो इस्लाम को स्वीकार करने से इन्कार करे।

(2) इस साल के बाद कोई मुशरिक हज के लिए न आये,

(3) अल्लाह के घर के पास नंगे तवाफ़ (परिक्रमा) करना मना है।

(4) जिन लोगों के साथ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) का समझौता बाक़ी है, अर्थात जिन्होंने समझौता नहीं तोड़ा, उनके साथ समझौते की अवधि तक उसका पालन किया जाएगा।

नबी (सल्ल॰) के इस आदेश के अनुसार हज़रत अली (रज़ि॰) ने यह एलान 10 ज़िलहिज्जा को किया।

इस स्थान पर यह जान लेना भी लाभप्रद होगा कि मक्का की विजय के बाद इस्लामी दौर का पहला हज सन् 08 हि॰ में पुराने तरीक़े पर हुआ। फिर 09 हि॰ में दूसरा हज मुसलमानों ने अपने तरीक़े पर किया और मुशरिकों ने अपने तरीक़े पर। इसके बाद तीसरा हज सन् 10 हि॰ में विशुद्ध इस्लामी तरीक़े पर हुआ और यही वह मशहूर हज है जिसे "हज्जतुल विदाअ' कहते हैं। नबी (सल्ल॰) पहले दो साल हज के लिए तशरीफ़ न ले गये। तीसरे साल जब शिर्क का पूरी तरह अंत हो गया तब आपने हज अदा किया।

2. सूरा-8 (अनफ़ाल) आयत 58 में गुज़र चुका है कि जब तुम्हें किसी क़ौम से विश्वासघात (प्रतिज्ञाभंग करने और ग़द्दारी) की आशंका हो तो खुल्लम-खुल्ला उसका समझौता उसकी ओर फेंक दो और उसे सचेत कर दो कि अब हमारा तुम्हारा कोई समझौता बाक़ी नहीं है। इसी आचार-संहिता के अनुसार समझौतों की मंसूख़ी का यह आम ऐलान उन तमाम क़बीलों के विरुद्ध किया गया जो प्रतिज्ञा और वचन देने के बाद भी सदा इस्लाम के विरुद्ध षड्यंत्र करते रहे थे और अवसर मिलते ही वचन-पालन को एक किनारे रखकर दुश्मनी पर उतर आते थे। संबंध-विच्छेद के इस एलान से अरब में शिर्क और मुशरिकों का अस्तित्व मानो व्यावहारिक रूप से क़ानून के विरुद्ध (Out-law) हो गया और उनके लिए सारे देश में कोई शरण-स्थली न रही, क्योंकि देश का बड़ा भाग इस्लाम के शासनाधीन आ चुका था। इस एलान के बाद अरब के मुशरिकों के लिए कोई उपाय शेष न रहा कि या तो लड़ने पर तैयार हो जाएं और इस्लामी शक्ति से टकराकर दुनिया से मिट जाएं या देश छोड़कर निकल जाएं या फिर इस्लाम स्वीकार करके अपने आपको और अपने क्षेत्र को उस प्रशासन और व्यवस्था में दे दें जो देश के बड़े भाग को पहले ही इस्लामी राज्य का आधीन बना चुका था।

इस बेहतरीन उपाय की सार्थकता उस समय समझ में आ सकती है जबकि हम इस्लाम-विमुखता के उस फ़ितने को नज़र में रखें जो इस घटना के डेढ़ साल बाद ही (हज़रत अबू बक्र रज़ि॰ की ख़िलाफ़त के आरंभ में) पैदा हुआ था। अगर कहीं सन् 09 हि॰ के बराअत के इस ऐलान से शिर्क की संगठित शक्ति समाप्त न कर दी गयी होती और पूरे देश पर इस्लाम की वैधानिक शक्ति पहले ही न प्रभावी हो चुकी होती, तो (नहीं कहा जा सकता कि यह फ़ितना विद्रोह और गृहयुद्ध का कितना भयानक रूप धारण कर लेता और फिर इस्लाम का इतिहास क्या होता।)

3. यह एलान 10 ज़िलहिज्जा सन् 09 हि॰ को हुआ था। उस समय से 10 रबीउस्सानी सन् 10 हि॰ तक चार महीने की मोहलत उन लोगों को दी गयी कि इस बीच अच्छी तरह विचार करके (अपने लिए कोई राह तय कर लें)।

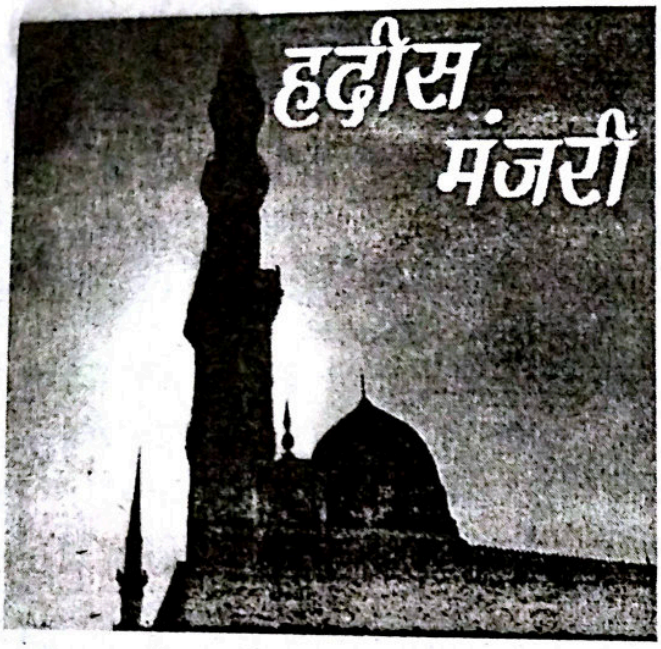

जीवन के अन्तिम चरणों में अधिक से अधिक सुकर्म करने का प्रोत्साहन

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "अल्लाह ने उस व्यक्ति के लिए किसी उज्र की गुंजाइश नहीं छोड़ी, जिसकी आयु लंबी की यहां तक कि वह साठ वर्ष को पहुंच गया ।" –बुख़ारी

विद्वानों ने कहा है कि इसका अर्थ यह है कि अल्लाह ने उसके लिए कोई उज्र नहीं छोड़ा जिसको इतनी मुद्दत तक मोहलत दी । जब कोई व्यक्ति उज्र के सिलसिले में चरम सीमा को पहुंच जाए, तो अरबी भाषा में कहा जाता है : 'अज़र्रजुलु' ।

● हज़रत आइशा (रज़ि॰) कहती हैं कि आप पर सूरा "इज़ा जाअ नसरुल्लाहि वलफ़तहु" के उतरने के बाद अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कोई नमाज़ नहीं पढ़ी, जिसमें आपने यह न कहा हो : "सुबहान-क रब्बना व बिहम्दि-क अल्लाहुम्मग़फ़िरली" (पाक और महान है तू ऐ हमारे रब, तेरी ही प्रशंसा है, ऐ अल्लाह, तू मुझे क्षमा कर दे)। –बुख़ारी, मुस्लिम

बुख़ारी और मुस्लिम में हज़रत आइशा (रज़ि॰) से एक रिवायत यह है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) अपने रुकूअ और सजदों में बहुत ज़्यादा यह कहा करते थे : "सुबहान-क अल्लाहुम्मा रब्बना व बिहम्दि-क अल्लाहुम्मग़फ़िरली" (पाक और महान है तू ऐ अल्लाह और प्रशंसा तेरी ही है, ऐ अल्लाह, तू मुझे क्षमा कर दे ।) आप यह क़ुरआन के आदेश के अनुसरण में कहते । क़ुरआन में अल्लाह तआला ने कहा है : "अत: तसबीह करो अपने रब की प्रशंसा के साथ और उससे क्षमा की प्रार्थना करो ।"

मुस्लिम की एक रिवायत में है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) मौत से पहले बहुत ज़्यादा यह पढ़ा करते थे : "सुबहान-क अल्लाहुम्मा व बिहम्दि-क, अस्तग़फ़िरुका व अतूबु इलैक" (पाक और महान है तू ऐ अल्लाह और प्रशंसा तेरी ही है, मैं तुझसे क्षमा-याचना करता हूं और तेरी सेवा में तौबा करता हूं ।) हज़रत आइशा (रज़ि॰) कहती हैं कि मैंने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), ये कैसे शब्द हैं जो मैं देख रही हूं कि आपने अब पढ़ने शुरू किये हैं ? आपने कहा : "मेरे लिए मेरी उम्मत के विषय में एक निशानी निश्चित की गयी है कि जब मैं उसको देखूं, तो इन शब्दों का उच्चारण करूं । और वह निशानी है : "इज़ा जाअ नसरुल्लाहि वलफ़तहु" (जब अल्लाह की मदद आ जाए और विजय हो ।) सूरा के अंत तक ।"

और मुस्लिम ही की एक रिवायत में आया है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) बहुत ज़्यादा यह कहा करते थे : "सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही अस्तग़फ़िरुल्लाह व अतूबु इलैह" (पाक और महान है अल्लाह और उसी की प्रशंसा है, मैं अल्लाह से क्षमा-याचना करता हूं और उसी की सेवा में तौबा करता हूं ।) हज़रत आइशा (रज़ि॰) कहती हैं कि मैंने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल, मैं देखती हूं कि आप बहुत ज़्यादा "सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही अस्तग़फ़िरुल्लाह व अतूबु इलैह" कहते रहते हैं । आपने कहा : "मुझे मेरे रब ने यह ख़बर दी है कि मैं निकट भविष्य में अपनी उम्मत (मुस्लिम समुदाय) में एक निशानी देखूंगा और जब मैं वह निशानी देखूं, तो बहुत ज़्यादा यह पढ़ूं : "सुबहानल्लाहि व विहम्दिही अस्तग़फ़िरुल्लाह व अतूबु इलैह" अतएव वह निशानी मैंने देख ली, वह यह है : "जब अल्लाह की मदद आ जाए और विजय हो मक्का पर । 'और तुम देखो कि लोग अल्लाह के दीन में दल के दल दाख़िल हो रहे हैं, तो तसबीह (गरिमागान) करो अपने रब की प्रशंसा के साथ और उससे क्षमा की प्रार्थना करो । निश्चय ही वह ज़्यादा से ज़्यादा तौबा क़ुबूल करने वाला है ।'

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय
हिन्दी वेबसाइटें
www.quranhindi.com
www.islamdharma.org
www.islamicwebdunia.com
www.islamic-videos.com

भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ ठोस प्रयासों की ज़रूरत

भ्रष्टाचार देश की बड़ी समस्याओं में से एक है । शासन-प्रशासन का कोई भी भाग इससे अछूता नहीं है । हर जगह भ्रष्टाचार का डंका बज रहा है । बिना रिश्वत के किसी भी विभाग में काम हो पाना बहुत मुश्किल है । इस मामले में देश की दोनों बड़ी राजनीतिक पार्टियों–कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी का रवैया समान है, लेकिन सैद्धांतिक तौर पर दोनों ही भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ हैं । व्यवहार में दोनों एक समान हैं । दोनों भ्रष्टाचार में आकंठ डूबी हुई हैं । अतः 'अनंत' भ्रष्टाचार में ग़ोता लगा रही कांग्रेस और उसके नेतृत्ववाली यू०पी०ए० सरकार से नैतिकता और शील-शुचिता की बात एवं आशा बेमानी है, वहीं शील-शुचिता, नैतिकता, चाल, चेहरा और चरित्र की दुहाई देने वाली भारतीय जनता पार्टी का व्यावहारिक प्रदर्शन बहुत चिंतनीय और दुखद है । कांग्रेस की तरह वह भी अपने सिपहसालारों के भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ तभी कुछ क़दम उठाती है जब वे सत्यानाश करके बदनाम हो चुके होते हैं । फिर दोनों पार्टियां भ्रष्टाचार पर उपदेश देती और जब उन पर आरोप लगे तो कुतर्कों से बचाव करती नज़र आती हैं । भाजपा पर भी गंभीर क़िस्म के आरोप लगते रहे हैं । कर्नाटक के मुख्यमंत्री येदुरप्पा का मामला देश समाज के सामने है । इस बार भाजपा अध्यक्ष भी नहीं बचे । हालत इतनी गंभीर है कि नितिन गडकरी कोई सफ़ाई तक नहीं दे पा रहे हैं । वे बस जांच कराने की बात कहते हैं । आरोप है कि उन्होंने महाराष्ट्र में 1995-1999 के दौरान बतौर लोक निर्माण मंत्री रहते हुए जिस आइडियल रोड बिल्डर्स (आई०आर०बी०) समूह नामक निर्माण कंपनी को ठेका दिया उसी ने उनकी कंपनी पूर्ति पावर एंड शूगर लिमिटेड में भारी निवेश किया । आई०आर०बी० के अलावा पूर्ति समूह में जिन अन्य 16 कंपनियों का निवेश है उनका पता संदिग्ध है । तथ्य यह भी उजागर हुआ है कि कुछ कंपनियों का पता झुग्गीवासियों के लिए बनायी जा रही एक निर्माणाधीन इमारत में है । इसके अलावा निवेश करने वाली कंपनियों के डायरेक्टर में गडकरी का ड्राइवर, एकाउंटेंट और उनके पुत्र निखिल के मित्र का नाम है ।

कांग्रेस ख़ुश नहीं है कि उसे बैठे-बिठाये भाजपा को घेरने का मौक़ा मिल गया है, क्योंकि सोनिया गांधी के दामाद राबर्ट वढेरा पर डी०एल०एफ़० से आर्थिक लाभ लेने का आरोप है । इस कंपनी ने बढेरा को 65 करोड़ रुपये का बिना ब्याज का क़र्ज़ दिया । उन्होंने इसका निवेश मिट्टी के भाव संपत्ति ख़रीदने में किया, जो वर्तमान में तीन सौ करोड़ रुपये तक पहुंच गयी । इस रक़म के साथ ही पूर्व केन्द्रीय इस्पात मंत्री एवं हिमाचल प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह भी भ्रष्टाचार के घेरे में हैं । उन पर इस्पात मंत्री के कार्यकाल के दौरान दो करोड़ 28 लाख रुपये रिश्वत लेने का आरोप है । वे 2009 से 2011 के बीच केन्द्रीय मंत्री थे । इस्पात इंडस्ट्रीज़ लिमिटेड ने स्टील एंड कोल

इंडस्ट्रीज के अधिकारियों को साल 2009-10 के दौरान कुछ पेमेंट्स की थी । एक न्यूज़ चैनल ने यह आरोप इनकम टैक्स डिपार्टमेंट के दस्तावेज़ों के हवाले से लगाये गये हैं । इन दस्तावेज़ों में अक्तूबर 2009 से अक्तूबर 2010 तक किसी 'VBS' को 2.28 करोड़ रुपये देने का ज़िक्र किया गया है । माना जा रहा है कि यह VBS पूर्व इस्पात मंत्री वीरभद्र सिंह को दिया शॉर्ट नेम है । चैनल की रिपोर्ट के मुताबिक़, इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने दिसम्बर 2010 में इस्पात इंडस्ट्रीज़ लिमिटेड पर मारे गये छापे के दौरान बरामद हुई डायरी के आधार पर ये दस्तावेज़ तैयार किये गये हैं । डायरी में लिखे गये 'अमाउंट पेड टू VBS' से राजनीतिक बवाल खड़ा हो गया है । वीरभद्र सिंह का कहना है कि VBS का मतलब वीरभद्र सिंह नहीं है । उन्होंने कहा कि बी॰जे॰पी॰ नेता अरुण जेटली और हमीरपुर के सांसद अनुराग ठाकुर ने उन्हें फंसाने के लिए साज़िश रची है । ग़ौरतलब है कि अनुराग ठाकुर हिमाचल के मुख्यमंत्री प्रेम कुमार धूमल के बेटे हैं । उनके शिमला की विशेष अदालत ने 23 साल पुराने भ्रष्टाचार के एक मामले में उन पर आरोप पहले ही तय कर रखा है । उन पर कारोबारियों से घूस लेने का आरोप है । सबूत के तौर पर आडियो सी॰डी॰ भी उपलब्ध है । वास्तव में भ्रष्टाचार पर क़ाबू पाने के लिए इन्सान की मानसिकता में बदलाव लाने की ज़रूरत है । यह बदलाव इस रूप में होना चाहिए कि इन्सान की यह दृढ़ धारणा हो जाए कि सर्वशक्तिमान ईश्वर उसके अच्छे कामों पर उसे पुरस्कृत करेगा और कदाचारों पर दंडित करेगा । अत: भ्रष्टाचार करने पर उसकी हर हाल में पकड़ होगी ।

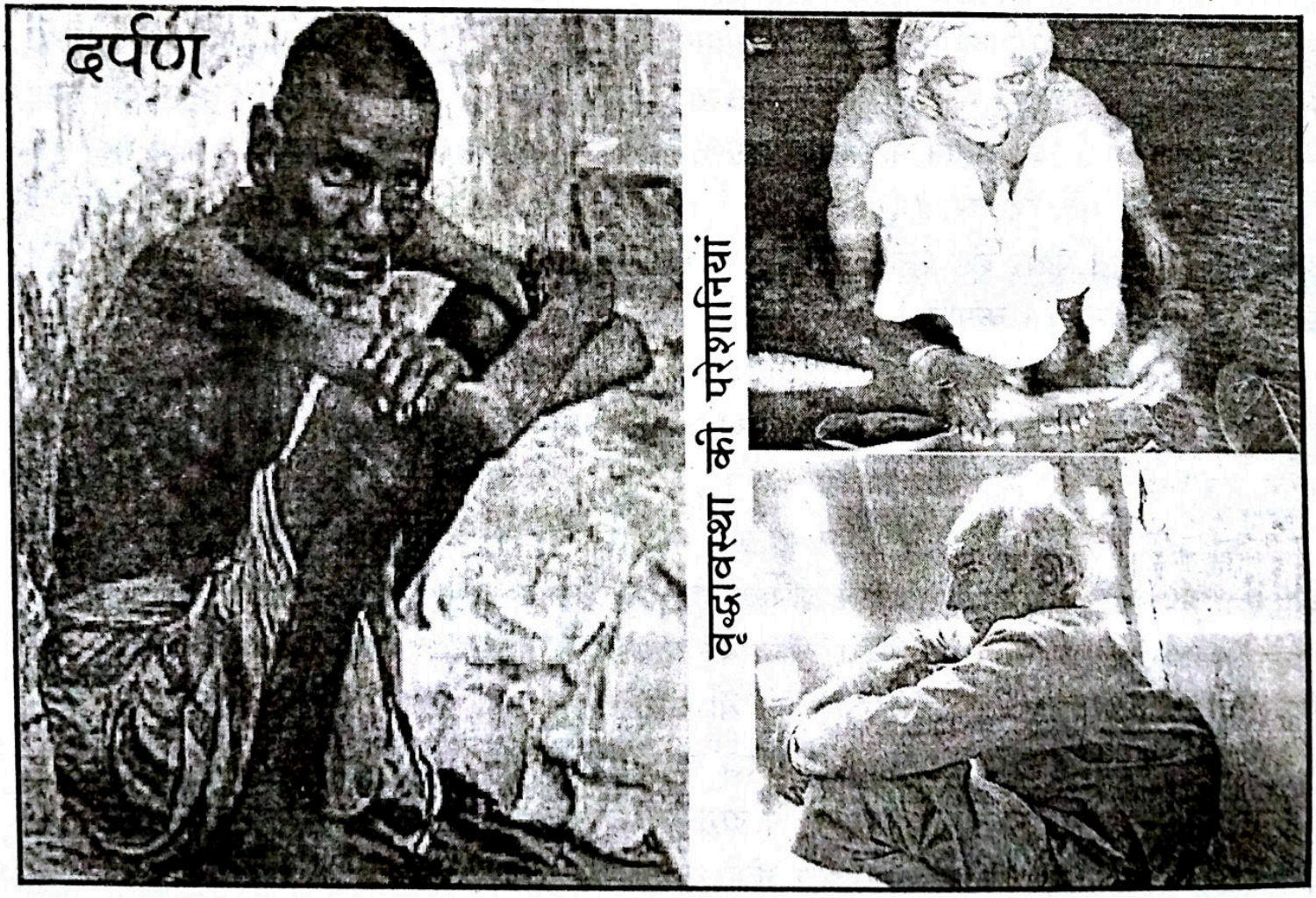

मानवता में ही सबकी भलाई

'कान्ति' हिन्दी मासिक पत्रिका अक्तूबर 2012 का अंक बेहतरीन लगा । ''मानवता को इस्लाम की देन'' विशेषांक मानवीय मूल्यों, जनकल्याण प्रकृति सम्प्रदायों की सुरक्षा एवं जीव-जन्तु की सेवा ही सब कुछ जतलायी है । इन्सान मनुष्य की मन लगाकर सेवा करें तो संसार में इससे बड़ा कोई धर्म नहीं है । असहाय निराश्रित, अपाहिज, वृद्ध, अपंग, निर्वल और बेसहारा व्यक्ति की पूजा ही धर्म है जैसा कि गीता में दर्शाया गया है कि कर्म किये जा, फल की इच्छा मत कर...! आज के आधुनिक और प्रौद्योगिक सूचना क्रांति एवं वैश्विक कलयुग (मशीनरी यंत्रों द्वारा किया गया कर्म) के समय इन्सान की मानवता शिथिल पड़ गयी है । वैश्वीकरण के युग में प्रत्येक मनुष्य को तुरंत-फुरन्त तत्काल-अर्जेन्ट, इसी समस अर्थात अभी परिणाम चाहिए ।

सब्र, धैर्य, शांति, पेशेंस नाम की शब्दावली इन्सान के ज़ेहन से हट गयी है केवल इन्सान के कर्म में तनाव और कुप्रभाव भर गया है क्योंकि संसार की प्रकृति के भी कुछ नियम हैं । इस पत्रिका में इस्लाम धर्म ने मानवता के लिए विभिन्न पहलुओं और मुद्दों पर गंभीर प्रकाश डाला है । निम्न प्रकार के बिन्दुओं से हमें जीवन जीने के लिए विशेष प्रकार का योगदान मिलता है । जैसे : स्वास्थ्य, सामाजिक व्यवस्था, ईश्वरवाद की यार्थकता, ब्रह्माण्ड की संरचना, विवेक और ज्ञान का महत्व, व्यावहारिक शिक्षा, इस्लाम के सुखद अनुभव, ब्याजीकरण से बचना, इन्सान की अन्तरात्मा की आवाज़, कर्म व धार्मिक प्रवचन, हिंसा न करना, झूठ न बोलना, चोरी और अपहरण न करना, बेरोज़गार व बेसहारा कामगारों की मदद करना, मानव के कल्याण हेतु शांति व अमन का संदेश देना, उचित दृष्टिकोण रखना जैसे दहेज प्रथा, बाल विवाह, महिलाओं को समाज में ऊंचा स्थान दिलाना महिला व बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाना, समरसता की मैत्री रखना, पर्यावरण का संरक्षण करना ।

भौतिकी युग में विज्ञान के क्षेत्र में आविष्कार करना इससे अंधविश्वास का ह्रास होगा, अन्याय, भ्रष्टाचार, भय, भूख, बलात्कार को मिटाना–सभी धर्मों की इज़्ज़त करना, सभी समाज के लोगों को रोज़गार दिलाना, नशाख़ोरी, जुआ, ग़लत व्यवहार इत्यादि को ख़त्म करना । लोक व परलोक का भेदभाव मिटाना, इन्सान के लिए स्वर्ग इसी पृथ्वी पर है आपके सतत् कार्य का परिणाम सुखी जीवन है । बहुजन हिताय व बहुजन सुखाय के सिद्धांत को चहुंओर फैलाना और इन्सान अपने भविष्य के लिए वर्तमान में स्वयं अपना दीपक बने, जभी संसार के प्राणियों को अपराध, भ्रष्टाचार और अन्याय के अंधकार से कल्याणकारी उजाला प्रस्तुत कर सकता है ।

'कान्ति' पत्रिका की अपार सफलता एवं निरंतर प्रकाशन के लिए शुभाषीश !

डॉ॰ जसवंत सिंह जनमेजय
कटवरिया सराय, नयी दिल्ली-76

उत्तमोत्तम विशेषांक

'कान्ति' का अक्तूबर 2012 अंक मिला जो कि विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया गया है । बहुत ही अच्छा अंक बन पड़ा है । मानवता को इस्लाम की देन से संबंधित आपने काफ़ी सामग्री संकलित की है । मैं तथा अन्य भी कितने ही लोग होंगे जो इस्लाम के बारे में कम जानते हैं और आप हमें इस्लाम के बारे में जानकारी देकर बहुत बढ़िया कार्य कर रहे हैं । इस विशेषांक के लिए आलराउंड अकादमी की ओर से आपको शुभकामनाएं भेजता हूं ।

अमित कुमार लाडी
मुख्य संपादक 'आलराउंड' मासिक,
फ़रीदकोट (पंजाब)

महत्वपूर्ण विशेषांक

अक्तूबर 2012 'मानवता को इस्लाम की देन' वास्तव में यह विशेषांक अपने विद्वतापूर्ण लेखों के कारण महत्वपूर्ण बन गया है । विद्वान लेखकों ने इस्लाम धर्म में समाज की विभिन्न इकाइयों, व्यक्तियों के आचार-विचार, धर्म-कर्म व्यवहार तथा निरीह वर्ग के प्रति, मूक पशुओं के प्रति नैतिक दृष्टिकोणों, फिर ज्ञान की महत्ता कर्म के धर्म मानने की

अवधारणा तथा अहिंसा दहेज कुरीतियों के विरोध में परलोक संवारने हेतु सतत अच्छे कर्म करना तथा मानवीय जैसे गुण को सर्वोपरि रखने की बात कही गयी है । वास्तव में कर्म ही धर्म है वही सत्य बाक़ी सब छलावा है ।

डॉ॰ अन्नपूर्णा श्रीवास्तव
कोटा, राजस्थान

उच्चादर्श

'कान्ति' मासिक पत्रिका मुझे कई वर्षों से मिल रही है । आपका धन्यवाद ! अक्तूबर 2012 ई॰ का विशेषांक 'मानवता को इस्लाम की देन' बहुत अच्छा लगा । सारे लेख एक से बढ़कर एक हैं ।

इस्लामी जगत के दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर (रज़ि॰) के बारे में पढ़कर बहुत हैरत हुई । उन्होंने एक ग़रीब महिला की प्रसव सेवा के लिए स्वयं अपनी पत्नी को बुला लिया । रोते बच्चों के लिए बैतुलमाल से राशन की बोरी खुद अपनी पीठ पर उठाकर ले गये । ऐसा उच्च आदर्श आजकल कहां मिलता है ।

बाबू राम लूथरा
जालंधर

स्तरीय सामग्री

मुझे आपकी उच्च स्तरीय पत्रिका 'कान्ति' (मासिक) के अवलोकन का सतत अवसर मिल रहा है । एतदर्थ आपकी आत्मीयता के प्रति हार्दिक कृतज्ञता । पत्रिका के हर अंक में स्तरीय सामग्री का समावेश रहता है । श्रेष्ठ संपादन हेतु हार्दिक बधाई !

डॉ॰ त्रिलोकी सिंह
करछना, इलाहाबाद (उ॰प्र॰)

नायाब तोहफ़ा

''मानवता को इस्लाम की देन'' विशेषांक निकाल कर आपने पाठकों को एक नायाब तोहफ़ा दिया है । इस अंक की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है । इस अंक में इस्लाम से संबंधित अनेक विषयों पर प्रकाश डाला गया है । बहुत-बहुत धन्यवाद !

इस विशेषांक के पृष्ठ 87 पर ''इस्लाम : कमज़ोरों के अधिकारों का रक्षक'' शीर्षक से जो लेख प्रकाशित हुआ है उसमें लिखा है कि 56 वर्ष पूर्व मानवाधिकारों की सार्वभौमिक उद्घोषणा हुई थी, जबकि 10 दिसम्बर 1948 से सितम्बर 2012 तक लगभग 64 वर्ष होते हैं । कृपया ध्यान दें ।

यशपाल जैन आदर्श
राजापार्क, जयपुर (राज॰)

सराहनीय

माननीय संपादक महोदय सादराभिवादना, राष्ट्रभाषा हिन्दी भाषियों की लोकप्रिय पत्रिका 'कान्ति' मासिक पत्रिका का ''मानवता को इस्लाम की देन'' विषय पर विशेषांक अक्तूबर 2012 मिला । बड़ी खुशी हुई । हार्दिक धन्यवाद । इस सराहनीय संग्रहणीय और स्मरणीय अंक पर अपनी निष्पक्ष प्रतिक्रिया निकट भविष्य में प्रेषित हो सकेगी ।

पं॰ बी॰एन॰ मुदगिल
प्रेस सदन, गद्दीखेड़ी, रोहतक (हरि॰)

माननीय, संग्रहणीय

आपके यशस्वी संपादन में प्रकाशित मासिक 'कान्ति' का अक्तूबर 2012 अंक मिला, एतदर्थ हार्दिक धन्यवाद । मानवता के लिए इस्लाम के अवदान पर केन्द्रित प्रस्तुत अंक अपनी अनूठी एवं उपयोगी सामग्री के बल पर पठनीय, मननीय, आदरणीय एवं संग्रहणीय भी है । 'कान्ति' के माध्यम से आप हिन्दी भाषा एवं साहित्य का भी स्तुत्य संपोषण कर रहे हैं ।

आपका यह साहित्यिक अनुष्ठान विश्व मानवता को सर्वांगीण सत्य का दर्शन करा पाने में सफल होगा, ऐसी आशा है । इस महत-सत्कार्य हेतु शतशः साधुवाद बधायी ।

भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'
संपादक-'सहकार' पत्रिका
'साहित्य मंडप' चन्द्रलोक कालोनी,
शहज़ादपुर, अकबरपुर, अंबेडकर नगर (उ॰प्र॰)

सच का आईना

'कान्ति' के नवम्बर 2012 अंक में 'गो-प्रेम' कुछ विचारणीय बातें' के अंतर्गत आपने जो शोधपरक तथ्य प्रस्तुत किये हैं, वे सच का आईना तो हैं ही साथ ही भारत जैसे विशाल देश में प्रादेशिक स्तर पर धर्म की अपनी-अपनी पृथक मान्यताएं तथा भावनाएं हैं, यह तथ्य भी आईने की तरह सामने आता है ।

किन्तु फिर भी मानवता के आधार पर और दूसरे सम्प्रदाय के लोगों की भावनाओं की क़द्र करते हुए हमें अपने क्षेत्र विशेष में ऐसा कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए । विभिन्न आदिवासी अपने-अपने क्षेत्र विशेष में अपने धर्म की मान्यता के आधार पर कुछ भी भक्षण करें या त्याग करें,

किन्तु विकसित समाज को अधिक से अधिक शाकाहार पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए । ये दीर्घायु के लिए भी उचित है ।

शराफ़त अली ख़ान
फ़ाइक़ इन्कलेव, बरेली (उ०प्र०)

क़यामत और क़ुरआन

इस दुनिया में हम देखते हैं कि व्यक्ति अपने माता-पिता, बीवी-बच्चों और भाई-बहनों के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाता है । वह अपने नातेदारों को जितना हो सके, उतना लाभ पहुंचाता है । उनके लिए वह अपने धन का दुरुपंयोग तथा अपने रसूख़ का इस्तेमाल करने से नहीं चूकता है । अपने धन और रसूख़ के बल पर वह अपने नातेदारों की दुनिया संवारता है । उदाहरण के लिए--अपने नातेदारों को बड़े-बड़े ठेके दिलवाना, हराम से कमायी गयी दौलत से अपने बीवी-बच्चों को पालना इत्यादि ।

परन्तु जब क़यामत क़ा दिन आएगा, अर्थात जब मुर्दों को ज़िन्दा किया जाएगा तो ये ही लोग उसके ख़िलाफ़ गवाही देंगे कि ऐ अल्लाह इसने हमारा पालन-पोषण हराम तरीक़े से किया ।

दरअस्ल उस दिन सबको अपनी-अपनी पड़ी होगी । उस दिन न धन काम आएगा और न संतान ।

''जबकि न धन कोई लाभ पहुंचाएगा और न संतान, सिवाय इसके कि कोई व्यक्ति भला-चंगा दिल लिए हुए अल्लाह के पास हाज़िर हो ।'' (क़ुरआन, 26:88-89)

यह दिन ऐसा होगा कि उस दिन कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा, चाहे वह उसका सबसे क़रीबी नातेदार ही क्यों न हो ।

''कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा और अगर कोई लदा हुआ प्राणी अपना बोझ उठाने के लिए पुकारेगा तो उसके बोझ का एक छोटा हिस्सा भी बटाने के लिए कोई न आएगा, चाहे वह बहुत ही क़रीब का नातेदार ही क्यों न हो ।'' (क़ुरआन, 35:18)

क़यामत के दिन कलेजे मुंह को आ रहे होंगे तथा ज़ालिमों का कोई दोस्त या सिफ़ारिशी नहीं होगा । जिन लोगों की ख़ातिर उसने दुनिया में ज़ुल्म किया, वे ही लोग क़यामत के दिन उसके ख़िलाफ़ खड़े हुए नज़र आएंगे । उस दिन अल्लाह इन सबके बीच जुदाई डाल देगा ।

''ऐ नबी, डरा दो इन लोगों को उस दिन से जो क़रीब आ लगा है । जब कलेजे मुंह को आ रहे होंगे और लोग चुपचाप ग़म के घूंट पिये खड़े होंगे । ज़ालिमों का न कोई चाहने वाला दोस्त होगा और न कोई सिफ़ारिश करने वाला, जिसकी बात मानी जाए ।'' (क़ुरआन, 40:18)

''क़ियामत के दिन न तुम्हारी नातेदारियां किसी काम आएंगी, न तुम्हारी संतान । उस दिन अल्लाह तुम्हारे बीच जुदाई डाल देगा, और वही तुम्हारे कर्मों का देखने वाला है ।'' (क़ुरआन, 60:3)

Prop : Abid Hussain
09413037652
09252235194

Shop : Mujahid Hussain
09214747172

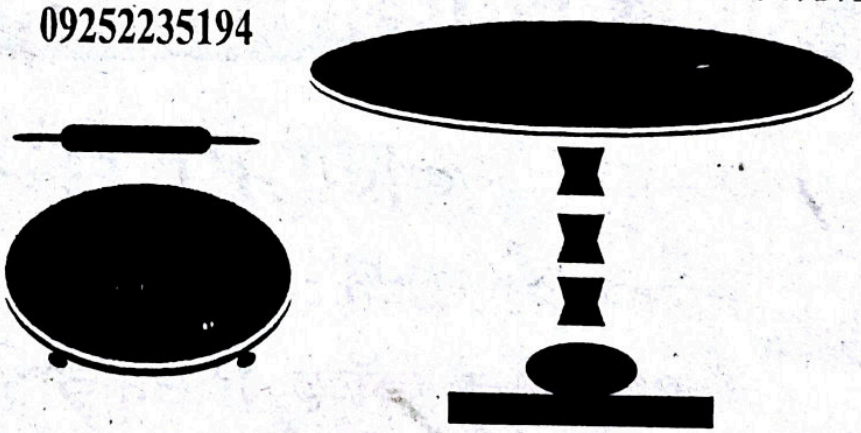

कान्ति मार्बल हैंडीक्राफ्ट

सभी प्रकार के वन पीस और ज्वाइंट पीस चकलों के निर्माता व थोक विक्रेता, मार्बल के फव्वारे तथा टेबल, टेलीफ़ोन स्टेंड, नोजल लैंप, गमले, घड़ी व फैंसी आइटम

Shop : Hotel Moti Mahal, Manglana Road, Makrana-341505
Fact : Bypass Mor, Opp : Sai Kirpa Petrol Pump, Makrana Road, Borawad (Raj.)

Md. Rashid
9835125717

N. S. ENCLAVE

Masud Ahmad
9431107797

आप मकान,
दुकान, कोठी,
रिहाइशी मकान एवं
सस्ते और सुन्दर
प्लाट एवं फ्लैट
के लिए
संपर्क करें।

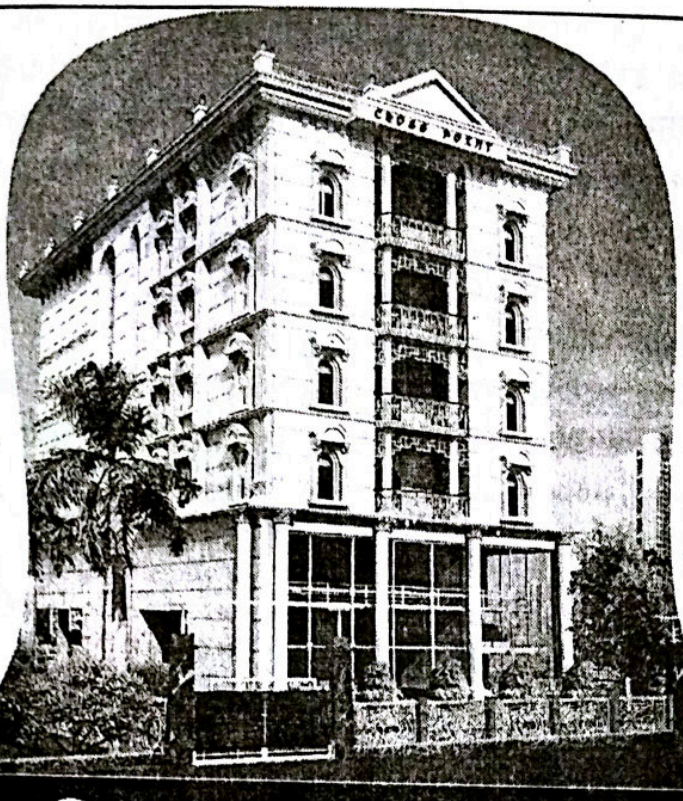

साथ में
बी॰ एड॰ कॉलेज
एवं
इंजीनियरिंग कॉलेज
की भी सुविधा
उपलब्ध है।

साथ में मस्जिद एवं क़ब्रिस्तान भी है।

नग़मा ड्रेसेज

हमारे यहां फैंसी साड़ियां, रेडिमेड ड्रेस, टी शर्ट,
बाबा सूट, फ्रॉक, मिडी, नाइटी, स्कूल ड्रेस,
जींस पैंट एवं फैंसी रेडिमेड होजरी वस्त्रों के लिए पधारें।

OFFICE CONTACT : NAGMA DRESSES
Booti Chowk, Dubey Market, Ranchi (Jharkhand)

CONTACT No. 2 Masud Ahmad, Hamid Book Depot,
Opp. Urdu Library,
Main Road, Ranchi-834001 (Jharkhand)

Mobile : 09431107797

क़ियामत के दिन घनिष्ठ मित्र भी अपने घनिष्ठ मित्र को न पूछेगा और अपराधी चाहेगा कि ज़मीन के सारे लोगों को बदले में दे दे और इसके एवज़ में वह अज़ाब से बच जाए ।

"और कोई घनिष्ठ मित्र अपने घनिष्ठ मित्र को न पूछेगा, हालांकि वे एक-दूसरे को दिखाये जाएंगे । अपराधी चाहेगा कि उस दिन के अज़ाब से बचने के लिए अपनी औलाद को, अपनी बीवी को, अपने भाई को, अपने निकटतम परिवार को जो उसे पनाह देने वाला था और ज़मीन के सब लोगों को बदले के रूप में दे दे और यह उपाय उसे छुटकारा दिला दे ।" (क़ुरआन, 70:10-14)

क़ियामत के दिन इन्सान को अपने सिवा किसी का होश न होगा और वह अपनी औलाद तक से दूर भागेगा । उस दिन फ़ैसला पूर्णतया अल्लाह के अधिकार में होगा ।

"उस दिन आदमी अपने भाई और अपनी मां और अपने बाप और अपनी पत्नी और अपनी औलाद से भागेगा । उनमें से हर व्यक्ति पर उस दिन ऐसा समय आ पड़ेगा कि उसे अपने सिवा किसी का होश न होगा ।"

(क़ुरआन, 80:34-37)

"यह वह दिन है जब किसी व्यक्ति के लिए कुछ करना किसी के बस में न होगा, फ़ैसला उस दिन बिल्कुल अल्लाह के अधिकार में होगा ।" (क़ुरआन, 82:19)

अबरार अहमद

(लाखेरी वाले)

कोटा जंक्शन, कोटा (राज॰)

पठनीय

मैं आपकी पत्रिका 'कान्ति' का नियमित पाठक हूं । कुछ माह पहले यह पत्रिका एक मित्र द्वारा मुझे प्राप्त हुई । मैं इसके विषय-वस्तु के संकलन से काफ़ी प्रभावित हुआ । ऊर्दू के साथ-साथ हिन्दी के पाठक भी इसे काफ़ी दिलचस्पी से पढ़ते हैं । आपके इस साहसिक क़दम की मैं प्रशंसा करता हूं ।

पुरुषोत्तम

बेतिया, प॰ चंपारण

लोकतंत्र को पार्टी तंत्र से बचाएं

राजनीतिक पार्टियों ने जनतंत्र की मूल भावना को नष्ट करके, लोकतंत्र को पार्टी तंत्र बना दिया है जिसमें चुनावी प्रत्याशी द्वारा वोट तो जनता से लिए जाते हैं पर जीत जाने के बाद काम, पार्टी का किया जाता है जो एक प्रकार की चुनावी धोखाधड़ी है ।

निर्वाचन आयोग को अपने चुनाव सुधार उपायों में सभी प्रत्याशियों के लिए निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ने का नियम बनाना चाहिए ताकि सही व्यक्ति प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ सके और जनता भी सही व्यक्ति को चुन सके । चुनाव प्रक्रिया पूरी होने के बाद जो निर्वाचित प्रतिनिधि हों वे अपनी पसन्द की पार्टी को सरकार बनाने हेतु समर्थन देने के लिए स्वतंत्र हों और जिस पार्टी विशेष की नीतियों व कथनी-करनी को बहुमत सदस्यों का समर्थन प्राप्त हो, उस पार्टी की सरकार बने । इस प्रकार का चुनाव सुधार, बड़े बलिदानों से प्राप्त हमारे लोकतंत्र की प्राण रक्षा के लिए बहुत ज़रूरी है ।

अगर सरकार प्रभावी लोकपाल बिल की तरह ही इस उपयोगी चुनाव सुधार में उदासीन भाव दर्शाये अथवा विपरीत आचरण करे तो जनता जनार्दन को अपने स्तर पर यह तय करने का संवैधानिक अधिकार प्राप्त है कि वह किसी भी पार्टी के प्रत्याशी को वोट नहीं दे और जो लोग 'अ प क्ष' अर्थात निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में सामने हों उनमें से अपना प्रतिनिधि चुन लें, ताकि वह सही अर्थों में जन-प्रतिनिधि हों, न कि पार्टी प्रतिनिधि ।

स्वामी तृप्तानंद

भाटिया आयुर्वेद स्टोर, शाकभाजी मार्केट,

ज़िला-अमरेली (गुजरात) 365601

सबसे बड़ा आतंकी

मानवाधिकारों और नागरिक स्वतंत्रता का सबसे अधिक उल्लंघन अमेरिका करता रहा है । सबसे पहले उसने एक करोड़ रेड इंडियंस की हत्या की थी । 60 लाख अफ़्रीक़ियों को मारा था । 10 लाख वियतनामियों की हत्या की । अभी एक लाख इराक़ी और 2.5 लाख अफ़ग़ानियों की हत्या की । 1776 से 2005 ई॰ तक अमेरिका 220 बार बहुत से देशों पर हमला कर चुका है । दूसरे विश्व युद्ध के बाद वह 23 देशों पर बमबारी कर चुका है । 1945 में अमेरिका ने जापान के दो शहरों पर एटम बम गिराये थे जिनसे 1.5 लाख लोगों की जान गयी । अब पेट्रोल और गैस का भंडार ईरान उसके निशाने पर है । लोगों अमेरिका से सावधान !

हसनैन कैफ़

भंडारा, महाराष्ट्र

मदद के लिए अपील

जामिया मिस्बाहुल उलूम चौकोनियां, पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक जाना-माना तालीमी इदारा है। यह इदारा सिद्धार्थ नगर ज़िला के ग्रामीण क्षेत्र में है। यहां लगभग सभी राज्यों और पड़ोसी देश नेपाल के छात्र तालीम हासिल कर रहे हैं। यह इदारा आधी सदी से तालीम व तर्बियत के मोर्चे पर मुस्लिम समाज की सेवा कर रहा है। यहां प्राइमरी से लेकर आलिमीयत तक की तालीम का पूरा इन्तिज़ाम है। यहां दीनी और अस्री उलूम को एक ख़ास इम्तिज़ाज के साथ समोया गया है, जिसके कारण जामिया को तालीमी मैदान में एक अलग और प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है। यहां क़याम और तआम की सारी सहूलतें उपलब्ध हैं। जामिया मिस्बाहुल उलूम की विशेषता तालीम के साथ इस्लामी बुनियादों पर छात्रों की मिसाली तर्बियत करना है।

जामिया वेफ मंसूबे

● मर्कज़ी लाइब्रेरी की तामीर ● जामिया की मस्जिद के अधूरे कामों को पूरा करना ● लड़कियों के लिए अलग दर्सगाह की तामीर ● टेक्निकल सेन्टर का क़याम ● होस्टल की तामीर ● अनाथालय की तामीर ● फैमिली क्वार्टर्स की तामीर

अह्ले ख़ैर हज़रात से दरख़्वास्त है कि जामिया की दिल खोलकर मदद करें और अल्लाह वेफ यहां उसका बदला पाएं।

—: भेजने का पता :—

जामिया मिस्बाहुल उलूम

चौकोनियां भारत भारी, सिद्धार्थनगर-272191

फ़ोन : 09670641947, 09451097177

जामिया का बैंक खाता नं०

A/c No. 30290663653 S.B.I. डुमरियागंज, कोड-1250

A/c No. F.C.R. CD-149 सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया बेवॉ चौराहा

दिलों पर राज करने वाले महान सम्राट उमर (रज़ि॰)

● सुशीला

रात का समय था । सारा मदीना शहर सोया पड़ा था । उसी समय हज़रत उमर (रज़ि॰) शहर से बाहर निकले । तीन मील जाने के बाद एक औरत दिखायी दी । वह कुछ पका रही थी । पास ही दो तीन बच्चे रो रहे थे । सम्राट (ख़लीफ़ा) हज़रत उमर (रज़ि॰) ने उस औरत से पूछा, "ये बच्चे क्यों रो रहे है?" औरत ने जबाब दिया, "भूखे हैं । कई दिन से खाना नहीं मिला । आज भी कुछ नहीं है । ख़ाली हांडी में पानी डाल कर पका रही हूं ।

हज़रत ने पूछा, "ऐसा क्यों कर रही हो ?"

औरत ने जवाब दिया, "बच्चों का मन बहलाने के लिए ।"

हज़रत उमर (रज़ि॰) तड़प उठे । उसी समय वापस लौटे । ख़ज़ाने से घी, आटा और खजूरें ली । नौकर से बोले, "इन्हें मेरी पीठ पर बांध दो ।" नौकर ने कहा, "यह आप क्या कर रहे हैं ? मैं ले चलता हूं ।" हज़रत उमर (रज़ि॰) ने जबाब दिया, "क़यामत में मेरा बोझ तुम नहीं उठाओगे ।"

सब चीज़ें वे ख़ुद लाद कर ले चले । उसी औरत के पास पहुंचे । उसने ये चीज़ें देखी तो बहुत ख़ुश हुई । जल्दी-जल्दी आटा गूंथा । हांडी चढ़ायी । हज़रत उमर (रज़ि॰) चूल्हा फूंकने लगे । खाना तैयार हुआ । बच्चों ने पेट भर कर खाया । खाकर उछलने कूदने लगे । हज़रत उमर (रज़ि॰) देखते थे, ख़ूब ख़ुश होते थे । मां भी बहुत ख़ुश थी । बार-बार दुआएं दे रही थी । कहती थी, "ख़लीफ़ा तुमको होना चाहिए । उमर (रज़ि॰) इस क़ाबिल नहीं है ।"

बेचारी ग़रीब मां ! उसे कौन बताता कि वह किससे बातें कर रही है ।

एक रात उमर (रज़ि॰) फिर ऐसे ही घूम रहे थे । देखा एक बद्दू अपने ख़ेमे के बाहर बैठा हुआ है । वह भी उसके पास जा बैठे । इधर-उधर की बातें होने लगी । बीच-बीच में कहीं से रोने की आवाज़ आ रही थी । पता लाग कि ख़ेमे के भीतर कोई रो रहा है । पूछा, "कौन रो रहा है ?"

बद्दू ने जबाब दिया, "मेरी बीबी ।"

"क्या बात है ?"

"बच्चा होने वाला है ।"

"क्या वह अकेली है ।"

"हां ।"

हज़रत उमर (रज़ि॰) घर लौटे । अपनी बीवी को साथ लिया । फिर वहीं आये । रोने की आवाज़ उसी तरह आ रही थी । बद्दू से बोले, "यह मेरी बीवी है । तुम कहो तो यह भीतर चली जाए ।"

नेकी और पूछ-पूछ ! बद्दू बहुत ख़ुश हुआ । हज़रत उमर (रज़ि॰) की बीवी भीतर चली गयी । कुछ देर बाद बच्चा पैदा हुआ । भीतर से ही उनकी बीवी ने पुकारा,



"अमीरुल मोमिनीन, अपने साथी को बधायी दो ।"

बद्दू चौंक पड़ा "क्या कहा, अमीरुल मोमिनीन ! क्या यह मोमिनों के नेता, ख़लीफ़ा, हज़रत उमर (रज़ि०) हैं ?"

हज़रत उमर (रज़ि०) बोले, "नहीं कोई बात नहीं । कल मेरे पास आना । बच्चे के लिए वज़ीफ़ा बांध दूंगा ।"

एक रात घूमते-घूमते उनके कानों में गाने की आवाज़ आयी । बड़ा दर्द-भरा गाना था । एक औरत अपनी खिड़की पर बैठी हुई गा रही थी "रात काली है और लम्बी होती जाती है । मेरा मालिक मेरे पास नहीं है....।" उस औरत का पति लड़ाई पर गया हुआ था । उसी की याद में वह गा रही थी । यह गाना सुनकर हज़रत उमर (रज़ि०) बहुत दुखी हुए । सोचने लगे "मैं अरब की औरतों पर ज़ुल्म कर रहा हूं ।"

और वह सोचकर ही नहीं रह गये, तुरन्त हज़रत हफ़्सा (रज़ि०) के पास आये । पूछा, "औरत अपने पति के बिना कितने दिन रह सकती है ?"

जवाब मिला, "चार महीने ।"

सुबह होते ही हज़रत उमर (रज़ि०) ने हर जगह आदेश भेज दिया कि कोई भी सिपाही चार महीने से ज़्यादा बाहर न रहे ।

एक बार वे लागों को खाना खिला रहे थे । देखा कि एक आदमी बायें हाथ से खाना खा रहा है । वह उसके पास पहुंचे । बोले, "दाहिने हाथ से खाओ ।"

उसने जबाब दिया, "दाहिना हाथ नहीं है वह लड़ाई में जाता रहा ।"

उनका दिल भर आया । आंखों से आंसू बहने लगे ।

वहीं उसके पास बैठ गये । बोले, "अफ़सोस ! तुमको वुज़ू कौन कराता होगा ? सिर कौन धोता होगा ? कपड़े कौन पहनाता होगा ?"

बाद में उसके लिए एक नौकर तैनात कर दिया । ज़रूरी चीज़ें अपने पास से दीं ।

हजरत उमर इस्लाम के दूसरे ख़लीफ़ा थे । ख़लीफ़ा राजा भी होते थे और धर्म गुरु भी । वे राज भी करते थे और धर्म की रक्षा भी । वह बहुत बड़े थे । वे देश पर राज करते थे । देश के लोगों पर राज करते थे । लोगों के दिलों पर राज करते थे । जो दिलों पर राज करता है, वही बड़ा है । ये सच्ची घटनाएं इस बात की गवाह है ।

बढ़ो लक्ष्य की ओर

बढ़ो लक्ष्य की ओर साथियो !
बेशक मंज़िल पा जाओगे ।
तुम्हें सफलता वरण करेगी,
खुशियां ही खुशियां पाओगे ।।

आएंगी अनेक आधाएं,
उनसे हर्गिज़ डर मत जाना ।
कभी निराश-हताश न होना,
क़दम नहीं पीछे लौटाना ।।

धैर्य और साहस का सम्बल,
जिस क्षण अगर टूट जाएगा ।
उस क्षण लक्ष्य तुम्हारा तुम से,
कोसों दूर छूट जाएगा ।।

असफलता भी अगर मिले तो,
हार मान कर बैठ न जाना ।
दृढ़ संकल्प हृदय में करके,
पथ पर प्रतिपल क़दम बढ़ाना ।।

अपनी पूरी शक्ति लगाकर,
यदि पथ पर अविराम चलोगे ।
मेहनत से यदि जी न चुराया,
सोचा काम सभी कर लोगे ।।

है अटूट विश्वास अगर तो,
मनचाहा फल पा जाओगे ।
कुल-कुटुम्ब का यश इस जग में,
युगों-युगों तक फैलाओगे ।।

तो फिर उठो, बढ़ो तुम आगे,
ले मन में असीम उत्साह ।
अपनी मंज़िल को पाने की,
मन में रखो प्रबलतम चाह ।।

● डॉ० त्रिलोकी सिंह
ग्राम : हिन्दूपुर, पो० : करछना, ज़िला : इलाहाबाद

अपनी बुद्धि का सदुपयोग कीजिए

■ अबरार अहमद
(लाखेरीवाले)

"इनसे कहो कि यह कुरआन ईमान लाने वालों के लिए तो मार्गदर्शन और शिफ़ा (आरोग्य) है ।"

(कुरआन, 41:44)

अर्थात जीवन की तमाम समस्याओं के समाधान के लिए मार्गदर्शन और सभी प्रकार के रोगों से शिफ़ा कुरआन में मौजूद है ।

"और देखो, तुम्हारे रब ने मधुमक्खी पर इस बात की प्रकाशना कर दी कि पहाड़ों में, और पेड़ों में, और टट्टियों पर चढ़ाई हुई बेलों में अपने छत्ते बना और हर तरह के फूलों का रस चूस और अपने रब की समतल की हुई राहों पर चलती रह । उस मक्खी के भीतर से रंग-बिरंग का एक शरबत (शहद) निकलता है, जिसमें शिफ़ा है लोगों के लिए । यक़ीनन इसमें भी एक निशानी है उन लोगों के लिए जो सोच-विचार करते हैं ।" (कुरआन, 16:68,69)

शिफ़ा से तात्पर्य है–स्वाथ्य का साधन । इससे सीधा तात्पर्य यह नहीं है कि कुरआन की आयतों को पढ़कर उनका इस्तेमाल झाड़-फूंक के लिए किया जाए, बल्कि उपरोक्त आयतों से हमें यह पता चलता है कि अल्लाह ने इन्सान को ऐसी चीज़ें प्रदान की हैं, जिनका इस्तेमाल अलग-अलग बीमारी को ठीक करने के लिए किया जाता है । मसलन–शहद का इस्तेमाल दवाई के तौर पर भी किया जाता है ।

इसी प्रकार हमें दूध, मांस, मछली आदि से प्रोटीन और विटामिन प्राप्त होते हैं । गंडे-तावीज़ के समर्थक कुरआन की सिर्फ़ 2-4 आयतों से यह सिद्ध करने की कोशिश करते हैं कि तावीज़-गंडे और झाड़-फूंक जायज़ है, कुरआन की शेष आयतों पर ध्यान नहीं दिया जाता । दुआ की अहमियतों से इन्कार नहीं किया जा सकता । इन्सान को सोच-विचार करने तथा निरीक्षण करने का आदेश देती हैं । परंतु ये लोग इन आयतों पर बिल्कुल ध्यान नहीं देते हैं ।

कुरआन में है–"तो क्या तुम किताब के एक हिस्से पर ईमान लाते हो और दूसरे हिस्से का इन्कार करते हो ?"

(कुरआन, 2:85)

अत: हमें पूरे कुरआन का अध्ययन करना चाहिए । कुरआन का अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि इन्सान को ज़िना से रोका गया है तथा यह सबसे अच्छा तरीक़ा है–एड्स से बचने का । कुरआन शराब को हराम ठहराता है । पूरी दुनिया जानती है कि शराब पीने से कई भयंकर बीमारियां होने का ख़तरा रहता है तथा हर साल हज़ारों लोग शराब पीने के कारण मर जाते हैं । कुरआन सूअर का गोश्त खाने को हराम ठहराता है, क्योंकि इससे अनेक बीमारियां होने का अंदेशा रहता है ।

अत: कुरआन में शिफ़ा ही शिफ़ा है, क्योंकि कुरआन ने ऐसी व्यवस्था की है कि व्यक्ति बीमार ही न हो तथा यदि बीमार हो जाए तो वह इलाज करवाये । अब हम चलते हैं विज्ञान की ओर । कुरआन के अवतरित होने से पूर्व कुछ लोग चांद-सूरज और सितारों की पूजा करते थे, लेकिन कुरआन ने बताया कि इनको तो अल्लाह ने बनाया है, अत: इन्हें न पूजो, इनको बनाने वाले को पूजो । कुरआन की आयतों का निरीक्षण करके ही आज इन्सान चांद पर क़दम रख चुका है तथा लगभग हर रोज़ एक नये सितारे की खोज कर लेता है ।

यहां देखने वाली बात यह है कि सूरज की धूप से विटामिन-डी प्राप्त होता है ।

कुरआन में लिखा है कि हर जीवधारी को एक तरह के पानी से पैदा किया गया है । आज विज्ञान ने इतनी तरक़्क़ी कर ली है कि यह सिद्ध हो गया है कि वाक़यी हर जीवधारी एक तरह के पानी से पैदा किया गया है ।

कुरआन में लिखा है कि अल्लाह ने सात आसमान बनाये । विज्ञान अभी इतनी तरक़्क़ी नहीं कर पाया है कि सात आसमानों से क्या मुराद है । लेकिन जिस तेज़ी से विज्ञान तरक़्क़ी कर रहा है, उससे जल्दी ही हम पर सात आसमानों की हक़ीक़त भी खुल जाएगी ।

कुरआन इन्सान को निरंतर सोच-विचार करने का

आदेश देता है । यानी कुरआन इन्सान को लगातार शोध करने को कहता है । शोध किसी भी विषय में किया जा सकता है । हम यहां सिर्फ़ चिकित्सा विज्ञान की बात करेंगे । चिकित्सा विज्ञान में शोध करने का यह परिणाम निकला कि आज लगभग हर बीमारी का इलाज मौजूद है । पहले के ज़माने में जिन बीमारियों से हज़ारों लोग मर जाते थे, आज उनके टीके और वैक्सीन मौजूद हैं ।

आज हम देखते हैं कि अलग-अलग बीमारी का अलग-अलग डॉक्टर मौजूद है । जैसे–मनोचिकित्सक, हड्डी का डॉक्टर, दिल का डॉक्टर, नाक, कान व गले का डॉक्टर आदि । यह चिकित्सा विज्ञान में हो रहे शोधों का ही परिणाम है । अल्लाह ने कई तरह की वनस्पति पैदा की है, जिनमें से हमें कई का तो अभी तक ज्ञान ही नहीं है । इन वनस्पति का उपयोग भी दवा बनाने के लिए किया जाता है । भविष्य में संभव है कि ऐसी वनस्पति मिल जाए कि जो आज जो रोग असाध्य हैं, उनका इलाज करने में कामयाबी मिल जाए ।

अत: जो लोग इस कुरआन में सोच-विचार नहीं करते हैं, उनके विषय में कुरआन कहता है कि इनके दिलों पर ताले पड़े हुए हैं । ये लोग गूंगे, बहरे और अंधे हैं तथा जानवरों से भी बदतर हैं । अल्लाह ने इनके दिलों पर मुहर लगा दी है अत: ये न कुछ सोचते हैं, न समझते हैं ।

कुरआन जगह-जगह इन्सान को सोच-विचार और निरीक्षण करने का आदेश देता है तथा अपनी अक़्ल का इस्तेमाल करने को कहता है । जैसे–"क्या तुम बुद्धि से बिल्कुल ही काम नहीं लेते ।" (कुरआन, 2:44)

"जो लोग अक़्ल से काम लेते हैं, उनके लिए आसमानों और ज़मीन की संरचना में, रात और दिन के निरंतर एक-दूसरे के बाद आने में, उन नौकाओं में जो इन्सान के लाभ की चीज़ें लिए हुए नदियों और समुद्रों में चलती-फिरती हैं, बारिश के उस पानी में जिसे अल्लाह ऊपर से बरसाता है फिर उसके द्वारा मुर्दा ज़मीन को जीवन प्रदान करता है और धरती में हर तरह के जीवधारियों को फैलाता है, हवाओं की गर्दिश में और उन बादलों में जो आसमान और ज़मीन के बीच आज्ञा के वशीभूत बनाकर रखे गये हैं, अनगिनत निशानियां हैं ।" (कुरआन, 2:164)

"ऐ आदम की संतान हमने तुम पर लिबास उतारा है कि तुम्हारे शरीर के गुप्त अंगों को ढांके और तुम्हारे लिए शरीर की रक्षा और सौंदर्य का साधन भी हो, और बेहतरीन लिबास परहेज़गारी का लिबास है । यह अल्लाह की निशानियों में से एक निशानी है, शायद कि लोग इससे शिक्षा ग्रहण करें ।" (कुरआन, 7:26)

"और वही है जिसने यह ज़मीन फैला रखी है, इसमें पहाड़ों के खूंटे गाड़ रखे हैं और नदियां बहा दी हैं । उसी ने हर तरह के फलों के जोड़े पैदा किये हैं और वही दिन को रात से छिपाता है । इन सारी चीज़ों में बड़ी निशानियां हैं, उन लोगों के लिए जो सोच-विचार से काम लेते हैं ।" (कुरआन, 13:3)

"और देखो, ज़मीन में अलग-अलग भू-भाग पाये जाते हैं जो एक-दूसरे से मिले हुए अवस्थित हैं । अंगूर के बाग़ हैं, खेतियां हैं, खजूर के पेड़ हैं जिनमें कुछ इकहरे हैं, कुछ दोहरे । सबको एक ही पानी सिंचित करता है, मगर स्वाद में हम किसी को बहुत अच्छा बना देते हैं और किसी को उससे कम । इन सब चीज़ों में बहुत-सी निशानियां हैं, उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेते हैं ।" (कुरआन, 13:4)

"क्या इन लोगों ने आसमान और ज़मीन की व्यवस्था एवं प्रबंध पर कभी विचार नहीं किया और किसी चीज़ को भी जो अल्लाह ने पैदा की है, आंखें खोलकर नहीं देखा ?" (कुरआन, 7:185)

"ज़मीन में बहुत-सी निशानियां हैं विश्वास करने वालों के लिए और खुद तुम्हारे अपने अस्तित्व में है । क्या तुमको सूझता नहीं ?" (कुरआन, 51:20-21)

"यक़ीनन अल्लाह की दृष्टि में अत्यंत बुरे क़िस्म के जानवर वे बहरे-गूंगे लोग हैं, जो बुद्धि से काम नहीं लेते ।" (कुरआन, 8:22)

"क्या ये लोग ज़मीन में चले-फिरे नहीं हैं कि इनके दिल समझने वाले या इनके कान सुनने वाले होते ? वास्तविकता यह है कि आंखें अंधी नहीं होतीं मगर वे दिल अंधे हो जाते हैं जो सीनों में हैं ।" (कुरआन, 22:46)

अत: उपरोक्त आयतों से यह सिद्ध होता है कि कुरआन इन्सान को सोच-विचार करने तथा बुद्धि से काम लेने का आदेश देता है ।

अत: हमें चाहिए कि हम चिकित्सा विज्ञान पर निरंतर शोध करते रहें । कुरआन में हर मर्ज़ की दवा है, शोध करके हम उन दवाओं को प्राप्त कर सकते हैं, इसी से इन्सान को शिफ़ा मिलेगी ।

आतंकवाद की समस्या एवं समाधान

❖ इक़बाल अहमद
(शोधार्थी, राजनीतिशास्त्र विभाग,
ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा)

आतंकवाद आज एक विश्वव्यापी समस्या बन गयी है । इस विश्वव्यापी ख़तरे के प्रति सभी देश चिन्तित दिखायी देते हैं और आज कोई भी देश ऐसा नहीं जहां आतंकवाद न पनप रहा हो अमेरिका आतंकवाद का लक्ष्य भी है और शरणस्थली भी । आतंकवाद का मुक़ाबला करने के लिए अमेरिका ने आधुनिक यंत्र एवं साधन विकसित किये हैं, फिर भी आतंकवाद से मुक्ति नहीं मिल पायी है ।

आतंकवाद का प्रतिफल हमारे लिए संकट का वाहक और हमारे प्राणों का ग्राहक बना रहता है । न मालूम कब, कहां और किस पर उसकी गाज गिरे ? आतंकवाद आज परमाणु बम से भी अधिक भयावह बन गया है । आतंकवाद के आतंक ने हमारे नैतिक पक्ष को इतना दुर्बल बना दिया है कि आज हम आतंकवादी घटनाओं एवं आतंकवादियों के बारे में सीधी एवं खरी बात कहते हुए डरते हैं, क्योंकि आतंकवाद का फंदा हर समय हमारे सामने झूलता रहता है ।

आतंकवाद समाज का अभिशाप है, कलंक है । आतंकवादी गतिविधियों को देखकर यह प्रश्न उठता है कि क्या सभ्यता के उच्च स्तरीय विकास का दावा करने वाला मानव अपने पाश्विक स्तर से ऊपर उठा है या नहीं और क्यों सभ्यता के विकास के लिए किये गये समस्त प्रयत्न सार्थक हैं । आतंकवाद ने आज जन-जीवन को कठिन बना दिया है और सम्पूर्ण वातावरण को दूषित संकुल कर दिया है ।

आतंकवाद के संबंध में वृहद हिन्दी कोष में कहा गया है-"राज्य या विरोधी वर्ग को दबाने के लिए भयोत्पादक उपायों का अवलम्बन है ।" इसी तरह Longman Modern English Dictionary में आतंकवाद को परिभाषित करते हुए लिखा गया-"शासन करने या राजनीतिक विरोध प्रकट करने के लिए भय को एक विधि के रूप में उपयोग की नीति को प्रेरित करना ही आतंकवाद है ।"

इन सब परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि राजनीतिक विरोध प्रकट करने अथवा अपनी मांगों को मनवाने के लिए हिंसा एवं भय का प्रयोग करना ही आतंकवाद है । यहां यह भी स्पष्ट करना उचित होगा कि इस्लाम धर्म में आतंकवाद की कोई जगह नहीं है । इस्लाम मानवता, प्यार एवं भाईचारे को बढ़ावा देता है । इस्लाम धर्म की आड़ लेकर आतंकवाद को बढ़ावा देने वाले लोगों की हमारा समाज कड़ी निन्दा करता है । साथ ही मैं यह भी कहना चाहूंगा कि बेवजह इस्लाम को बदनाम करना भी उचित नहीं है । आतंकवाद पर चलने वाले चाहे जिस धर्म के मानने वाले हों, उनकी बड़ी निन्दा की जाती है । हमारा देश अमन-शांति का देश है, इसे इसी रूप में प्रस्तुत करना तथा राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता को क़ायम रखना हम सभी भरतवासियों का नैतिक कर्तव्य है ।

आतंकवाद की समस्या का समाधान नितान्त आवश्यक है । इसके अभाव में देश की एकता एवं अखंडता क़ायम नहीं रह सकती और न ही लूटपाट, हत्या, आगज़नी, बलात्कार, अपहरण एवं डकैती की घटनाएं रोकी जा सकती हैं । क़श्मीर, असम, पंजाब और देश के अन्य भागों में आतंकवाद के कारणों में भिन्नता है, अत: उनके समाधान में भी सामान्य उपायों के अतिरिक्त कुछ उपाय ऐसे भी अपनाने होंगे जो उस क्षेत्र विशेष के लिए ही उपयोगी हों ।

आतंकवाद को समाप्त करने के लिए हम निम्नांकित उपायों का सहारा ले सकते हैं-

1. आतंकवाद को समाप्त करने के लिए पुलिस, गुप्तचर विभाग, सेना एवं सुरक्षा बलों की सहायता से आतंकवादियों के ठिकानों का पता लगाया जाए तथा उन्हें नष्ट कर दिया जाए और जो व्यक्ति इन गतिविधियों में लिप्त पाये जाएं, उनके विरुद्ध कठोर क़ानूनी कार्रवाई की जाए, उन्हें कठोर दंड दिया जाए । किन्तु साथ ही यह ध्यान रहे कि निर्दोष लोगों पर कोई अत्याचार न हो ।

2. आतंकवाद को समाप्त करने के लिए राजनीतिक प्रक्रिया में नये प्राण फूंकने होंगे, उसका कायाकल्प करना

होगा जिससे कि वह पुलिस कार्रवाई के साथ-साथ चल सके । पुलिस कारवाई अकेले अपने बलबूते पर आतंकवाद' का मुक़ाबला नहीं कर सकती है । लोगों को मुख्य धारा में लाने की कोशिश की जानी चाहिए ।

3. उग्रपंथियों के भारत विरोधी दुष्प्रचार को विफल करने के लिए नरमपंथियों का सहारा लिया जाए तथा उन्हें क्षेत्र में भेज कर लोगों को आतंकवाद का मुक़ाबला करने के लिए तैयार किया जाए ।

4. आतंकवादियों से निबटने के लिए तथा आत्म रक्षा के लिए गांव वालों को सरकार द्वारा हथियारों का वितरण किया जाए तथा प्रत्येक गांव में एक ग्राम रक्षा समिति का गठन किया जाए, जो आतंकवादियों से गांव की रक्षा कर सके क्योंकि सरकार और पुलिस ही हर व्यक्ति को हर क्षण सुरक्षा प्रदान नहीं कर सकती । आतंकवाद का साया इतना बढ़ गया है कि यह कोई भी नहीं जानता कि कब किसके साथ कैसी घटना घट जाएगी ।

5. जिन लोगों को हिंसा, लूट-पाट, बलात्कार एवं आतंकवाद में लिप्त होने के आरोप में जेल में बंद किया गया है, उन पर मुक़दमे शीघ्र प्रारंभ किये जाएं और जो लोग निर्दोष पाये जाएं, उन्हें जेल से मुक्त किया जाए ।

6. पाकिस्तान से लगने वाली कश्मीर व पंजाब की सीमा को सील कर दिया जाए, सीमा पर कंटीले तारों की बाड़ लगायी जाए और आने-जाने के लिए कुछ ही रास्ते निश्चित किये जाएं और उन पर निगरानी बढ़ा दी जाए । सीमा से लगी एक किलोमीटर चौड़ी सुरक्षा पट्टी बना दी जाए । उस इलाक़े में जिनके खेत पड़ें, उन्हें विशेष पहचान पत्र दिये जाएं ।

7. देश के सभी राजनीतिक दलों के सहयोग से आतंकवाद की समस्या का समाधान किया जाए । इस हेतु एक सर्वदलीय समिति गठित की जाए । सभी दलों की सामान्य सहमति से आतंकवाद को समाप्त करने में मदद मिलेगी और भय तथा आतंक के स्थान पर सहयोग और सौहार्द का वातावरण तैयार होगा ।

8. आतंकवाद का एक कारण नवयुवकों में बढ़ती बेरोज़गारी भी है । इस बेरोज़गारी को समाप्त करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि पर आधारित उद्योग खोले जाएं जिनमें बेरोज़गार नवयुवकों को रोज़गार दिया जाए । मुर्ग़ीपालन, डिब्बा बन्द खाने का समान तैयार करने, कश्मीर में फलोद्यान एवं फलों को पैक कर अंयत्र भेजने तथा ट्रांसपोर्ट व्यवसाय को प्रोत्साहन दिया जाए ।

9. मुठभेड़ के नाम पर हत्याओं का जो आरोप सुरक्षा बलों पर लगाया जाता है, उनकी न्यायिक जांच करायी जाए इसका लोगों पर मनोवैज्ञानिक असर यह पड़ेगा कि उनका सुरक्षा बलों के प्रति विश्वास बढ़ जाएगा । हाल में असम से भाग कर आये शरणार्थियों के आवास, खाने-पीने एवं रोज़गार की समुचित व्यवस्था की जाए ।

10. कश्मीर में मुसलमान और हिन्दुओं को मिलाकर स्वयं सेवी नागरिक दस्ते बनाये जाएं जिनमें विभिन्न दलों के लोगों को भी शामिल किया जाए । ये दस्ते गांव-गांव घूमें तथा अमन-शान्ति बहाल करें । दुष्प्रचार का जवाब दे सकें जहां कहीं भी आतंकवादियों को उग्रवाद, हिंसा और देशद्रोह की भावनाएं भड़काते हुए पाया जाए तो उन्हें गिरफ़्तार कर उन पर मुक़दमा चलाया जाए और क़स्बों में ऐसा माहौल तैयार किया जाए कि जो हिन्दू, मुस्लिम व सिक्ख डर से राज्य को छोड़कर चले गये हैं, वे पुन: अपने घरों को लौट सकें ।

11. लेखकों, नाटकों, कविताओं, गीत और ग़ज़लों के माध्यम से जिन्हें पत्र-पत्रिकाओं , रेडियो, टी०वी० आदि के द्वारा जनता तक पहुंचाया जाए, राष्ट्रीय एकता, अखंडता, पारस्परिक भाईचारा व हिन्दू-मुस्लिम एकजुटता को सुदृढ़ किया जाए, लोगों में राष्ट्रीय भावनाओं को जगाया जाए तथा शत्रु देशों के मनसूबों से अवगत कराया जाए । लोगों को यह बताया जाए कि यदि देश रहेगा तो हम भी रहेंगे, यदि देश ही टुकड़े-टुकड़े हो गया तो हमारा अस्तित्व कहां रहेगा । अत: भाषा, धर्म, क्षेत्र, जातीय हितों से पहले राष्ट्र हित है । हम अपने देश में स्वच्छ एवं पवित्र तथा प्यार एवं भाईचारे का माहौल बनाने का प्रयास करें, इससे हमारा देश और अधिक विकसित एवं मज़बूत होगा ।

For Information On
City Shops, RoaosQ–Products, Restaurants, Magazine, Schools And much more.
Syed Shahbaz Alam Barvi
Business Development Director (09049185093)
Visit us:
www.shoppinglanes.com

भारत-पाकिस्तान के एकीकरण का सवाल

■ डॉ॰ रवि शर्मा 'मधुप'
(दिल्ली-34)

यह बात सत्य है कि जब दो ऐसे देशों में एकीकरण हो जाए, जो पड़ोसी हों, तो इस प्रकार के एकीकरण के फलस्वरूप बिखरी हुई शक्ति एक होगी, आपसी कटुता, ईर्ष्या व प्रतिशोध की भावना दूर होगी, सैन्य ख़र्च में कमी आएगी, आपसी भाईचारे तथा सहयोग में वृद्धि होगी, प्रतिभा का सृजनात्मक उपयोग संभव हो पाएगा, कई छोटी-मोटी समस्याएं स्वयंमेव ही दूर हो जाएंगी तथा इन देशों की जनता प्रगति के पथ पर तीव्र गति से अग्रसर हो पाएगी । कुछ लोगों को इस प्रकार के एकीकरण से हानि भी हो सकती है, परंतु यह इतनी नगण्य होगी कि एकीकरण के लाभों के सम्मुख दब कर रह जाएगी ।

भारत और पाकिस्तान का इतिहास सन 1947 से पहले तक एक ही था । सैकड़ों वर्ष पूर्व मुसलमान भारत में आये तथा यहीं के होकर रह गये । हिन्दू-मुस्लिम सदियों से साथ-साथ आत्मीयतापूर्वक रहते आये हैं और अब भी रह रहे हैं फिर भारत और पाकिस्तान नाम रख देने से ही अंतर कैसे आ सकता है ?

मेरे विचार में इस दिशा में शुरुआत करने की आज अत्यधिक आवश्यकता है । आज से छह दशक पूर्व लिखा गया हमारे इतिहास का विभाजन का एक दर्दनाक अध्याय आज तक टीस रहा है । अंग्रेज़ों ने अपनी 'फूट डालो' की नीति के अंतर्गत 15 अगस्त 1947 को भारत के दो टुकड़े करके उसे, भारत व पाकिस्तान, दो देशों के रूप में बदल दिया ।

इस विभाजन का आधार बनाया गया धर्म को और लोगों की भावनाओं को भड़काकर, राजनेताओं की सत्ता लोलुपता को उक्सा कर, अंग्रेज़ों ने एक ही परिवार के सदस्यों को आसानी से अलग कर दिया । परन्तु क्या इस विभाजन से समस्याएं समाप्त हो गयी ? क्या इससे दोनों देशों की जनता को लाभ हुआ ? मेरे विचार में बिल्कुल भी नहीं, अपितु इससे होने वाली हानियों-आपसी वैमनस्य, सीमा विवाद, रक्षा बजट आदि को हम आज तक भुगत रहे हैं ।

विभाजन के परिणामस्वरूप धर्म के नाम पर हिन्दुओं एवं मुसलमानों मे अलगाववाद बढ़ा है, दोनों देश एक-दूसरे पर शक की निगाह रखते हैं, अपना रक्षा बजट लगातार बढ़ाते जा रहे हैं, एक-दूसरे के आंतरिक मामलों में दख़ल देने के आरोप-प्रत्यारोप निरंतर लगाये जा रहे हैं, आतंकवादी गतिविधियों को प्रश्रय मिल रहा है और तो और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के वर्षों में, भारत और पाकिस्तान के बीच हुए युद्धों ने जहां इन दोनों देशों को कमज़ोर किया, वहीं अविश्वास की एक ऐसी खाई भी पैदा हुई जो निरंतर चौड़ी होती जा रही है ।

भारत में पंजाब व कश्मीर के समस्या, महंगाई, सीमा विवाद आदि प्रमुख हैं तो पाकिस्तान में भी सिंध प्रांत की समस्या, मुजाहिदों की समस्या, सीमा-रक्षा, महंगाई आदि प्रमुख हैं । भारत और पाकिस्तान का इतिहास सन 1947 से पहले तक एक ही था । सैकड़ों वर्ष पूर्व मुसलमान भारत में आये तथा यहीं के होकर रह गये । हिन्दू-मुस्लिम सदियों से साथ-साथ आत्मीयतापूर्वक रहते आये हैं और अब भी रह रहे हैं फिर भारत और पाकिस्तान नाम रख देने से ही अंतर कैसे आ सकता है ?

आज भी बहुत से ऐसे लोग भारत में रह रहे हैं जिनके

خطباتِ پاکستان

مولانا سید جلال الدین عمری

یہ کتاب اصلاً مولانا سید جلال الدین عمری امیر جماعت اسلامی ہند کے ان خطبات پر مشتمل ہے جو انھوں نے جون ۲۰۱۲ء میں اپنے سفر پاکستان کے دوران مختلف دینی، تحریکی اور علمی مجلسوں میں دیے تھے۔ ان خطبات کا دائرہ بڑا وسیع ہے۔ ان میں اقامتِ دین کے علمی تقاضے، احیائے اسلام کی تدابیر، غلبۂ دین کی مختلف جہتیں، ذاتی اصلاح و تربیت، ہندوستانی مسلمانوں کے حالات و مسائل اور جماعت اسلامی ہند کی خدمات جیسے اہم موضوعات زیر بحث آئے ہیں۔

ان خطبات کے ساتھ وہ روداد، جو مولانا کے رفیق سفر ڈاکٹر محمد رضی الاسلام ندوی نے قلم بند کی تھی اور ۲۰۰۵ء میں مولانا عمری کے سفر پاکستان کی وہ روداد، جو خود انھوں نے تحریر کی تھی، دونوں شامل کر دی گئی ہیں۔ یہ دونوں رودادیں عام طرح کی رودادیں نہیں ہیں، بلکہ ان میں پاکستان کے حالات، وہاں کی بعض اہم شخصیات کا تعارف، دینی و تحریکی حلقوں کی سرگرمیاں اور بعض علمی مسائل پر اسلامی نقطۂ نظر کی وضاحت آ گئی ہے، اس لیے ان کی حیثیت ایک علمی دستاویز کی ہو گئی ہے۔

● سائز : $\frac{۲۳ \times ۳۶}{۱۶}$ ● صفحات : ۱۹۲ ● قیمت: 100.00

مرکزی مکتبہ اسلامی پبلشرز، نئی دہلی ۲۵

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) Fax: 26947858
E-mail: mmipublishers@gmail.com • Website: www.mmipublishers.net

संबंधी व पुरखों का घर पाकिस्तान में है और दूसरी ओर अनेक पाकिस्तानी नागरिकों के मित्र व रिश्तेदार भारत में रह रहे हैं। दोनों एक-दूसरे से मिलने के लिए तड़पते रहते हैं।

हिन्दुओं, मुसलमानों, सिखों के धार्मिक स्थान भी दोनों देशों में विद्यमान हैं और तीर्थ यात्री वहां जाने की तमन्ना दिल में लिए रहते हैं। इतिहास साक्षी है कि जहां मुसलमानों के आने के बाद बहुत से हिन्दू मुस्लिम बन गये, वहीं मुसलमानों पर भी यहां की संस्कृति का प्रभाव पड़ा। इन देशों के लोगों की सभ्यता, संस्कृति, रीति-रिवाज भी काफ़ी समान है, इन पर पश्चिमी प्रभाव भी स्पष्टत: देखा जा सकता है, परन्तु फिर भी इनमें कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं आया है। ऐसे में, हम भारत व पाकिस्तान के बीच उत्पन्न की गयी इस कृत्रिम दीवार को तोड़ क्यों नहीं देते ? अब समय आ गया है कि हम इस स्थिति पर गंभीरता से पुनर्विचार करें।

मेरे मत में भारत, पाकिस्तान व बंगलादेश की बहुत-सी समस्याओं का हल भारत-पाक-बंगलादेश एकीकरण द्वारा संभव है। उदाहरणत: सीमा-विवाद सदा के लिए जड़ से ही समाप्त हो जाएगा, कश्मीर, पंजाब व सिंध की समस्याएं स्वत: ही हल हो जाएंगी। इन देशों द्वारा अपनी सुरक्षा पर ख़र्च किया जाने वाला अरबों रुपये का बजट एकदम कम हो जाएगा। यही धन देश के विकास के लिए प्रयोग किया जा सकता है, जिससे सभी नागरिकों का जीवन अधिक खुशहाल एवं सुखपूर्ण हो सकेगा। हमारे साधन, प्राकृतिक संपदा निश्चित रूप से बहुत बढ़ जाएंगे, हमारी एकता से हमारी मज़बूती, शक्ति सामर्थ्य व क्षमता में वृद्धि होगी, विकास की गति दिन दुगनी रात चौगुनी बढ़ जाएगी।

भारत, पाकिस्तान व बंगलादेश के एकीकरण के पश्चात इसके नये नाम, राजधानी, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति के पद; शासन व्यवस्था आदि से संबंधित समस्याएं बातचीत द्वारा सुलझायी जा सकती हैं। जब स्वतंत्र भारत में डॉ० ज़ाकिर हुसैन एवं फ़ख़रुद्दीन अली अहमद, डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम तीन-तीन मुस्लिम राष्ट्रपति हो सकते हैं, भारत के मुख्य न्यायाधीश, उपराष्ट्रपति, राज्यपाल जैसे अनेक महत्वपूर्ण पदों पर मुस्लिम नियुक्त किये जा सकते हैं, धर्मनिरपेक्षता की नीति का पालन किया जा सकता है, धर्म जाति के नाम पर सभी के विकास का प्रयास किया जा सकता है, तो एकीकृत भारत संघ में तो यह और भी आसानी से किया जा सकेगा !

इस एकीकरण के मात्र लाभों पर चर्चा करना सिक्के के दूसरे पहलू की उपेक्षा करना होगा। इस एकीकरण से कुछ कठिनाइयां व समस्याएं भी अवश्य उत्पन्न होंगी जैसे इन देशों की आर्थिक स्थिति में बड़ा अन्तर, धार्मिक कट्टरपन की भावना, नागरिक सुविधाओं व राजनीतिक व्यवस्था में अन्तर आदि परन्तु दृढ़ इच्छा शक्ति तथा ईमानदारी से किये गये प्रयासों द्वारा इन्हें भी दूर किया जा सकता है। सर्वाधिक समस्या तो कुर्सी-चिंतक राजनीतिज्ञों को होगी कि वे कैसे अपने पद तथा प्रभाव को बनाए रखें।

जिन देशों में सेना की शासन में दख़लअंदाज़ी अधिक है वहां सेना के उच्च अफ़सरों को भी बेचैनी हो सकती है,

SHATABDI FOUNDATION, GAYA

- Started Shatabdi Public School in 2001 with primary classes, has now developed into a 10+2 CBSE affiliated educational institution with quality education in modern subjects with moral orientation.
- Presently there are around 1000 students who are provided modern teaching facilities. The Foundation also adopts poor/ orphan students
- Under Upwardbound scheme, another project has been launched for preparation of +2 students to compete in Entrance Test for Engineering, Medical and other professional & technical courses.
- Our immediate needs are — Purchase one more school bus, Construction of Prayer Hall & Purchase of 30 Computers.

Ahle Khair Hazrat are Requested to Donate.

Kindly send your cheque/draft in favour of "Shatabdi Foundation, Gaya".

(Prof Z.H.Khan) Chairman — *(Prof M. B. Zaman)* Secretary

Shatabdi Public School, Katari Hill Road, Gaya-823001 (Bihar) INDIA

विश्व के कुछ देशों को भी इससे परेशानी हो सकती है क्योंकि इससे जहां उनके, इस क्षेत्र में, अस्थिरता व अराजकता पैदा करने के मंसूबे अधूरे रह जाएंगे, उनके हथियार कम बिकेंगे, उनका हस्तक्षेप करने का अधिकार समाप्त हो जाएगा, वहीं एकीकृत भारत एक ऐसे शक्तिशाली देश के रूप में उभरेगा जिससे विश्व के शक्ति समीकरण ही बदल जाएंगे और विश्व में एक नयी महाशक्ति का जन्म होगा तथा भारत फिर से सभ्यता, संस्कति, संपन्नता के उत्कर्ष के युग में पहुंच जाएगा ।

भारत, पाकिस्तान और बंगलादेश के इस प्रस्तावित एकीकरण में भूटान, श्रीलंका, नेपाल, म्यांमार आदि भी शामिल हो सकते हैं । 'दक्षेस' को सक्रिय करके इस लक्ष्य को कुछ हद तक प्राप्त किया जा सकता है । इस महासंघ में शामिल देशों को पूर्ण स्वायत्तता दी जा सकती है परंतु विदेश, रक्षा एवं गृह जैसे विभाग एक ही केन्द्रीय शक्ति के अधीन होने चाहिए । इस एकीकरण से जहां भारत की अनेकता में एकता की भावना मज़बूत होगी, वहीं अलगाववादी, फूट डालने वाली तथा भारत को टुकड़ों में बांटने का षड्यंत्र रचने वाली शक्तियों को भी ज़ोरदार सबक़ मिलेगा ।

इस संबंध में सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि इस प्रस्तावित विचार को यथार्थ में कैसे बदला जाएगा? यदि इन देशों के राजनेता आपसी मतभेद तथा निहित स्वार्थों को भुलाकर इस दिशा में ईमानदारी से प्रयास करें तो यह दुष्कर कार्य बहुत आसान हो सकता है और इसके लिए यह समय सर्वाधिक उपयुक्त है, क्योंकि भारत-पाकिस्तान दोनों देशों के लोग आपस में बेहतर संबंध बनाना चाहते हैं । इस संबंध में, भाईचारा, एकता, अखंडता को बढ़ाने में लगी विभिन्न संस्थाएं एवं प्रचार माध्यम भी मिलकर प्रयास करें । जिस प्रकार पश्चिम तथा पूर्वी जर्मनी की जनता ने उन्हें कमज़ोर किये जाने के शड्यंत्र को समझा तथा उसका विरोध किया और सरकार एवं नेताओं को झुकाकर दो विरोधी शासन व्यवस्थाओं से युक्त देशों को एक कर दिया, उसी प्रकार भारत-पाक-बंगलादेश की जनता को भी 'फूट डालो व शासन करो' के इस षड्यंत्र को समझना होगा तथा इसके ख़िलाफ़ अपनी आवाज़ बुलन्द करनी होगी । हां हैलमेट कोहल जैसे सशक्त, क्रांतिकारी एवं प्रभावशाली नेता की महत्वपूर्ण भूमिका को भी हम नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते ।

एक सशक्त जनआन्दोलन ही भारत-पाक-बंगलादेश के एकीकरण में प्रभावशाली भूमिका निभा सकता है । अब समय आ गया है कि हम आलस्य, वैमनस्य व मतभेदों को भुलाकर एकजुट होकर एकीकरण की मांग को उठाएं, एक असंभव प्राय: काम को संभव बनाने के लिए कमर कस कर मैदान में आएं व एक नयी सुबह एक नये युग की शुरुआत करें । इस आन्दोलन में शामिल होने वाली जनता का नारा होगा चाहिए–

"एक भारत-पाक-बंगलादेश
हो दुश्मनों का मलियामेट ।"

स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर देने वाले देश प्रेमी वीरों को इससे अच्छी श्रद्धांजलि क्या हो सकती है ?

लघुकथा

मज़हब

उस दिन धार्मिक जुलूस के रास्ता बदलने के विवाद पर शहर में दंगा हो गया । सारे बाज़ार एकाएक बन्द होने लगे । शहर के क़रीब सब्ज़ी मंडी के किनारे मछली बाज़ार में जब यह ख़बर पहुंची तो लोग घबरा उठे । सड़क के किनारे मछली के फड़ पर एक ग्राहक बेताबी से बोला–'भइया, एक किलो मछली तोल दो, शहर में दंगा हो गया है, जल्दी घर पहुंचना है ।

ग्राहक की घबराहट भरी आवाज़ सुनकर एक छोटी मछली ने दूसरी बड़ी मछली से उत्सुकता से पूछा–'दीदी, ये दंगा क्या होता है ? बड़ी मछली राज़दाराना अंदाज़ में बोली–बहन, मज़हब के नाम पर जब-जब हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आपस में स्वार्थवश, ईर्ष्यावश या राजनीतिवश झगड़ा करते हैं, उसे दंगा कहते हैं ।

छोटी मछली अभी भी संतुष्ट नहीं हुई । उसने फिर जिज्ञासावश पूछा–"दीदी, हमारा मज़हब क्या है, हम हिन्दू हैं या मुसलमान ?" बड़ी मछली हंस पड़ी, बोली–"पगली, हमारा कोई एक मज़हब नहीं है, हमें जब मुसलमान ख़रीदकर अपनी हंडिया में पकाता है तो हम मुसलमान हो जाते हैं और जब कोई हिन्दू ख़रीदकर अपनी कड़ाई में पकाता है तो हम हिन्दू हो जाते हैं । हमारा मज़हब तो ख़रीददार के मज़हब पर निर्भर करता है ।

शराफ़त अली ख़ान
बरेली (उ०प्र०)

अहद प्रकाश की चार ग़ज़लें

(1)

काठ के चेहरे

सब के सब लोग समुन्दर से भी गहरे निकले
हर तरफ़ शोर मचा, लोग ही बहरे निकले

■

खुद को एक बूंद की मानिन्द लरज़ता पाया
जितने सूरज थे सभी काठ के चेहरे निकले

■

हमने उम्मीद की शम्मा तो जला रक्खी है
वरना शायर के यहां ज़ख़्म ही गहरे निकले

■

एक नाज़ुक-सा सुबक-सा तेरा एहसास अहद
इसी एहसासे मुहब्बत पे सौ पहरे निकले ।

(2)

दृष्टि भ्रम

तुम्हें जो सीप के अन्दर दिखायी देता है
मुझे वो मित्र समुन्दर दिखायी देता है

■

रुका रहे तो कोई नातवां मुसाफ़िर है
अगर चले तो सिकन्दर दिखायी देता है

■

मुझे तो मेरे ही अपने ने ज़बह कर डाला
तभी तो शान से बाहर दिखायी देता है

■

चली है जब से हवा गांव वाला जीतेगा
शहर का कुत्ता भी बन्दर दिखायी देता है ।

(3)

इन्क़िलाब

उनके हमारे बीच, न पुल है न नाव है
वे फिर से आ रहे हैं बहुत रख-रखाव है

■

हम लोग जल रहे हैं स्वयं अपनी आग में
मित्रों यह उनके वास्ते बढ़िया अलाव है

■

पीछे बंधे हुए हैं सभी निर्धनों के हाथ
जो लोग हैं लठेत यहां उनका भाव है

■

क्या इन्क़िलाब आएगा उस मुल्क में जहां
हर आदमी के पास में अपना ही घाव है

■

नेता के घर में चैन है आकाश में है वो
कैसे भला बताए कहां क्या अभाव है ।

(4)

वो बाप था बूढ़ा

बुझते हुए चेहरों को हवा देते हैं कुछ लोग
मरने की दुआ करके दवा देते हैं कुछ लोग

■

कुछ लोग बड़े बन के फिसल जाते हैं अक्सर
फिर झुक के उन्हें सर पे बिठा लेते हैं कुछ लोग

■

बदनाम गली तुमसे परिचित कि नहीं है
कीचड़ तो शरीफ़ों पे लगा देते हैं कुछ लोग

■

वो बाप था बूढ़ा जो मरा है इसी ग़म में
बेटों को ही तलवार थमा देते हैं कुछ लोग ।

गुजरात का नरमेध यज्ञ

❖ एस॰ एल॰ सागर

भाजपा द्वारा जब-जब नरेन्द्र मोदी का नाम देश के प्रधानमंत्री पद के लिए उछाला जाता है, बरबस गुजरात का नरमेध यज्ञ का वीभत्स दृश्य सामने आ खड़ा होता है । गुजरात का नरमेध नरेन्द्र मोदी की उस भाषा का परिणाम था जो उन्होंने क्रिया की प्रतिक्रिया कहकर बोली थी । इसके परिणामस्वरूप हमारे मासूम बच्चों, बेक़सूर महिलाओं और निर्दोष युवकों आदि की हत्याएं की गयी थीं ।

जब नरेन्द्र मोदी का नाम सामने आता है तो उस पुष्यमित्र ब्राह्मण शासक की स्मृति सामने घूमने लगती है, जिसने ब्राह्मणत्व के उत्कर्ष हेतु इसके विरोधी बौद्धों की बड़ी संख्या में मगध से लेकर पंजाब तक फ़ौज घुमाकर हत्याएं करवा डाली थी । शुंग क्रूसेड बौद्ध धर्मावलंबियों के विरुद्ध था, जबकि मोदी का धर्म युद्ध इस्लाम के बन्दों के विरुद्ध था ।

हम याद दिलाते चलें कि गुजरात प्रारंभ से ही हिन्दुत्ववादियों का गढ़ रहा है । यह साधु-संतों का प्रदेश रहा है । नरसी संत गुजरात के थे और गांधी जी भी । आर॰एस॰एस॰ का प्रभाव संचालक का क्षेत्र गुजरात ही है । पहले महाराष्ट्र गुजरात एक ही सूबा था । सरदार पटेल संघी थे । आर॰एस॰ एस॰ के लोग नरेन्द्र मोदी को सरदार पटेल का ही अवतार मानते हैं । कुल मिलाकर गुजरात हिन्दुत्ववादियों का गढ़ रहा है । यहां हिन्दू साधु-संतों की बहुत बड़ी संख्या निवास करती है, जो सभी विश्व हिन्दू परिषद के सक्रिय उत्प्रेरक हैं ।

एक विचार, एक दृष्टिकोण

जब अयोध्या में राम मंदिर का आन्दोलन हुआ अटल बिहारी के प्रधानमंत्रित्व काल में यहां विध्वंसकारी अराजक तत्वों का राज क़ायम हो गया था । राम मंदिर आन्दोलन के समय यहां से हज़ारों लोग उत्तर प्रदेश की अयोध्या को गये थे । यह वह समय था जब हिन्दुत्ववादियों का कमल कीचड़ में खिल रहा था । यह ऐसा समय हिन्दुत्वकर्मियों के हाथ लगा जिसमें उन्हें गुजरात को ग़ैर-हिन्दूविहीन बनाने का अवसर मिल गया था । पूरे गुजरात में हिन्दुत्व की प्रयोगशाला खुल गयी । हिंसा, उपद्रव और विध्वंस का तांडव होने लगा ।

गुजरात की घटना का जुनून बाहर भी फैलता गया और उड़ीसा, गोवा, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश तथ उत्तर प्रदेश में भी ईसाइयों पर ताबड़तोड़ हमले होने लगे । ग्राह्म स्टेंस को दो बच्चों सहित जीवित जला डाला । 6 जून सन 2002 को उत्तर प्रदेश के ही मथुरावासी पादरी जार्ज कुंजी कुंदम की निर्मम हत्या कर दी गयी । गुजरात के ईसाइयों पर जब हमले हो रहे थे, तो मुसलमान भी मारे-काटे जा रहे थे ।

गोधरा की आबादी दो लाख के क़रीब है, जिसमें 35 प्रतिशत मुसलमानों की आबादी है । गोधरा स्टेशन पर साबरमती एक्सप्रेस के एक डिब्बे में आग लगने से लोग मारे गये । इस पर विहिप और बजरंग दल के लोगों ने मुसलमानों पर आग लगाने का आरोप लगाकर उनके घरों पर हमला बोल दिया । प्रशासन और पुलिस ने हिन्दुओं के साथ होकर मुसलमानों पर क़हर ढाया । गोधरा की पूरी मुसलमान आबादी तहस-नहस कर डाली गयी । दरअस्ल झगड़े की घटना शुरुआत में कारसेवकों और वेंडरों के बीच हुई । 27 फ़रवरी 2002 को नरेन्द्र मोदी गोधरा पहुंचे । विहिप के लगभग सौ कार्यकर्ता उनसे मिले और मोदी जी से पूछा कि अब हम लोग क्या करें । इस पर मोदी ने कहा कि ''तुम लोग 100 साल का बदला ले लो ? क्या तुम चूड़ियां पहने बैठे हो ? यहां 70 लोग मारे गये हैं 70 में एक दो शून्य बढ़ाकर बदला लो ।''

मोदी के दो मंत्रियों ने विधिवत प्लानिंग की और विश्व हिन्दू परिषद के कार्यकर्ता गांव-गांव में जाकर मुसलमानों का क़त्लेआम करने लगे । दूकानों और घरों को लूटा और आग लगा दी गयी । मस्जिदों को ध्वस्त कर डाला गया । क़ुरआन की प्रतियां जलायी गयीं और उसे पैरों तले कुचल कर अनादर किया । पूरा दृश्य देखने पर लग रहा था कि मुसलमानों पर हमला पूर्व नियोजित था ।

गोधरा कांड की असलियत के बारे में ''वाशिंगटन पोस्ट'' के 6 मार्च 2002 के अंक में राजीव चन्द्र शेखरन

गुजरात-नरसंहार

की रिपोर्ट प्रकाशित हुई, उसके अनुसार साबरमती एक्सप्रेस जब गोधरा स्टेशन पहुंची तो 5 और 6 नम्बर की बोगी में हिन्दू कार्यकर्ता थे, जो डिब्बे में उपद्रव करते आ रहे थे और डिब्बे के यात्रियों को जबरन राम के नारे लगवा रहे थे। जो नारा नहीं लगाते थे उन्हें परेशान करते थे। जहां-जहां ट्रेन रुकती थी स्टेशनों पर उतर कर चाय-बिस्कुट खाते-पीते और ट्रेन चलने पर बिना पैसे दिये ट्रेन में चढ़ जाते थे जो पैसा मांगता था, उस वेंडर को पीटने की धमकी दे देते थे। जब ट्रेन गोधरा पहुंची, तो हिन्दू कार्यकर्ताओं ने स्टेशन पर यह काम किया। वेंडरों से ले-लेकर चाय-बिस्कुट पीते-खाते और बिना पैसे दिये ट्रेन में चले गये। बताया गया कि गोधरा कांड पहले से सुनियोजित था और यह खेल विहिप, बजरंग दल और भाजपा के लोगों का था। ट्रेन की बौगी की आग का खेल इन्हीं का लगता था। जांच से भी पता चला कि आग बाहर से नहीं, बौगी के अन्दर से ही लगी थी जो स्वत: लगी या लगायी गयी थी।

गोधरा की बौगी की आग का बहाना लेकर हिन्दू हुड़दंगियों ने जो कांड किया, गोधरा के आसपास अराजकता का माहौल कर मुसलमानों की हत्याएं की गयी। वह एक सुनियोजित हमला था और त्रिशूल, भालों, तलवारों का दंगों में खुलकर प्रयोग किया गया, उससे लग रहा था कि इनका प्रयोग अयोध्या में मंदिर निर्माण के समय 15 मार्च को विरोध करने पर प्रयोग में लाया जाना था। जब अयोध्या में उसकी नौबत नहीं आयी तो उनका प्रयोग गोधरा के आसपास मुस्लिम जनता पर किया गया।

गोधरा के आसपास के बहुत बड़े क्षेत्र पर हमला किया गया। सब जगह एक ही प्रकार से धावा बोला गया और ख़ानक़ाह और मज़ारों को तोड़कर ध्वस्त करना और जो भी मिला उसको क़त्ल कर देना और लाशें ग़ायब कर नदी-नहर, नाले और तालाब में डाल देना और महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार करने की बहुत-सी घटनाएं अमल में लायी गयीं।

गोधरा कांड के बाद जांच में हर स्रोत से, हर जांच से यही निष्कर्ष निकलकर सामने आया कि गोधरा पूर्व नियोजित कांड था और इसी का बहाना लेकर पूरे गुजरात राज्य में मुसलमानों पर हमला कर उनका विनाश करके गुजरात को मुसलमान रहित स्टेट बनाना था। गोधरा कांड सुनियोजित था इसकी पुष्टि देशी ही नहीं विदेशी सूत्रों तक ने की। भारत में ब्रिटिश उच्चायोग ने जो रिपोर्ट दी, उसने स्पष्ट कहा कि गोधरा और उसके बाद जो भी मुसलमानों पर हमले हुए उसका उद्देश्य गुजरात राज्य में मुसलमानों का प्रभाव समाप्त किया जाना था। इस रिपोर्ट में दो हज़ार मुसलमानों की हत्या और विस्थापितों की संख्या एक लाख चालीस हज़ार बतायी गयी थी। रिपोर्ट में यह भी स्पष्ट कहा था कि इन दंगों के पीछे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ है। रिपोर्ट में विशेषकर यह बताया गया कि सूबे की पुलिस ने दंगाइयों का साथ दिया। क़रीब साढ़े तीन हज़ार लोग झगड़े में भुक्त भोगी हुए।

स्मरण रहे कि गुजरात प्रांत में कुल 25 ज़िले हैं इन सभी में दंगे हुए। लाखों मुसलमान बेघर कर दिये गये। जब खाने को भी उनके पास कुछ नहीं रहा, तो उनकी सहायता हेतु सरकार ने जो शिविर लगाये उनमें सरकार की ओर से सड़े हुए दाल, चावल दिये गये। जो आटा भेजा गया उसमें कीड़े पड़े हुए थे। मीडिया वालों की टीम ने पाया कि चावल, दाल में इतनी बदबू थी कि उसे जानवर भी नहीं खा सकते थे।

पूरे प्रकरण की जांच करने पर पता चलता है कि गुजरात भर में जो दंगे हुए हज़ारों की संख्या में मुसलमानों को मौत के घाट उतारा गया उसमें आर०एस०एस०, बजरंग दल और भाजपा के कार्यकर्ता थे। रेल हमला करने वालों में 15 वर्ष के हिन्दू बच्चों से लेकर 80 वर्ष तक के बूढ़े सम्मिलित थे। यह आतंकवाद पूर्व सुनियोजित ढंग से किया गया था और पूरे प्रदेश को मुस्लिमविहीन बनाने के संकल्प के साथ किया गया था। गुजरात की मोदी सरकार और उसकी पुलिस पूरी तरह हिन्दू आततइयों के साथ थी। जहां हत्याएं की जाती थी और मुसलमानों पर हमले होते थे, वहां या तो पुलिस, मूक बनी रहती थी या कहीं-कहीं स्वयं हत्यारे के

साथ होकर उनका सहयोग करती थी ।

इस पूरे प्रकरण की ख़बर मुख्यमत्री मोदी को पल-पल मिल रही थी, किन्तु उन्होंने दंगा रोकने के लिए कोई क़दम नहीं उठाया । स्थिति का विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि नरेन्द्र मोदी इस कांड में पूर्णरूपेण सहभागी हैं । यह सच है कि यदि भारत के अलावा अन्य कोई देश होता और ऐसे नरसंहार का कोई शासक दोषी पाया जाता तो उसके विरुद्ध त्वरित कार्रवाई होती ।

गुजरात का सच

■ डॉ॰ राम पुनियानी

पिछले दशकों में गुजरात में क्या हुआ–मानवाधिकारों के संदर्भ में और आर्थिक-सामाजिक प्रगति के मानकों के संदर्भ में । जहां तक मानवाधिकारों का संबंध है, गुजरात का रिकार्ड शर्मनाक है । यह वह राज्य है जहां मुख्यमंत्री के नेतृत्व में सरकार ने खुलेआम साम्प्रदायिक हिंसा करवायी । गोधरा के बाद गुजरात में हुई हिंसा भारत के इतिहास पर एक काला धब्बा है । गोधरा कांड के लिए कौन ज़िम्मेदार हैं, यह पता लगने के पहले ही मोदी ने मुसलमानों का क़त्लेआम शुरू करने का हुक्म दे दिया था । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े संगठनों ने बड़े पैमाने पर मुसलमानों को मारने के लिए हिन्दू समाज के ग़रीब तबक़े का इस्तेमाल किया । यही कुछ ईसाइयों के साथ भी किया गया । प्रदेश की छोटी-सी ईसाई आबादी को हर क्रिसमस के पहले हिंसा का सामना करना पड़ा । गुजरात का डांग ज़िला इस हिंसा का मुख्य केन्द्र था ।

गुजरात हिंसा के शिकार लोग आज भी दर-दर भटक रहे हैं । लगभग तीन लाख मुसलमान आज भी मूलभूत सुविधाओं से महरूम हैं और उनका आर्थिक और सामाजिक पुनर्वास नहीं हो सका है । गुजरात, बच्चों की शिक्षा के मामले में उड़ीसा और बिहार से भी पीछे है ।

अख़बारों में किसानों की आत्महत्या और दलितों पर अत्याचार की ख़बरें नियमित रूप से आती रहती हैं । पिछले पन्द्रह वर्षों के दौरान गुजरात में लिंगानुपात में भारी कमी दर्ज की गयी है और वो अब निम्न लिंगानुपात वाले हरियाणा और पंजाब जैसे राज्यों की श्रेणी में आ गया है । महिलाओं पर अत्याचारों में वृद्धि हुई है ।

उद्योग के मोर्चे पर भी गुजरात की स्थिति ख़राब है । कपड़ा उद्योग लगभग समाप्त हो गया है । हीरा उद्योग भी घोर संकट में है । हज़ारों छोटी-छोटी औद्योगिक ईकाइयों में ताले डल गये हैं और बेरोज़गार की फ़ौज बड़ी होती जा रही है । यह कहना ग़लत नहीं होगा कि गुजरात में आबादी का एक बहुत छोटा-सा हिस्सा तेज़ी से अमीर बन रहा है, जबकि राज्य की बाक़ी आबादी बदहाली में अपने दिन काट रही है ।

बड़े पूंजीपतियों और उच्च मध्यम वर्ग के एक हिस्से को हिटलर, मोदी, जर्मन राष्ट्रवाद और आर॰एस॰एस॰ की विचारधारा सारी समस्याओं का हल कर सकती है परंतु देश में केवल ये ही लोग नहीं रहते । देर-सवेर ये नीतियां देश को विनाश की ओर ले जाएंगी । मोदी को भाजपा, आडवाणी और शेखावत से जो शिकायतें हैं, वो भी उनकी फ़ासिस्ट मानसिकता के सूचक हैं ।

आज ज़रूरत इस बात की है कि हम एक ऐसा देश बनाएं जिसमें स्वतंत्रता संग्राम के मूल्यों के लिए स्थान हो, जिसमें सभी धर्मों के मानने वालों को समान अवसर मिलें और जिसमें मानवाधिकारों और प्रजातंत्र को सम्मान दिया जाए । उद्योगपतियों का सोचने का तरीक़ा अत्यंत सीमित और अपने निहित स्वार्थों से प्रेरित रहता है । यही कारण है कि धनकुबेरों के एक तबक़े ने जर्मनी में हिटलर को सिर आंखों पर बिठाया था और धनकुबेरों का एक हिस्सा भारत में हिटलर के भारतीय संस्करण नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री पद पर देखने के लिए आतुर है ।

दंगों का मनोविज्ञान

■ विभूति नारायण राय

भारत में सांप्रदायिक दंगों को लेकर देश के दो प्रमुख समुदायों-हिन्दुओं और मुसलमानों के अपने-अपने पूर्वाग्रह हैं । एक औसत हिन्दू दंगों के संबंध में मानकर चलता है कि दंगे मुसलमान शुरू करते है और दंगों में हिन्दू अधिक संख्या में मारे जाते हैं । हिन्दू इसलिए अधिक मारे जाते हैं क्योंकि उसके अनुसार मुसलमान स्वभाव से क्रूर, हिंसक और धर्मोन्मादी होते हैं । इसके विपरीत, वह मानता है कि हिन्दू धर्मभीरू, उदार और सहिष्णु होते हैं ।

दंगा कौन शुरू करता है, इस पर बहस हो सकती है पर दंगों में मरता कौन है इस पर सरकारी और ग़ैर-सरकारी आंकड़े इतनी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं कि बिना किसी संशय के निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है । उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार स्वतंत्रता के बाद दंगों में मरने वालों में 70 प्रतिशत से भी अधिक मुसलमान हैं । रांची-हटिया (1967), अहमदाबाद (1969), भिवंडी (1970), जलगांव (1970) और मुंबई (1992-93) या राम जन्मभूमि बाबरी मस्जिद विवाद के सिलसिले में हुए दंगों में तो यह संख्या– 90 प्रतिशत के भी ऊपर चली गयी है । यही स्थिति संपत्ति के मामलों में भी है । दंगों में न सिर्फ़ मुसलमान अधिक मारे गये बल्कि उन्हीं की संपत्ति का अधिक नुक़्सान भी हुआ । दंगों में नुक़्सान उठाने के बावजूद जब राज्य मशीनरी की कार्यवाही झेलने की बारी आयी तब वहां भी मुसलमान ज़बरदस्त घाटे की स्थिति में दिखायी देता है । दंगों में पुलिस का क़हर भी उन्हीं पर टूटता है । उन दंगों में भी जिनमें मुसलमान 70-80 प्रतिशत से अधिक मरे थे पुलिस ने जिन लोगों को गिरफ़्तार किया उनमें 70-80 प्रतिशत से अधिक मुसलमान थे, उन्हीं के घरों की तलाशियां ली गयीं, उन्हीं की औरतें बेइज़्ज़त हुईं और उन्हीं के मुहल्लों में सख़्ती के साथ कर्फ़्यू लगाया गया ।

इस विचित्र स्थिति के कारणों की तलाश बहुत मुश्किल नहीं है । यह धारणा कि हिन्दू स्वभाव से ही अधिक उदार और सहिष्णु होता है, हिन्दू मन में इतने गहरे पैठी हुई है कि ऊपर वर्णित आंकड़े भी औसत हिन्दू को यह स्वीकार करने से रोकते हैं कि दंगों में हिन्दुओं की कोई आक्रामक भूमिका भी हो सकती है । बचपन से ही उसने सीखा है कि मुसलमान अनुवांशिक रूप से क्रूर होता है और किसी की जान लेने में उसे कोई देर नहीं लगती, जबकि इसके उलट हिन्दू बहुत ही उदार हृदय होता है और चींटी तक को आटा खिलाता है । अक्सर ऐसे हिन्दू आपको मिलेंगे जो कहेंगे "अरे साहब हिन्दू के घर में तो आप सब्ज़ी काटने वाले छुरे के अतिरिक्त और कोई हथियार नहीं पाएंगे ।" इस वाक्य का निहितार्थ होता है कि मुसलमानों के घरों में तो हथियारों के ज़ख़ीरे भरे रहते हैं । इसलिए एक औसत हिन्दू के लिए सरकारी आंकड़ों को मानना भी आसान नहीं होता । वह सरकारी आंकड़ों की सत्यता पर सवालिया निशान उठाता है बावजूद इस तथ्य के कि दुनिया की कोई भी सरकार ऐसे आंकड़े जगज़ाहिर नहीं करेगी जिनसे यह साबित होता हो कि उसके यहां अल्पसंख्यकों का जान-माल सुरक्षित नहीं है ।

अब हम आएं दूसरे पूर्वाग्रह पर कि दंगा शुरू कौन करता है ? हिन्दुओं की बहुसंख्या यह मानती है कि दंगे आमतौर पर मुसलमानों द्वारा शुरू किये जाते हैं । एक हिन्दू नौकरशाह, शिक्षाशास्त्री, पत्रकार, न्यायविद या पुलिसकर्मी के मन में इसे लेकर कोई शंका नहीं होती है कि दंगा शुरू कौन करता है ? मुसलमान चूंकि स्वभाव से ही हिंसक होता है इसलिए यह बहुत स्वाभाविक है कि दंगा वही शुरू करता है । इस तथ्य का भी उल्लेख होता है कि दंगे उन्हीं इलाक़ों में होते हैं जहां मुसलमान बहुसंख्या में होते हैं ।

अपनी फेलोशिप के दौरान मैंने "दंगा कौन शुरू कराता है" के पहले "दंगे में मरता कौन है" की पड़ताल की । एक हिन्दू के रूप में मुझे बहुत ही तकलीफ़देह तथ्यों से होकर गुज़रना पड़ा । मेरा हिन्दू मन यह मानता था कि दंगों में उदार, सहिष्णु और अहिंसक हिन्दुओं का नुक़्सान क्रूर और हिंसक मुसलमानों के मुक़ाबले अधिक होता होगा । मैं यह जानकर चकित रह गया कि 1960 के बाद के एक भी दंगे में ऐसा नहीं हुआ कि मरने वालों में 70-80 प्रतिशत से

कम मुसलमान रहे हों । उनकी संपत्ति का भी इस अनुपात में नुक़्सान हुआ और यह तथ्य कोई रहस्य भी नहीं है । ख़ासतौर से मुसलमानों और उर्दू प्रेस को पता ही है कि जब भी दंगा होगा वे ही मारे जाएंगे । पुलिस उन्हें गिरफ़्तार करेगी, उन्हीं के घरों की तलाशियां ली जाएंगी । ग़रज़ यह है कि दंगे का पूरा क़हर उन्हीं पर टूटेगा । फ़िर क्यों वे दंगा शुरू करना चाहेंगे ? इसके दो ही कारण हो सकते हैं कि या तो एक समुदाय के रूप में वे मूर्ख हैं ।

आमतौर से दंगा कौन शुरू करता है का फ़ैसला इस बात से किया जाता है कि उत्तेजना के क्षण में पहला पत्थर किसने फेंका । यह फ़ैसला ग़लत हो सकता है । जिन्होंने सांप्रदायिक दंगों का निकट से और समाजशास्त्रीय औजारों से अध्ययन किया है वे जानते हैं कि हर फेंका हुआ पत्थर दंगा शुरू करने में समर्थ नहीं होता । दरअस्ल सांप्रदायिक हिंसा भड़कने के लिए ज़रूरी तनाव की निर्मिति एक पिरामिड की शक्ल में होती है । वास्तविक दंगे शुरू होने के काफ़ी पहले से, कई बार तो महीनों पहले से अफ़वाहों, आरोपों और नकारात्मक प्रचार की चक्की चलायी जाती है । तनाव धीरे-धीरे बढ़ता है और अंततः एक ऐसा प्रस्थान बिन्दु आ जाता है जब सिर्फ़ एक पत्थर या एक उत्तेजक नारा दंगा शुरू कराने में समर्थ हो जाता है ।

दंगो की शुरुआत के मिथ को बेहतर समझने के लिए एक उदाहरण काफ़ी होगा । भिवंडी में 1970 में भीषण दंगे हुए । 7 मई को दंगा तब शुरू हुआ जब शिवाजी की जयंती पर निकलने वाले जुलूस पर मुसलमानों द्वारा पथराव किया गया । पहली नज़र में दंगे की शुरुआत का कारण बड़ा स्पष्ट नज़र आता है । आसानी से कहा जा सकता है कि मुसलमानों ने दंगे शुरू किये । लेकिन यदि घटनाओं की तह में जाएं तो साफ़ हो जाएगा कि मामला इतना आसान नहीं है । 7 मई 1970 से पहले भिवंडी में इतना कुछ घटा था कि जब पहला पत्थर फेंका गया तब माहौल इतना गर्म था कि एक ही पत्थर बड़े दंगे की शुरुआत के लिए काफ़ी था । पिछले कई महीनों से हिन्दुत्ववादी शक्तियां भड़काऊ और उक्साने वाली कार्यवाहियों में लिप्त थीं । जस्टिस मदान कमीशन ने विस्तार से इन गतिविधियों को रेखांकित किया है । जुलूस के मार्ग पर भी दोनों पक्षों में विवाद हुआ । मुसलमान चाहते थे कि जुलूस उस रास्ते से न ले जाया जाए जहां उनकी मस्जिदें पड़ती थीं । हिन्दू उसी रास्ते से जुलूस निकालने पर अड़े रहे । जब जुलूस मस्जिदों के बगल से गुज़रा तो उसमें शरीक लोगों ने न सिर्फ़ भड़काऊ नारे लगाए और मस्जिद की दीवारों पर गुलाल फेंका बल्कि जुलूस को थोड़ी देर के लिए वहीं पर रोक दिया । इसी बीच मुसलमानों की तरफ़ से पथराव शुरू हो गया और दंगा शुरू हो गया । दंगे की शुरुआत का फ़ैसला करते समय हमें पथराव के पहले के घटनाक्रम को भी ध्यान में रखना होगा ।

बहस के लिए हम पहले पत्थर फेंके जाने के पीछे के घटनाक्रम को भुला भी दें तब भी हमें उस मुस्लिम मानसिकता को ध्यान में रखना ही पड़ेगा जिसके तहत पहला पत्थर फेंका जाता है । सबसे पहले इस तथ्य को ध्यान में रखना होगा कि मुसलमान जानते हैं कि अगर दंगा होगा तो वे ही पिटेंगे । फ़िर क्यों बार-बार वे पहला पत्थर फेंकते हैं ? कहीं ऐसा तो नहीं है कि पहला पत्थर एक ऐसे डरे हुए समुदाय की प्रतिक्रिया है जिसे लगातार अपनी पहचान और अस्तित्व संकट में नज़र आता है । ग़रीबी, शिक्षा का अभाव और मुसलमानों का अवसरवादी नेतृत्व भी इस डर को मज़बूत बनाता है । सरकारी नौकरी में भर्ती के समय किया जाने वाला भेदभाव और हर दंगे में उनकी सुरक्षा में राज्य की विफलता से भारतीय राज्य में उनकी हिस्सेदारी नहीं बन पा रही है । बहुत सारे कारण हैं, स्थानाभाव के कारण जिन पर यहां विस्तृत चर्चा संभव नहीं है, जो एक समुदाय को निरंतर भय और असुरक्षा के माहौल में जीने के लिए मजबूर रखते हैं ।

ऊपर मैंने जान-बूझकर बहुसंख्यक समुदाय के मनोविज्ञान की बात की है, क्योंकि मेरा मानना है कि बिना इसे बदले हम देश में सांप्रदायिक दंगे नहीं रोक सकते । बहुसंख्यक समुदाय के समझदार लोगों को यह मानना ही पड़ेगा कि उनकी धार्मिक बर्बरता के शिकार अल्पसंख्यक समुदायों के लोग ही रहे हैं और इस देश की धरती तथा संसाधनों पर जितना उनका अधिकार है उतना ही अल्पसंख्यक समुदायों का भी है । इसके साथ ही हमें यह भी मानना होगा कि सांप्रदायिक दंगों के दौरान पुलिस और फ़ौज का काम देश के सभी नागरिकों की हिफ़ाज़त करना है, हिन्दुत्व के औजार की तरह काम करना नहीं ।

अमित कुमार लाडी "उत्कृष्ट हिन्दी सेवा सम्मान" से सम्मानित

ग्वालियर साहित्य एवं कला परिषद, ग्वालियर द्वारा आयोजित भव्य साहित्यिक कार्यक्रम में हिन्दी साहित्यिक मासिक पत्रिका "आलराउंड" के मुख्य संपादक व आलराउंड अकादमी के अध्यक्ष श्री अमित कुमार लाडी (साहित्यकार, प्रकाशक व संपादक) को दिनांक 2 सितम्बर 2012 को विभिन्न प्रांतों से आये विशिष्ट साहित्यकारों के बीच ग्वालियर की नयी सड़क पर स्थित माधव महाविद्यालय में "उत्कृष्ट हिन्दी सेवी सम्मान" से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में श्री अमित कुमार लाडी को शाल, पुस्तकें, स्मृति चिन्ह व प्रमाण-पत्र के साथ तालियों की गड़गड़ाहट के बीच सम्मानित किया गया। ग़ौर हो कि उन्हें यह सम्मान हिन्दी साहित्य में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया गया है।

ज्ञात हो कि अमित कुमार लाडी आलराउंड अकादमी के अध्यक्ष हैं और उन्होंने हिन्दी के साथ-साथ अपनी मातृभाषा पंजाबी और अंग्रेज़ी में भी प्रचुर लेखन कर्म किया है व लगातार कर भी रहे हैं। लेखन कर्म के अलावा उन्होंने पंजाबी, हिन्दी और अंग्रेज़ी में प्रचुर संपादन कर्म भी किया है व लगातार कर भी रहे हैं। यहां यह बताना आवश्यक है कि अमित कुमार लाडी तीन भाषाओं (पंजाबी, हिन्दी और अंग्रेज़ी) में लिखते हैं। इसके साथ ही वह तीन भाषाओं में तीन मासिक पत्रिकाएं भी निकाल रहे हैं जो अपने आप में श्रेष्ठतम कार्य है। वे फ़रवरी 2004 से पंजाबी साहित्यिक मासिक पत्रिका प्रकाशित कर रहे हैं। जून 2010 से अंग्रेज़ी की साहित्यिक मासिक पत्रिका एवं अप्रैल 2010 से हिन्दी मासिक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन कर रहे हैं।

ग़ौर हो कि अमित कुमार लाडी विगत 9 वर्षों से साहित्य की सेवा के उद्देश्य से साहित्यिक पत्रिकाओं का सफल संपादन कर रहे हैं तथा पंजाबी, हिन्दी और अंग्रेज़ी साहित्य-जगत में उनकी तीनों पत्रिकाएं काफ़ी चर्चित भी हैं।

आलराउंड पब्लिकेशंज़ भी उन्होंने नवम्बर 2008 में शुरू किया था। इसके अलावा उन्हें चित्रकारी, फ़ोटोग्राफ़ी, विडियोग्राफ़, नाटक आदि का भी शौक़ है और आई॰एस॰बी॰एन॰ नम्बर के साथ उनकी स्वयं की विभिन्न विधाओं में 55 पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं।



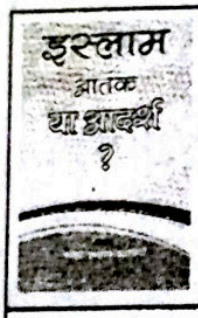

एक अहम किताब

ISLAM REPRESENTS TERROR OR IDEAL ?

लेखक : स्वामी लक्ष्मीशंकाराचार्य

☆ इस्लाम : आतंक या आदर्श?	(हिन्दी)	पृष्ठ 96	मूल्य 40₹
☆ ISLAM : Repersents Terror or Ideal?	(अंग्रेज़ी)	पृष्ठ 128	मूल्य 100 ₹
☆ اسلام: دہشت گردی یا ایک مثالی دین ؟	(उर्दू)	पृष्ठ 104	मूल्य 40₹

स्वामी जी ने इस्लाम के विरुद्ध एक किताब ''इस्लामी आतंक का इतिहास'' लिखी जिसका अंग्रेज़ी अनुवाद 'The History of Islamic Terrorism' के नाम से प्रकाशित हुआ था। इस्लाम के अध्ययन के बाद उन्होंने अपनी ग़लती के लिए क्षमा चाही है और इस्लाम के बारे में अपने उच्च विचार उपरोक्त किताब में लिखे, ताकि इस्लाम के बारे में लोगों की ग़लतफ़हमियाँ दूर हो सकें।

स्वामी जी की यह किताब हिन्दी, अंग्रेज़ी और उर्दू में हमारे यहाँ उपलब्ध है। (यह किताब अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में भी प्रकाशित हो रही है।)

हमारी अन्य पुस्तकें

इस्लाम एक स्वमसिद्ध ईश्वरीय जीवन व्यवस्था	(उर्दू, हिन्दी)	राजेन्द्र नारायाण लाल	25 ₹
इस्लाम मानवता पूर्ण ईश्वरीय धर्म	(हिन्दी)	लाला काशी राम चावला	25 ₹
इस्लाम एक सामान्य परिचय	(उर्दू, हिन्दी)	शेख़ अली तनतावी (रह०)	80 ₹
इतिहास के साथ यह अन्याय	(उर्दू, हिन्दी)	बी० एन० पाण्डे	7 ₹
पवित्र कुरआन में मानवता की शिक्षा	(हिन्दी)	विजय गोपाल मंगल	10 ₹
ग़लतफ़हमियों का निवारण	(उर्दू, हिन्दी, अंग्रेज़ी)	डॉ० ज़ाकिर नाइक	25 ₹
कुरआन पर अनुचित आक्षेप	(उर्दू, हिन्दी)	नसीम अहमद ग़ाज़ी	15 ₹

दावती काम करनेवालों और मुफ़्त तक़सीम करनेवालों के लिए विशेष छूट।

मधुर सन्देश संगम

E-20, अबुल-फ़ज़्ल इंक्लेव, जामिया नगर, नई दिल्ली - 110025
फोन : 011-26953327, 09212356332,
e-mail : madhursandeshsangam@yahoo.co.in

बिंदिया

● मुहम्मद सलीम ख़ान

गुजरात और मध्य प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्र में बंजारा समाज के लोग रहते हैं । ये लोग आज भी शहरी जीवन से अलग अपने रीति-रिवाज के अनुसार जीवन व्यतीत करते हैं । ये न हिन्दू हैं, न मुसलमान, न सिख, न ईसाई । इनकी अपनी प्रथाएं हैं । यहां विवाह की परंपरा भी बिल्कुल अछूी है । हर साल सावन के महीने में एक मेला लगता है । जिसे शादी का मेला कहा जाता है । दूरदराज़ से विवाह के इच्छुक नवयुवक और युवतियां इस मेले में आते हैं और बड़े विचित्र ढंग से अपना जोड़ा पसन्द करके व्यावहारिक जीवन प्रारंभ करते हैं । विवाहित महिलाएं इस मेले में बिंदिया लगाकर आती हैं । उनकी तरफ़ कोई भी नज़र उठाकर नहीं देख सकता । जिस कुंआरी लड़की को शादी नहीं करनी होती वो इस मेले में नहीं आती । इसलिए जो लड़कियां मेले में बग़ैर बिंदिया के आती हैं उनके बारे में ये बात मान ली जाती है कि वे शादी की इच्छुक हैं । अब जिस लड़के को कोई लड़की पसन्द आ जाए वो उसे सबके समक्ष भरे बाज़ार से उठाकर ले जाता है । ये इस बात की घोषणा होती है कि उनका विवाह हो गया । क़बीले वाले उन्हें पति-पत्नी स्वीकार कर लेते हैं । इस तरह हर साल कई शादियां एक ही समय पर हो जाती है । इस साल जमना बाई भी मेले में आयी थी । वो चूंकि कुंवारी थी इसलिए उसके माथे पर बिंदिया नहीं थी लेकिन इसके बावजूद उसका चेहरा चांद-सा जगमगा रहा था । कई नवजवानों ने उसके क़रीब आने का प्रयत्न किया लेकिन उसने मुंह फेर लिया जो इस बात का संकेत था कि उसे वो रिश्ता स्वीकार नहीं है । लेकिन जब दुर्जन को उसने देखा तो देखती ही रह गयी । दुर्जन को भी अपनी मंज़िल मिल गयी और वो उसे उठाकर मेले से ले गया । दुर्जन और जमना बाई अपने परिवार में पहुंचे तो सब लोग बहुत खुश हुए । दुर्जन मेले से चांद का टुकड़ा जो उठा लाया था । दुर्जन और जमना पहली झलक में ही एक दूसरे को पसन्द कर चुके थे । क़बीले के लोगों में उनके प्रति ईर्ष्या की भावना उत्पन्न होने लगी थी ।

अगले साल जमना फिर शादी के मेले में गयी लेकिन इस बार उसके माथे पर बिंदिया सजी हुई थी । वो अपनी आवश्यकता और अपने पति की पसन्द का सामान ख़रीद रही थी लेकिन गंगा सिंह की निगाहें लगातार उसका पीछा कर रही थीं । मेले में बहुत सारी सुन्दर कुंआरी लड़कियां थीं लेकिन गंगा सिंह ने किसी की तरफ़ नहीं देखा था, मगर देख उसे रहा था जिसे देखना वर्जित था । वो जहां भी जाती वह उसके आसपास होता । वो दरअस्ल जमना बाई को उठाकर ले जाने का अवसर तलाश कर रहा था । लेकिन जमना उसके इरादे से बेख़बर थी । मेले के तीसरे और आख़िरी दिन भीड़भाड़ छट चुकी थी । अधिकतर विवाह संपन्न हो चुके थे । दुकानों का ज़्यादातर माल बिक चुका था बल्कि दोपहर के बाद चल चलाव का वातावरण था । जमना और दुर्जन भी वापसी की तैयारी कर रहे थे कि अचानक घोड़ों की टापों से बाज़ार गूंज उठा । दुकान वाले डर गये । इस बार डाकू ऐसे मौक़े पर आये कि उनके पास ख़ूब जमा पूंजी थी जो उन्होंने पिछले तीन दिनों में कमाई थी । वो तो न केवल माल और फ़ायदा बल्कि अपनी मेहनत के भी लुट जाने की अपेक्षा कर रहे थे । लेकिन उनके आश्चर्य की सीमा न रही जब कोई डाकू उनके निकट भी नहीं फटका, बस एक नक़ाबपोश जमना बाई के पास आया और उसे उठाकर अपने घोड़े पर बैठाया । हवा में एक साथ कई फ़ायर हुए और एक ज़ोरदार घोषणा हुई, ''सरदार गंगा सिंह की जय'' और फिर देखते-देखते सब डाकू वहां से हवा हो गये । पुलिस के पहुंचने तक गर्द बैठ चुकी थी । दुकान वाले प्रसन्नचित थे और दुर्जन अपने भाग्य को कोस रहा था । थोड़ी देर बाद एक क़बाइली बुज़ुर्ग आगे बढ़ा, दुर्जन को पानी पिलाया और कहा, ''दुर्जन जो कुछ तेरे साथ हुआ उसका हमें दुख है । अगर कोई और ऐसा करता तो हम उसे अपनी पंचायत में सज़ा देते । परंतु डाकू गंगा सिंह पर किसका ज़ोर चले है । उससे तो पुलिस और सरकार भी डरे है । ख़ैर, अब तू जमना को भूल जा । अब भी मेले में कुछ लड़कियां बाक़ी हैं । उनमें से किसी एक से विवाह रचा ले

और अपना नया जीवन आरंभ कर दे ।''

दुर्जन बोला, ''ये मुझ से नहीं होगा । मैं जमना के बग़ैर नहीं जी सकता । मैं उसके सिवा किसी और के साथ ज़िन्दगी नहीं गुज़ार सकता ।''

''बेटा तेरी बात ठीक है । वो तेरी धर्म पत्नी थी लेकिन अब न है । समझ ले वो परलोक सिधार गयी । अब उसे भूलने के अलावा तेरे पास कोई चारा नहीं है । समझ ले कि वो मर गयी ।'' ''बाबा अगर ऐसा है तो समझ लो मैं भी मर गया । मेरा अन्तिम संस्कार कर दो । मैं जमना के बग़ैर जी नहीं सकता ।'' परिवार जनों के संग उदास दुर्जन घर वापस आ गया ।

जमना घोड़े पर गंगा सिंह से अपने आपको छुड़ाने का प्रयत्न करती रही लेकिन वो अपने आप को गंगा सिंह से आज़ाद न करा सकी । लंबी घाटियों से गुज़रकर गंगा सिंह और उसका टोला अपने अड्डे पर पहुंचा और वो लोग अपने घोड़ों से उतरे । गंगा सिंह ने जैसे ही जमना को घोड़े से उतारा, वो गंगा सिंह पर बरस पड़ी और उसे बुरा भला कहने लगी । गंगा के साथी डाकू ने जमना को डांटा ।

''बदतमीज़ लड़की..... तू हमारे सरदार को गालियां देती है । चुप हो जा...नहीं तो तेरी ज़ुबान काट दूंगा ।''

जमना बोली, ''ज़ुबान क्यों प्राण खींच लो, मुझे मार डालो। इस अपमानजनक जीवन से तो मर जाना अच्छा है।''

गोगा सिंह गुस्से में जमना की तरफ़ बढ़ा लेकिन गंगा ने मना कर दिया । वो बोला, ''सुनो मेरे साथियो । जमना हमारी मेहमान है । ये जो चाहे करे हम इसका जवाब नहीं देंगे । हम इसका भरपूर ख़्याल रखेंगे । ये मेरा आदेश है ।''

जमना बोली, ''इतना ही ख़्याल है तो मुझे लाया क्यों? मुझे मेरे दुर्जन के पास छोड़ आ ।''

''नहीं जमना, ये नहीं होगा । इसके सिवा तू जो चाहे मांग ले, तेरे लिए हाज़िर कर दूंगा ।''

''मुझे कुछ नहीं चाहिए ।'' जमना ने चिल्लाकर कहा, ''मुझे तो बस अपना दुर्जन चाहिए ।''

''साथियो, इसे छोड़ दो । ये क्रोधित मुद्रा में है । इसकी निगरानी करो और इसकी सेवा करो । जाओ तुम सब विश्राम कर सकते हो ।'' गंगा सिंह के आदमी अपने-अपने ख़ेमों में चले गये ।

दूसरे दिन गंगा और जमना दोनों एकांत में साथ थे । गंगा ने जमना से कहा, ''देख जमना, जिस तरह पिछले साल शादी के मेले से दुर्जन तुम्हें उठाकर ले गया था और तुम उसकी पत्नी बन गयी थी उसी तरह इस वर्ष मैं तुम्हें उठाकर ले आया हूं, इसलिए अब तुम मेरी पत्नी हो ।''

जमना ने कहा, ''नहीं गंगा । ऐसा नहीं है । पिछले साल मैं किसी की पत्नी नहीं थी इसलिए मैं दुर्जन की धर्म पत्नी बन गयी लेकिन इस साल मैं दुर्जन की बीवी थी और उसकी बीवी होते हुए मैं किसी और की पत्नी कैसे बन सकती हूं ?''

''क्यों नहीं बन सकतीं ? समझ लो कि उससे अब तुम्हारा विवाह टूट गया है ।''

''नहीं गंगा, विवाह उसने मेरे साथ किया था इसलिए विवाह को तोड़ भी वही सकता है...और तुम जानते हो कि वो विवाह को नहीं तोड़ सकता ।''

''क्यों नहीं तोड़ सकता ?'' गंगा ने पूछा ।

''इसलिए कि वो मुझसे प्रेम करता है ।''

''ये तुम्हें कैसे पता चला ?''

जमना बोली, ''मुझे पता है क्योंकि मैं भी उससे बहुत प्रेम करती हूं ।''

''लेकिन जमना, मैं भी तो तुमसे प्रेम करता हूं । तुम मेरे बारे में नहीं सोचतीं ?''

''नहीं, तुम मुझसे प्रेम नहीं करते । तुम मुझे ज़बरदस्ती उठाकर लाए हो । मैं तुमसे प्रेम नहीं करती, मैं तुमसे घृणा करती हूं ।'' यह कहकर जमना उठकर वहां से चली गयी।

एक सप्ताह बाद एक बार फिर गंगा और जमना एक साथ बैठे तो गंगा ने पूछा, ''जमना क्या तुम अब भी दुर्जन से प्रेम करती हो ?''

जमना बोली, ''हां हां क्यों नहीं ? बल्कि जबसे तुमने हमें जुदा कर दिया है, मैं पहले से अधिक उससे प्रेम करती हूं ।''

''और क्या तुम अब भी मुझसे नफ़रत करती हो ?''

''मैं अब तुमसे नफ़रत...'' यहां आकर जमना रुक गयी फिर उसने कहा ।

''नहीं करती ।''

''जमना...तुम रुक क्यों गयी थीं ?''

''दरअस्ल मैं सोच रही थी ।''

''मतलब ये तुम्हारा सोचा समझा निर्णय है ?''

''यही समझ लो ।''

''ठीक है, तुम्हें यहां कोई असुविधा तो नहीं है ?''

''नहीं ।''

''तुम्हें किसी चीज़ की कमी का आभास तो नहीं होता ।''

''होता है ।''

''मैं समझ गया, लेकिन मैं नहीं पूछूंगा, इसलिए कि मैं तुम्हें वो चीज़ उपलब्ध नहीं करा सकता ।''

जमना ने हंसकर कहा, ''समझदार आदमी हो ।''

गंगा बोला, ''धन्यवाद ।''

एक महीने के बाद गंगा और जमना एक बार फिर मिले । गोगा सिंह ये देखकर खुश हुआ और शराब की नई बोतल खोलकर वहां ले आया । गंगा ने उसे देखा और कहा, ''ये क्या ? ले जाओ । देख नहीं रहे हो कौन बैठा है ?''

''क्षमा करना सरदार...'' गोगा बोला, ''मैं चाय लेकर आता हूं ।''

जमना ने पूछा, ''गंगा तुम मेरा इतना ख़याल क्यों करते हो ?''

''क्योंकि...क्योंकि...तुम जानती हो और फिर भी पूछ रही हो !''

जमना बोली, "ख़ैर, तुमसे एक बात पूछना चाहती हूं।''

गंगा ने कहा, ''पूछो ।''

''तुम्हें तो पता है कि इस साल शादी के मेले में बहुत सारी सुन्दर युवतियां आई थीं ।''

''नहीं...मैं नहीं जानता ।'' गंगा ने जवाब दिया ।

''हां...दरअस्ल तुम से देर हो गयी । तुम तीसरे दिन आये, तब तक तो सब बियाही जा चुकी थीं ।''

''नहीं जमना, मैं तीसरे दिन नहीं आया था, मैं तो पहले दिन से वहां था ।''

''अच्छा, तो तुम पहले दिन से वहां थे और तुम ने किसी को नहीं देखा ।''

''नहीं जमना, मैंने किसी को नहीं देखा । मैं तो बस तुम्हें देखता रहा । मेले में पहले दिन से तुम कब कहां गयीं, ये मुझ से पूछ लो, मैं हर ज़गह तुम्हारे आस-पास था ।''

''अच्छा मुझे तो पता नहीं चला ।''

''तुम्हें कैसे पता चलता, तुम तो अपने आप में और दुर्जन में खोयी हुईं थीं ।''

''लेकिन तुम मेरे आस-पास क्या करते रहे ?''

''मैं दरअस्ल अवसर की प्रतीक्षा में था ।''

''अवसर की प्रतीक्षा ? कैसा अवसर ?''

''तुम्हें अपने साथ ले जाने का मौक़ा तलाश कर रहा था ।''

''लेकिन तुमने मेरे माथे पर बिंदिया नहीं देखी ?''

''देखी थी ।''

''फिर भी...?''

''हां...फिर भी।''

''क्यों ?''

''क्यों का जवाब तुम जानती हो ?''

''लेकिन ये सब हुआ कैसे ?''

''जमना मैं तुम्हें बतलाना चाहता था लेकिन फिर इसलिए नहीं बताया कि शायद तुम विश्वास न करो या कान ही न धरो । लेकिन अब जब तुमने खुद ही पूछ लिया तो हो सकता है अब भी विश्वास न करो, लेकिन सुनोगी तो सही ।''

''हां सुनूंगी और हो सकता है विश्वास भी कर लूं ।''

''ख़ैर इससे फ़र्क़ नहीं पड़ता । इस कहानी का आरंभ पिछले साल हुआ । हम लोग मेले में लूटपाट करने के लिए गये हुए थे । वहां मेरी नज़र तुम पर पड़ गयी । तुम्हारे माथे पर उस समय बिंदिया नहीं थी । तुम्हें देखने के बाद मैंने इरादा कर लिया कि मैं तुम्हारे माथे पर बिंदिया सजाऊंगा । मैं वहां से गहनों की दुकान पर गया और बिंदिया ख़रीदी । जब मैं बिंदिया लेकर वापस आया तो उस वक़्त तक दुर्जन तुम्हें ले जा चुका था । मैं तुम्हारे बग़ैर तुम्हारी बिंदिया को अपने साथ लिए वापस आ गया और अगले मेले की प्रतीक्षा करने लगा । ये एक साल एक शतक समान था परंतु किसी प्रकार वह भी बीत गया । मैं नहीं जानता था कि तुम मेले में आओगी या नहीं, लेकिन सौभाग्य से पहले ही दिन शाम में मैंने तुम्हें देख लिया और उसके बाद मैं इस ताक में लगा रहा कि मौक़ा पाते ही तुम्हें उठा लूंगा । अंतिम दिन तक चुपके से अपहरण का अवसर न मिला तो फिर मुझे खुलेआम तुमको उठाकर लाना पड़ा । पहले तो मैंने सोचा ज़बरदस्ती तुम्हारे माथे से दुर्जन की बिंदिया निकालकर फेंक दूं और अपनी बिंदिया सजा दूं । लेकिन मुझे लगा कि मेरे ऐसा करने पर तुम नाराज़ हो जाओगी । मैं तुम्हें नाराज़ नहीं कर सकता था । इसलिए मैंने अपना निर्णय बदल दिया ।''

''अब क्या इरादे हैं ?'' जमना ने पूछा ।

''अब यह इच्छा है कि अगर तुम स्वेच्छा से दुर्जन की बिंदिया अपने माथे से निकालकर फेंक दो तो मैं अपनी

बिंदिया माथे पर सजा दूं ।''

जमना ने पूछा, ''वरना...।''

''वरना अपनी बिंदिया को चम्बल नदी में फेंक दूंगा और ख़ुद भी उसी में कूद जाऊंगा ।'' गंगा के इस वाक्य पर जमना कांप उठी । उसे पता नहीं था कि डाकू गंगा सिंह, जिससे सारा इलाक़ा कांपता है, वो इतना भावुक और प्रेम स्वभाव का व्यक्ति होगा । इस एक महीने में उसके व्यवहार से वह काफ़ी प्रभावित हुई थी । गंगा हमेशा ही जमना से दूर रहा । उसने जमना के साथ कभी कोई दुर्व्यवहार नहीं किया ।

तीन महीने बाद गंगा और जमना एक साथ बैठे थे कि जमना ने पूछा, ''गंगा, तुम एक दिन बिंदिया का उल्लेख कर रहे थे, जो तुमने मेरे लिए ख़रीदी थी ।''

''हां जमना, हम डाकू लोग चीज़ें ख़रीदते नहीं, छीन लेते हैं, लेकिन वो बिंदिया मैंने अपने स्वभाव के विपरीत ख़रीदी थी ।''

''वो तो मैं जानती हूं...जैसे तुमने मुझे दुर्जन से छीन लिया । ख़ैर, क्या तुम मुझे वो बिंदिया नहीं दिखाओगे ?''

''अवश्य दिखाऊंगा । जब ख़रीदी ही तुम्हारे लिए है तो क्यों नहीं दिखाऊंगा ?''

गंगा ने अपने बटुए में हाथ डाला तो वो कारतूस से भरा हुआ था ।

जमना ने कहा, ''ये कारतूस तो मेरे लिए नहीं ख़रीदे ? अगर इसको मेरे माथे पर सजा दिया तो हो गया कल्याण ।''

''नहीं जमना, बात दरअस्ल ये है कि कारतूस कई हैं और बिंदिया केवल एक है । इसलिए मिलने में मुश्किल हो रही है ।'' ये कहते हुए गंगा ने बिंदिया निकाली ।

जमना बिंदिया को देखकर डर गयी । ''ये तो बहुत ही बहुमूल्य हीरों से जड़ी बिंदिया है ।''

''हां हां...जिसके लिए ख़रीदी थी, वो भी तो बहुत मूल्यवान है ।''

''लेकिन इसकी क्या क़ीमत अदा की तुमने ?''

गंगा बोला, ''मैंने ये बिंदिया दो सौ रुपये में ख़रीदी है ।''

''क्या बात करते हो ? दुर्जन ने ये मामूली-सी बिंदिया पांच सौ में ख़रीदी और तुम्हें ये बिंदिया दो सौ रुपये में मिल गयी ।''

गंगा बोला, ''यही तो फ़र्क़ है दुर्जन में और हम में दरअस्ल बात ये है कि हम तो गहने औने-पौने दाम में बेचते हैं, इसलिए हमें इसकी वही क़ीमत मालूम होती है । मैंने इस बिंदिया की वैसी ही क़ीमत लगायी जैसी महाजन हमसे ख़रीदते हुए लगाते हैं । जब महाजन ने डांटकर कहा था, ''दिमाग़ ख़राब है क्या ?'' तो गोगा आहिस्ता से बोला–''गंगा सिंह की जय हो ।'' महाजन हम दोनों को पहचान गया । उसके पैरों तले से ज़मीन खिसक गयी । उसने कहा, यूं ही ले लीजिए सरकार । मैंने कहा...''नहीं, सही क़ीमत बताओ ।'' उसने कहा दो सौ रुपये । मैंने दो सौ रुपये अदा किये और बिंदिया मेरी हो गयी ।''

''तो ये कहो कि डरा धमकाकर ली तुमने ये बिंदिया।''

''नहीं जमना, दरअस्ल हमारा और महाजन का ख़ास संबंध है । वो भी हमसे कम दाम में माल लेता है और हम भी उससे कम दाम में...।''

जमना ने बात काटते हुए कहा, ''उसी दाम में...?''

''नहीं...'' गंगा बोला उसी दाम में नहीं, मुफ़्त में । लेकिन मुफ़्त में भी नहीं, अपनी जान जोखिम में डालकर लेते हैं ।''

जमना बोली, ''लेकिन ये तो ग़लत काम है ।''

गंगा ने जवाब दिया, ''हां जमना, तुम्हें तो हमारी हर बात ग़लत लगती है । दरअस्ल मुझसे बड़ी ग़लती ये हुई कि मैं बिंदिया के चक्कर में पड़ गया । न मैं बिंदिया ख़रीदने जाता और न तुम्हें दुर्जन अपनी बिंदिया पहनाकर साथ ले जाता ।''

''लेकिन भाग्य के लिखे को कौन बदल सकता है ?'' जमना बोली ।

गंगा ने कहा, ''तुम बदल सकती हो । तुम हमारी क़िस्मत बदल सकती हो जमना ।''

''नहीं गंगा, मैं तुम्हारी क़िस्मत कैसे बदल सकती हूं जबकि मेरे माथे पर दुर्जन की बिंदिया है ? अब वो मेरा मुक़द्दर है । वो बदल सकता है, मैं नहीं बदल सकती ।''

गंगा बोला, ''कौन बदलेगा यह तो समय ही बतलाएगा। मैं इन्तिज़ार करूंगा...समय के बदलने का ।''

''कब तक इन्तिज़ार करोगे...?''

''मैं इस साल शादी के मेले तक प्रतीक्षा करूंगा । अगर उस समय तक तुमने अपने माथे से दुर्जन की बिंदिया निकाल फेंकी तो ठीक है...।''

और अगर नहीं फेंकी...तो...?'' जमना ने पूछा ।

"अगर नहीं तो मैं अपनी हार मान लूंगा और तुम्हें उस मेले में दुर्जन के पास छोड़ आऊंगा । लेकिन मुझे विश्वास है कि वह वक़्त नहीं आएगा ।"

जमना ने सोचा ठीक है । जिस तरह एक साल गंगा ने इन्तिज़ार किया, वो भी इन्तिज़ार कर लेगी और दुर्जन भी इन्तिज़ार करेगा, उसके बाद वो दोबारा अपनी घर गृहस्थी में चली जाएगी ।

छह महीने बाद गंगा और जमना साथ बैठे थे । जमना ने पूछा, "गंगा, एक बात बताओ, तुम स्वभाव से डाकू नहीं लगते, फिर तुमने डकैती का व्यवसाय क्यों अपना लिया?"

गंगा ने कहा, "तुमने बहुत पुरानी कहानी छेड़ दी जमना। तुम तो जानती हो कि हमारे क्षेत्र में लूटमार की प्राचीन परम्परा है । इसीलिए रात के समय इस इलाक़े में सवारियां अकेले-अकेले नहीं बल्कि कारवां बनाकर जाती हैं और उसके बावजूद उन्हें लूट लिया जाता है ।"

"हां हां...वो तो ठीक है लेकिन सब लूटमार करने वाले डाकू तो नहीं बन जाते ।" जमना ने पूछा ।

"तुमने सही कहा जमना । मैं भी डाकू नहीं था, लेकिन लूटमार किया करता था और तुम ये भी जानती हो कि हम लोग लूटने के बाद लुटने वालों की पिटायी भी करते हैं ।"

"हां हां जानती हूं..." जमना बोली "...ताकि ऐसा लगे मानो बड़ा परिश्रम करके ये कमाई प्राप्त की गयी है ।"

गंगा बोला, "बिल्कुल सही। मैं भी इसी तरह एक बार लूटने वाले को पीट रहा था कि अचानक वो ठंडा हो गया। उसका देहांत हो गया था ।"

"क्या ?" जमना ने आशचर्य से पूछा । "तुमने उसे मार डाला ।"

"नहीं जमना, मेरा इरादा उसकी हत्या करने का नहीं था । अब तुम तो जानती ही हो, हर व्यक्ति की मृत्यु का समय पूर्वनिर्धारित है । संयोग से उस आदमी की मौत का क्षण उसी वक़्त आ गया, जब वो मुझ से मार खा रहा था।"

"फिर ?" जमना ने पूछा ।

"फिर क्या, जैसे ही हमें पता चला कि वो मर गया है, हम लोग घबरा गये और लूट का माल छोड़कर वहां से भाग गये । मैं अपने दूर के रिश्तेदार के यहां जाकर छुप गया । लेकिन शायद वो बड़ा आदमी था । पुलिस ने सारे इलाक़े की ज़बरदस्त छानबीन शुरू कर दी और मुझे विश्वास हो गया कि मुझे जल्दी ही फांसी हो जाएगी । हमारी ओर से कोई वकील भी तो नहीं खड़ा होता जो काले को सफ़ेद बनाकर हमें छुड़ा सके ।"

"फिर...?" जमना की जिज्ञासा बढ़ती जा रही थी ।

"फिर क्या ? मैं भागकर चंबल की घाटी में आ गया, जहां मेरी मुलाक़ात गोगा के बाप जग्गा डाकू से हो गयी । उसने मुझे अपने यहां शरण दी । मैं उसकी टोली में भर्ती हो गया और डकैतियों में भाग लेने लगा । अपने साहस और निशानेबाज़ी के कारण मैं अपनी टोली में लोकप्रिय हो गया था । एक बार एक मुठभेड़ में जग्गा को गोली लगी और वो मारा गया । उसके बाद गिरोह का सरदार कौन बने ? इस प्रश्न पर विवाद खड़ा हो गया । कुछ लोग गोगा को सरदार बनाना चाहते थे परंतु वह बहुत छोटा था । उसकी आयु लगभग बारह साल थी । उसकी मां ने घोषणा कर दी कि गोगा सिंह अभी सरदारी का बोझ नहीं संभाल सकता और अपना मत मेरे प्रति प्रकट कर दिया । इसके बाद मेरे समर्थकों ने हवा में गोलियां चलानी शुरू कर दीं । चारों तरफ़ा "गंगा सिंह ज़िन्दाबाद" के नारे लगने लगे और मैं सरदार बन गया ।"

"लेकिन अब तो गोगा सिंह जवान हो गया है । अब तो वो सरदार बन सकता है ।" जमना ने पूछा

"हां जमना, तुम सच कहती हो । लेकिन डाकुओं के अपने भी कुछ नियम क़ानून होते हैं । यहां गद्दारी नहीं होती । सरदार हटाये नहीं जाते । या तो मारे जाते हैं या वो अपनी इच्छा से स्वयं सरदारी के पद से हट जाते हैं, और जिसको अपना उत्तराधिकारी बनाते हैं वह सरदार बना दिया जाता है । गोगा मुझे बाप के समान मानता है, मेरा बड़ा आदर करता है ।"

"अच्छा..." जमना ने पूछा "तो तुम उसको अपना उत्तराधिकारी बनाकर सरदारी क्यों नहीं छोड़ देते ।"

जमना के मुख से ये बात सुनकर गंगा को आश्चर्य हुआ । इसलिए कि इससे पहले उससे ऐसा किसी ने नहीं कहा था । गंगा बोला, "सुझाव तो अच्छा है, लेकिन अब सरदारी से हटकर मैं क्या करूंगा ? चम्बल की घाटी से बाहर मौत का फन्दा मेरी प्रतीक्षा कर रहा है । अब मुझे यहीं जीना है और यहीं मरना है ।"

"परंतु मैं...मैं..." जमना ने कहा ।

गंगा ने पूछा, "क्या ?"

जमना बोली, "कुछ नहीं ।" दरअस्ल उसकी ज़बान से यह वाक्य अनायास ही निकल गया था कि मैं यहां नहीं रह सकती, और उसे वहां क्यों रहना था । वो सावन की पूर्णिमा का इन्तिज़ार कर रही थी । जब अपने वचन के अनुसार गंगा उसे शादी के मेले में जाकर छोड़ेगा तो वो अपने दुर्जन के साथ वापस चली जाएगी । उसे इस बात का पूर्ण विश्वास था कि गंगा अपना वचन ज़रूर निभाएगा और उसे इस बात पर भी विश्वास था कि दुर्जन उसे फिर अपना लेगा और फिर वो चोरों की तरह घाटियों में नहीं बल्कि साहूकारों की तरह खेतों और खलिहानों में अपना जीवन व्यतीत करेगी।

घड़ी की सुईयां हफ़्तों और महीनों का प्रवास करती रहीं । सावन का महीना और पूर्णिमा की रात आ गयी । उस दिन जमना ने बड़ी सावधानी से अपनी बिंदिया को धोया और फिर उसे अपने माथे पर सजा लिया । आज उसे अपने दुर्जन से मिलना था । एक साल का समय गुज़र जाने के बाद उसे विश्वास हो गया था कि ये आदमी अपनी ज़बान का पक्का है । गंगा को अपेक्षा थी कि जब वो जमना के पास आएगा तो उसकी माथे पर दुर्जन की बिंदिया ना होगी और वो अपनी बिन्दिया से उसे सजाएगा । लेकिन ऐसा न हुआ । उसका दो साल का इन्तिज़ार समाप्त हो गया । उसकी तपस्या बेकार हो गयी । उसने बड़े आदर से जमना को घोड़े पर बैठाया और मेले की तरफ चल पड़ा । रास्ते भर दोनों ने कोई बात नहीं की ।

मेले में पहुंचने पर गंगा ने कहा, "जमना...अब तुम स्वतंत्र हो ।"

जमना शुक्रिया अदा करना चाहती थी लेकिन उसकी ज़बान गुंग हो गयी । ये इन्सान नहीं फ़रिश्ता था । थोड़ी देर मेले में घूमने के बाद जमना ने दुर्जन को देखा । वो गहनों की दुकान से बिन्दिया ख़रीदकर बाहर आ रहा था । सामने जमना को देखकर चौंक पड़ा । जमना दुर्जन से लिपट गयी और देर तक रोती रही । ये खुशी के आंसू थे । दुर्जन को ऐसा लगा जैसे वो चोरी करते हुए रंगे हाथों पकड़ा गया है।

दुर्जन और जमना मेले से दूर जा बैठे। जमना ने पूछा, "दुर्जन कैसे हो ?"

दर्जना बोला, "अच्छा हूं...तुम कैसी हो ?"

"मैं भी ठीक ही हूं । मैं बहुत खुश हूं कि आज एक साल बाद दोबारा हमारी मुलाक़ात हो गयी ।"

"हां हां...मैं भी खुश हूं मगर...।"

"मगर क्या ?" जमना ने पूछा ।

"मगर ये कि मुझे कहते हुए डर लगता है ।"

"डर...? कैसा डर ? तुम्हें किस से डर लगता है ।"

"मुझे गंगा सिंह से डर लगता है ।"

"गंगा सिंह से । लेकिन क्यों ?"

"क्या बात करती हो जमना ? क्या तुम्हें गंगा सिंह से डर नहीं लगता ।"

"नहीं, मुझे नहीं लगता उससे डर ।" जमना बोली ।

"हां हां...तुम्हें क्यों उससे डर लगेगा ? तुम तो एक साल उसके साथ रहकर आई हो ?"

"नहीं दुर्जन...ऐसी बात नहीं है । बात दरअस्ल यह है कि गंगा अगर ऐसा बुरा आदमी होता तो आज मुझे यहां छोड़कर क्यों जाता ?"

"देखो जमना, उसकी वकालत ना करो । अगर वो अच्छा आदमी होता तो तुम्हें उठाकर ही क्यों ले जाता ?"

जमना ने कहा, "तुम्हारी बात सही है । उसने मुझे ले जाकर ग़लती की थी । लेकिन अब वो अपनी ग़लती का प्रायश्चित कर चुका है । उसने मुझे वापस लाकर छोड़ दिया है ।" "आज छोड़ दिया है कल फिर उठा कर ले जाएगा। उसका क्या विश्वास ?"

"मुझे उसका विश्वास है ।" जमना ने कहा । "उसने अपना वचन पूरा किया है ।"

"छोड़ो जमना, उसने कोई वचन पूरा नहीं किया । एक साल रखने के बाद उसका दिल भर गया तो छोड़ गया । कल फिर दिल आएगा तो फिर ले जाएगा । मुझे तो डर लगता है ।"

"देखो दुर्जन तुम बिना कारण डर रहे हो । अगर उसे मुझे आघात पहुंचाना होता तो साल भर में वो ऐसा कर सकता था लेकिन उसने ऐसा नहीं किया । उसने मुझे छुआ तक नहीं और अब लाकर तुम्हारे पास छोड़ दिया ।"

"ठीक है, तुम्हें नुक्सान नहीं पहुंचाएगा...लेकिन मुझे तो पहुंचाएगा । मेरा कांटा निकालने के लिए उसकी एक गोली काफी है ।" "नहीं दुर्जन, वो ऐसा नहीं करेगा, इसलिए कि वो जानता है कि ऐसा करने से मैं दुखी हो जाऊंगी और वो मुझे कभी नाराज़ नहीं कर सकता ।"

"तुम्हें तो उस पर कुछ ज़्यादा ही विश्वास है ।"

"हां है ।"

"मुझसे भी ज़्यादा...?

''कैसी बातें करते हो दुर्जन ! तुमसे ज़्यादा तो मुझे अपने आप पर भी विश्वास नहीं है ।'' दूसरे दिन शाम को दुर्जन और जमना के बीच वही बातचीत छिड़ गयी । दुर्जन ने कहा, ''जमना, अगर मै तुम्हें साथ लेकर गांव जाऊंगा तो क़बीले वाले क्या कहेंगे ?''

जमना ने पूछा, ''वो क्या कहेंगे ?''

''वो कह रहे थे तुम अब जमना को भूल जाओ । अब वो कभी वापस नहीं आ सकती ।''

''उनकी बात तो ग़लत निकली । मैं वापस आ गयी ।''

''हां तुम वापस आ गयीं, लेकिन वो कहेंगे...वो कहेंगे कि तुम पराये मर्द के पास रहकर आयी हो । तुम पवित्र नहीं हो ।''

''लेकिन मैं कहती हूं कि मैं पवित्र हूं । उसने मुझे हाथ तक नहीं लगाया ।''

''तुम तो कहती हो...लेकिन तुम्हारे कहने से वो कैसे मान जाएंगे ।''

''तो फिर किसके कहने से मानेंगे, गंगा सिंह के कहने से ?''

''नहीं डाकू की बात तो मानेंगे ही नहीं ।''

''परन्तु तुम तो ये बात कह सकते हो कि मैं पवित्र हूं।''

ऐसी बात मैं कैसे कह सकता हूं ?'' दुर्जन बोला ।

जमना ने कहा, ''क्या तुम्हें भी विश्वास नहीं है ? यह सही है कि तुम यह बात नहीं जानते । ये बात तो सिर्फ़ मैं और गंगा ही जानते हैं । लेकिन इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है?''

''पड़ता है...बहुत फ़र्क़ पड़ता है ।''

''लेकन गंगा सिंह तो मुझे उठाकर ले गया, ये जानने के बावजूद कि मैं एक साल तुम्हारे पास थी और इसके बावजूद वो मुझ से विवाह करना चाहता था । और तुम यह जानने के बावजूद मैं एक साल तुमसे दूर रही लेकिन किसी ने मुझे छुआ तक नहीं, दुनिया से डर रहे हो ।''

''देखो जमना...तुम मेरी धर्म पत्नी थीं और मेरे पास रहीं, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है । लेकिन तुम मेरी बीवी होते हुए उसके पास रहीं, ये आपत्तिजनक बात है ।''

''लेकिन मैं अपनी मर्ज़ी से तो उसके पास नहीं गयी थी, और उसने मुझे आदर सम्मान और आराम के साथ रखा जैसे मैं अपने मायके में रहती थी, और वापस लाकर तुम्हारे पास छोड़ दिया ।''

''ये बात सही हो सकती है लेकिन लोग इसे कैसे सही मान लेंगे ?''

''मुझे लोगों से मतलब नहीं है । मुझे तुम बताओ तुम मानते हो या नहीं...?

दुर्जन कुछ न कह सका । काफ़ी देर शांत बैठा रहा । जमना ने चीख़ कर पूछा...। ''दुर्जन...मुझे बताओ तुम्हें मेरी बात पर विश्वास है या नहीं...?''

Jamaat-e-Islami Social Service Society (Regd), Gaya

The Society is in service in the field of education, health and Islamic understanding for the last 34 years. Our resources are limited, our task is tremendous. We seek your co-operation in the following activities:-

1. **IQRA PUBLIC SCHOOL :** Besides 800 paying students, about 150 poor or orphan girls & boys are provided free education upto Matriculation with Islamic Carriculam.
2. **MILLAT HOSPITAL :** Every year about 15000 poor & needy patients are provided with free medical treatment & medicine besides other services.
3. **INTEREST-FREE SOCIETY :** Provides short-term loan without interest to needy people.
4. **ISLAMIC INFORMATION CENTRE :** Established at Bodh-Gaya, where lakhs of foreigners visit every year during Nov - March. The Centre provides reading materials on Islam, distributes Islamic literature and invites interested visitors for discussion besides inter-faith dialogue on regular basis.

Kindly send your cheque/draft in favour of the society

(Q. Hoda)
Chairman

(Prof. M. B. Zaman)
Secretary

JISSS, Millat Campus, Leitch Road, Gaya-823001

दुर्जन ख़ामोश रहा तो जमना बोली, ''वैसे तो ख़ामोशी का मतलब हां होता है, लेकिन शायद तुम्हारी ख़ामोशी न की ख़ामोशी है । तुम्हारे अन्दर न कहने का साहस नहीं है । तुम नामर्द हो ।''

ये कहकर उसने दुर्जन की बिंदिया माथे से उतारकर फेंक दी । दुर्जन घबरा गया । उसने अपने आपको संभाला और ज़मीन पर पड़ी हुई बिंदिया उठा ली । दुर्जन बोला, ''जमना जब तुमने मेरी बिंदिया फेंक दी तो अब मुझे तुम्हारे साथ रहने का अधिकार नहीं । मैं जाता हूं ।''

जमना ने कहा, ''दुर्जन कम से कम जाते-जाते तो सच बोलो । ये न बोलो कि तुम्हें मेरे साथ रहने का अधिकार नहीं, बल्कि यह बोलो कि मुझे तुम्हारे साथ रहने का अधिकार नहीं है । काश इस बात का पता मुझे दो दिन पहले चल जाता ।''

मेले के दूसरे दिन दुर्जन के पास दो बिंदिया थीं और उसे एक दुल्हन की तलाश थी जो जल्दी ही पूरी हो गयी। दुर्जन अपनी नयी-नवेली दुल्हन को उठाकर ले गया लेकिन जमना के लिए सब रास्ते बंद हो चुके थे । गंगा का दरवाज़ा उसने खुद बंद कर दिया था और दुर्जन के दरवाज़े पर आयी तो दुर्जन ने भी अपना दरवाज़ा बंद कर लिया । मेला उठने लगा था । लोग अपना सामान बांध रहे थे । शाम के साये लंबे होते जा रहे थे । क़ाफ़िले अपनी-अपनी मंज़िलों की तरफ़ चल दिये लेकिन जमना की कोई मंज़िल नहीं थी । वो अकेली बैठी न जाने किसकी राह देख रही थी कि अचानक दूर घोड़े की टाप सुनायी दी । इस आहट को वह पहचानती थी । गंगा ने जमना का साफ़ माथा देखा तो खुश हो गया । वो जल्दी-जल्दी अपने बटवे में बिंदिया तलाश करने लगा । जल्दी में उसने सारे कारतूस ज़मीन पर फेंक दिये । उसके साथ बिंदिया भी रेत में जा गिरी । लपककर उसने बिंदिया को उठाया । जमना के क़रीब आया और बिंदिया जमना के माथे पर चिपका दी । उसे घोड़े पर बिठाया और ऐड़ लगा दी । लेकिन इस बार लगाम जमना के हाथ में थी । बहुत दूर चलने के बाद वो एक चौराहे पर पहुंच गये जहां से एक रास्ता पहाड़ों और घाटियों की तरफ़ जाता था और दूसरा रास्ता मैदानों और खलिहानों की ओर जाता था । जमना ने घोड़ा मैदानों की तरफ़ मोड़ दिया । गंगा मदहोश था, उसे कुछ पता नहीं था कि कहां जा रहा है । बहुत दूर जाने के बाद एक धर्मशाला दिखायी दिया । जमना ने घोड़े की लगाम खींच ली ।

धर्मशाला के प्रबंधक ने पूछा, ''नाम क्या है ?''

जमना बोली, ''गंगा प्रसाद और जमना देवी ।''

बूढ़ा चौकीदार हंसा और बोला, ''बहुत ख़ूब, गंगा और जमना की जोड़ी...लेकिन सरस्वती कहां है ?''

गंगा बोला, ''बाबा अभी आयी नहीं है...जब आ जाएगी तो तुम्हारे पास आशीर्वाद लेने अवश्य आएंगे ।

बोझ

तरक़्क़ी की हज़ारों मंज़िलें हम पार कर आये
हमारा रुख़ सितारों से भी आगे की तरफ़ है
नयी सुबहें, नयी शामें
उरूजे आदमे ख़ाकी के नग़में गाते आती हैं
नयी दुनियाओं का मज़दा सुनाती हैं
यह सब कुछ है मगर अब भी ज़मीं पर बोझ है बेटी !
अभी भी हर तरफ़ फ़िक्रे मुसलसल है
मशीनों, अस्पतालों, डॉक्टरों
इन सब ही के बेरहम जज्बों के तआवुन से
उसे पैदा न होने दें !
किसी सूरत अगर वह इस जहां में आ भी जाए तो
घरों में एक सफ़े मातम-सी बिछती है
बउजलत फिर किसी तारीक लम्हे में
छिपाकर फेंकने की, गाड़ने की, पानियों की नज्र करने की
अदा सदियों से जारी रस्म होती है !
वह नन्हीं जां !
तड़पती, चीख़ती, रोती हुई थक हार कर दम तोड़ देती है
इधर ये संगदिल, ये जुल्म के ख़ूगर ख़ामोशी से
घरों को लौट आते हैं
मता-ए-जां गंवाते हैं
खुशी के गीत गाते हैं
मगर ये भूल जाते हैं
वक़ारे आदमियत होता है मातम कुनां उन पर !
कि एक फिटकार बरसाता है पैहम आसमां उन पर !

इन्तिज़ार नईम
2525, बारादरी, बल्लीमारान, दिल्ली-110006

जीवन-दर्शन

❖ डॉ॰ सुरेन्द्र अज्ञात्

जीवन को सुचारू ढंग से चलाने के लिए और अच्छे मार्ग पर चलते हुए जीवन-यापन करने के लिए समय-समय पर अनेक लोग मार्गदर्शन करते रहे हैं । वाल्मीकि जी को 'आदि' कवि और उनके महाकाव्य 'रामायण' को 'आदिकाव्य' कहा जाता है । उसमें भी रामायण की कथा के अतिरिक्त ऐसी बातें यत्रतत्र अंकित की गयी मिलती हैं, जो कथा-निरपेक्ष हैं और सामान्य मानव के लिए उपयोगी है । यहां संक्षेप में उन्हीं पर चर्चा करेंगे ।

ग़लती : दुनिया में ग़लती सब करते हैं । ऐसा कोई नहीं है जिसने कभी कोई ग़लती न की हो–

न कश्चिन्नापराध्यति । (वा॰रा॰ 4-36-11)

आदमी की बुद्धिमत्ता इसमें है कि वह ग़लती को सुधार ले और खुले मन से अपनी ग़लती मान ले । साथ ही उस ग़लती को दोबारा न होने दे ।

कर्तव्य : वाल्मीकि कहते हैं कि आदमी को ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए जिससे न तो धर्म का पालन होता हो, न यश मिलता हो और न सम्मान । ऐसा काम करने से तो सिर्फ़ आदमी अपना शरीर ही थकाता है । ऐसा कर्म करने का क्या फ़ायदा–

यत्कृत्वा न भवेद् धर्मो न कीर्तिर्न यशो ध्रुवम्,
शरीरस्य भवेत् खेदः कस्तत् कर्म समाचरेत् ।

(वा॰रा॰ 3-50-19)

यथासामर्थ्य : आदमी को, वाल्मीकि कहते हैं, हर काम अपने सामर्थ्य के अनुसार ही करना चाहिए । अपनी चादर देखकर ही पैर पसारने चाहिए । उसे वही व उतना ही बोझ उठाना चाहिए, जिसे व जितना शरीर सह सके । इसी तरह उतना ही और वही भोजन (अन्न) खाना चाहिए जिसे शरीर पचा सके–

स भारः सौम्य भर्तव्यो यो नरं नावसादयेत्,
तदन्नमपि भोक्तव्यं जीर्यते यदनामयम् ।

(वा॰रा॰ 3-50-18)

उत्साह : जीवन में उत्साह का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है । हर चीज़ उत्साह से ही संभव है । यदि उत्साह नहीं तो न आप धर्म कर सकते हैं, न कोई सत्कर्म । अतः वाल्मीकि कहते हैं कि जिसके पास उत्साह है, जो उत्साही है, उसके लिए दुनिया में कुछ भी दुर्लभ नहीं है–

सोत्साहस्य हि लोकेषु न किंचिदपि दुर्लभम् ।

(वा॰रा॰ 4-1-121)

उत्साह के महत्व को स्पष्ट करते हुए महाकवि आगे लिखते हैं कि जो उत्साही है, वही बलवान है । उत्साह से बड़ा कोई बल नहीं है । जिनमें उत्साह होता है, वे लोग कर्म करते हुए कभी दुखी नहीं होते–

उत्साहो बलवानार्य नास्त्युत्साहात् परं बलम्,
उत्साहवन्तः पुरुषाः नावसीदन्ति कर्मसु ।

(वा॰रा॰ 4-1-122)

सफलता का मंत्र : वाल्मीकि कहते हैं कि हर काम में सफलता का एक ही मंत्र है–काम को दक्षतापूर्ण करने की योग्यता हो, चुनौतियों के सम्मुख भी हार न मानने की मानसिकता हो और आदमी किसी भी हालत में निराशा या अवसाद को अपने पास न फटकने देता हो–

अनिर्वेदं दाक्ष्यं च मनसश्चापराजयम्,
कार्यसिद्धिकराण्याहुस्तस्मादेतद् ब्रबीम्यहम् ।

(वा॰रा॰ 4-49-6)

निराश मत हो : महाकवि कहते हैं कि आदमी को विषादग्रस्त नहीं होना चाहिए, क्योंकि यह बहुत बड़ा दोष है । यह बच्चे-बूढ़े सबको उसी तरह डंक मारता है, जैसे क्रुद्ध सांप मारता है–

न विषादे मनः कार्यं विषादो दोषवत्तरः,
विषादो हंति पुरुषं बालं क्रुद्ध इवोरगः ।

(वा॰रा॰ 4-64-9)

जो आदमी कभी निराश व हताश नहीं होता, वह सब तरह से उन्नति करता है, सब समृद्धियों को प्राप्त करता है । अनिर्वेद (=उत्साह, आशावाद) सबसे बड़ा सुख है–

अनिर्वेदः श्रियो मूलमनिर्वेदः परं सुखम् ।

(वा॰रा॰ 4-64-10)

आत्महत्या को न : कवि कहता है कि घबराकर आत्महत्या कर लेना उचित नहीं । उसमें बहुत दोष हैं । जीता हुआ आदमी जीवन में एक असफलता का मुंह देखता है तो 100 सफलताओं को भी प्राप्त करता है । परंतु जो आत्मघात करके मर गया, उसके तो भविष्य में सफलता को पा सकने के सारे रास्ते ही बन्द हो जाते हैं । अत: आदमी को प्राण धारण किये रहना चाहिए । इससे जीवन में बिछुड़ों का अवश्य मिलाप होता है । यदि प्राणों को नष्ट कर लिया तो कभी प्रियतम के मिलने आने पर भी मिलाप कैसे हो सकता है–

विनाशे बहवो दोषा जीवन् प्राप्नोति भद्रकम्,
तस्मात् प्राणान् धरिष्यामि ध्रुवो जीवति संगम: ।

(वा०रा० 5-12-47)

आचार : जीवन में थोथी बातों या डींगों से कुछ सिद्ध नहीं होता । आदमी का आचार ही वास्तव में यह बताता है कि कौन उत्तम कुल में उत्पन्न हुआ है और कौन अधम कुल में, कौन वीर है और कौन व्यर्थ ही अपने को पुरुष मानता है तथा कौन पवित्र है और कौन अपवित्र है–

कुलीनमकुलीनं वा वीरं पुरुषमानिनम्,
चारित्रमेव व्याख्याति शुचिं वा यदि वाशुचिम् ।

(वा०रा० 2-109-4)

यदि आचार ठीक नहीं है, यदि आदमी निर्मयाद है तो वह ग़लत रास्ते पर बढ़ेगा ही बढ़ेगा । इससे उसका आचार पापमय होगा और वह सद्विचार से भी भ्रष्ट होगा । ऐसा व्यक्ति अच्छे लोगों के मध्य कभी सम्मान प्राप्त नहीं कर सकता–

निर्मर्यादस्तु पुरुष: पापाचारसमन्वित:,
मानं न लभते सत्सु भिन्नचारित्रदरर्शन: ।

(वा०रा० 2-109-3)

झूठा सांप समान : वाल्मीकि कहते हैं कि जो आदमी झूठा है; उससे उसी तरह डरना चाहिए जिस तरह हम विषैले सांप से डरते हैं । उसे कभी पास नहीं फटकने देना चाहिए, क्योंकि संसार में सत्य ही सबसे बड़ा धर्म है, सत्य ही धर्म की पराकाष्ठा है और वही सब का मूल है । जिस तरह बिना मूल (जड़) के कोई वृक्ष हरा-भरा नहीं रह सकता, उसी तरह बिना सत्य के कोई धर्म, सभ्यता, संस्कृति आदि खड़ी नहीं रह सकती–

उद्विजन्ते यथा सर्पान्नरादनृतवादिन:,
धर्म: सत्यपरो लोके मूलं सर्वस्य चोच्यते ।

(वा०रा० 2-109-12)

बदला चुकाना असंभव : महाकवि कहते हैं कि माता-पिता अपनी संतान के लिए सर्वदा स्नेहपूर्ण व्यवहार करते हैं, उसे यथा शक्ति उत्तम खाद्य पदार्थ देते हैं और अच्छे बिछौने पर सुलाते हैं, उबटन आदि लगाते हैं । वे सदा मीठी बातें बोलते हुए तथा पालन-पोषण करते हुए जो उपकार करते हैं, उसका बदला चुकाना संभव नहीं है–

यन्मातापितरौ वृत्तं तनये कुरुत: सदा,
न सुप्रतिकरं तत्तु मात्रा पित्रा च यत्कृतम् ।
यथाशक्तिप्रदानेन स्वापनोच्छादनेन च,
नित्यं च प्रियवादेन तथा संवर्धनेन च ।

(वा०रा० 2-111-9 व 10)

शायद बुढ़ापे में उनकी समुचित सेवा करके ही आदमी उन ऋण से उऋण होने का तुच्छ यत्न कर सकता है ।

करुणा परमो धर्म: : वाल्मीकि धर्म की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि दूसरों के प्रति दया की भावना रखना परम धर्म है । इससे बड़ा कोई धर्म नहीं होता–

आनृशंस्यं परो धर्म: । (वा०रा० 5-38-39)

सुख मिलेगा : महाकवि निराश और हताश आदमी को भी आशावाद का पाठ पढ़ाते हुए कहते हैं कि यदि आज तुम्हें सुख नहीं मिला है तो इसका अर्थ यह नहीं है कि जीवन में कभी सुख मिलेगा ही नहीं, मुझे यह प्रचलित लोकोक्ति बिल्कुल सही प्रतीत होती है कि आदमी को जीते रहना चाहिए, देर-सवेर उसे सुख अवश्य मिलेगा । जो जीता है, उसके पास सौ वर्ष बाद भी सुख आ सकता है । अत: जीवन को जीते रहो–

कल्याणी बत गाथेयं लौकिकी प्रतिभाति मा,
एति जीवन्तमानन्दो नरं वर्षशतादपि ।

(वा०रा० 5-34-6)

इस प्रकार हम देखते हैं कि महाकवि जीवन के विभिन्न पक्षों को छूते हुए इन्सान का जो मार्गदर्शन अपने युग में करते हैं, वह आज के हालात में भी उसी प्रकार वैध है जैसे उस युग में था । ऐसे अमर सन्देशों के कारण वह आगे भी प्रासंगिक बने रहेंगे, इसमें सन्देह नहीं ।

महिला सशक्तीकरण-प्रयासों के पुनरावलोकन की ज़रूरत

❖ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

हमारे देश में महिला सशक्तीकरण की जो कोशिशें चल रहीं हैं उन पर ग़ौर किये जाने की ज़रूरत महसूस होती है । इस दिशा में कई क़दम उठाये जा चुके हैं और कुछ प्रस्तावित हैं । पहले से ही हिन्दू समाज में बेटियों को पैतृक संपत्ति में बराबर हिस्सा देने वाला कानून 2005 लागू है, अब केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने पत्नी को पति की आमदनी में हिस्सा देने के सवाल पर अपनी मुहर लगाकर तलाक़ की बची-खुची संभावना को सिरे से ख़ारिज कर दिया है !

वास्तव में तलाक़ एक नापसंदीदा चीज़ है, लेकिन इसका प्रावधान कुछ अपरिहार्य परिस्थितियों में दंपत्ति के लिए बड़ा लाभकारी, उपादेय और रहमत साबित होता है । पति और पत्नी दोनों के जटिल हो चुके जीवन का भावी मार्ग खोलता है और इस प्रकार उसे दूभर होने से बचा लेता है । सभी जानते हैं कि हिन्दू समाज में तलाक़ बहुत मुश्किल है, क्योंकि इसमें तमाम तरह की क़ानूनी पेचीदगियां हैं । अक्सर देखा जाता है कि तलाक़ के केस लंबी और उबाऊ, क़ानूनी प्रक्रिया एवं स्त्री विरोधी मानसिकता के शिकार हो जाते हैं ।

हिन्दू समाज का धर्मभीरू वर्ग तलाक़ को धर्म विरोधी मानता यहां तक कि तलाक़ को मुक्ति से जोड़ कर उसके क्रियान्वयन को नामुमकिन बना देता है । उल्लेखनीय् है जब हिन्दू मैरिज एक्ट 1955 में तलाक़ का प्रावधान किया गया था तो कई हिन्दू धार्मिक संगठनों ने इसका जमकर विरोध किया था, लेकिन सरकार ने उनकी मांगें नहीं मानी थी । आज हम देखते हैं कि अदालतों में इसके हज़ारों केस पेंडिंग हैं । ऐसे केस भी हैं जो बरसों ही नहीं दशकों से पेंडिंग हैं और उनके फ़ैसले की सारी संभावनाएं क्षीण हो चुकी हैं । कुछ मामलों में पति और पत्नी दोनों बूढ़े हो चुके हैं ।

सारा मामला क़ानून के क्रियान्वयन पर टिक जाता है । जब पति की आमदनी में पत्नी का क़ानूनी हक़ नहीं होता था और अदालतें भरण-पोषण का आदेश देतीं थीं, तब क़ानून को अमल में लाने की यह सूरतेहाल थी, अब पति के आमदनी में क़ानूनी हक़ बात है । इसका मतलब यह हुआ कि तलाक़ का रास्ता अब व्यवहार-रूप नहीं ले सकेगा तो क्या यह प्रावधान अब हाथी का दांत साबित होगा ? जी हां, अब तलाक़ के प्रावधान को व्यवहार में हिन्दू धर्म-ग्रंथों के अनुकूल बना दिया गया है ? "अमोक्षो धर्म विवाहानाम" पर अमल करने के लिए महिला सशक्तीकरण कि दिशा में ताज़ा क़दम उठाया गया है । यह महिलाओं के लिए कितना कष्टकारी और संहारी साबित होगा सहज ही समझा जा सकता है ।

क़ानून कैसा भी बना दिया जाए, किन्तु जब तक समाज की मनोवृत्ति में बदलाव नहीं आएगा, सूरतेहाल में कोई तब्दीली नामुमकिन है । बेटियों को पैतृक संपत्ति में बराबर का हिस्सा देने वाला क़ानून भी ऐसा है जो अच्छा होने के बावजूद क्रियान्वयन से अमलन परे ठहरा दिया गया है । यहां भी कुछ ऐसे लोगों का स्वेच्छाचार लागू है जो किसी को भी हक़ नहीं देना चाहते । इसकी एक ज्वलंत मिसाल हरियाणा के जींद ज़िले के थोआं गांव में मिली । इस गांव में पिछले दिनों महापंचायत बुलाई गयी थी, जिसमें चार सौ से अधिक लोगों ने हिस्सा लिया ।

लम्बे विचार-विमर्श के बाद महापंचायत ने यह प्रस्ताव पारित किया कि सभी लड़कियों को शादी के बाद पैतृक संपत्ति में अपना हिस्सा छोड़ना होगा और अपनी सारी संपत्ति भाइयों को देनी होगी । अगर किसी लड़की के भाई नहीं है तो वह रिश्तेदार के किसी भाई को अपनी संपत्ति सौंप सकती है, लेकिन अगर कोई लड़की अपने पिता की संपत्ति में हिस्सा लेगी तो उसका सामाजिक बहिष्कार किया

जाएगा । यही नहीं कोई शादीशुदा लड़की अपने माता-पिता के गांव में ज़मीन ख़रीदना चाहे तो यह भी मुमकिन न होगा । कहने का मतलब यह है कि हमारे देश में क़ानून का भंजन बहुत ही वीभत्स ढंग से होता है । ज़ाहिर है यह सूरतेहाल हर सकारात्मक बदलाव में बाधक है । दुखद बात यह है कि यह सब कुछ धर्म के नाम पर हो रहा है । जहां तक इस्लाम का ताल्लुक़ है, तो इसकी शिक्षाएं महिलाओं के लिए भी बड़ी लाभकारी और उपकारी हैं । इस्लाम दुनिया का एकमात्र धर्म है, जो महिलाओं को माता-पिता की संपत्ति में भी हिस्सा देता है और तलाक़ का भी प्रावधान करता है, ताकि ज़रूरत पड़ने पर इसकी ओर रुजू किया जा सके, लेकिन वह तलाक़ के लिए इन्सानों को प्रेरित नहीं करता । इन्सानी स्वभाव के नितांत अनुकूल है यह इस्लाम धर्म ।

साहित्य समाचार

''आलराउंड कवि'' की उपाधि

अंग्रेज़ी, हिन्दी और पंजाबी साहित्य के विकास व प्रसार के लिए तत्पर एकमात्र ग़ैर-सरकारी साहित्यिक संस्था ''आलराउंड अकादमी'' की ओर से मैनपुरी के सतीश चन्द्र शर्मा सुधांशु को चन्दन गांव-छिन्दवाड़ा के देवेन्द्र कुमार मिश्रा को और जबलपुर के डॉ॰ वीरेन्द्र कुमार दुबे को ''आलराउंड कवि'' की उपाधि दी गयी है । पंजाब के ज़िला फ़रीदकोट में स्थापित आलराउंड अकादमी के अध्यक्ष श्री अमित कुमार लाडी ने इस उपाधि के लिए श्री सतीश चन्द्र शर्मा सुधांशु, श्री देवेन्द्र कुमार मिश्रा और डॉ॰ वीरेन्द्र कुमार दुबे को हार्दिक बधायी एवं शुभकामनाएं दी हैं । ग़ौर हो कि इन तीनों कवियों को यह उपाधि उनके बहुमुखी व्यक्तित्व व उनके काव्य साहित्य को ध्यान में रखते हुए दी गयी है ।

'हिन्दी दिवस' सम्पन्न

नया बिल (ऐलनपुर शिलचर) में 14 सितम्बर 2012 को दिन 11 बजे से नया बिल क्लब के युवकों ने मोहनलाल एम॰ 3 स्कूल के छात्रों द्वारा प्रस्तुत विविध शैक्षिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा हिन्दी-दिवस धूमधाम से मनाया ।

समारोह के सभापति मुख्याध्यापक राजेन्द्र शील एवं विशिष्ट अतिथि साहित्यकार शुभदा पांडेय थीं पूर्व विधायक श्री बद्री सिंह, ग्राम प्रधान अमृत कुमार, ज़िला परिषद सदस्य-शिवानी शुक्ल वैद, डॉ॰ मीरा सिंह, प्रा॰ जयद्रथ ग्वाला, प्रा॰ सीमाराय, कवि शनि भट्टाचार्जी आदि ने अपने विचारों, रचनाओं से लाभांवित किया ।

सैकड़ों की संख्या में छात्रों, अभिभावकों एवं नागरिकों सहित गोद के बच्चों ने भी कार्यक्रम का आनंद उठाया । प्रा॰ शील ने राजभाषा हिन्दी का महत्व, प्रा॰ जयद्रथ ग्वाला ने हिन्दी की व्यापकता, की चर्चा की मीरा सिंह ने युवकों को संबोधित किया । प्रा॰ रामधन कुमार ने हिन्दी की प्रासंगिकता पर विचार रखे ।

शुभदा पांडेय ने हिन्दी की सार्वभौमिकता और उसके सामाजिक मूल्यों से परिचित कराया एवं कविता का पर्यावरण गीत प्रस्तुत किया । संचालन का दायित्व बाबुल कुमार ने उत्साहपूर्वक निभाया ।

अजय सिंह, गौतम शुक्ल वैद, निरंजन चकवर्ती, प्रदीप सिंह, संदीप कुमार, सुदीप कुमार, अजय हजाम, सोना सिंह, राजेश सिंह की सक्रिय सहभागिता सराही गयी । अनुशासन, एकता व सद्भाव का अनूठा नमूना बना छात्रों द्वारा प्रस्तुत यह हिन्दी दिवस ।

बाबुल कुमार
नया बिल, शिलचर (असम)

डॉ॰ नीलम खरे को नारी गरिमा शिखर सम्मान

विगत दिवस भोपाल में निर्दलीय प्रकाशन ने अपने भव्य वार्षिक समारोह में कवयित्री/लेखिका व टी॰वी॰ न्यूज़ रीडर डॉ॰ नीलम खरे को उनकी साहित्य सेवा व समाज की, की गयी बौद्धिक सेवा के लिए ''नारी गरिमा शिखर सम्मान'' से भव्यतापूर्वक अलंकृत किया गया । सम्मान में स्मृति चिन्ह और शॉल प्रदान किये गये ।

इसके अलावा उन्हें ग्वालियर कला साहित्य परिषद ने ''विशिष्ट हिन्दी सेवी सम्मान'' तथा महात्मा फुले समाज, भोपाल द्वारा ''सावित्री बाई फुले अलंकरण'' से भी हाल ही में अलंकृत किया गया है ।

सामाजिक सद्भाव का संकट

■ वेद व्यास

राजस्थान के जनसंगठनों का संयुक्त प्रयास 'सद्भावना मंच' कहता है कि 'साम्प्रदायिकता देश व समाज के लिए ख़तरनाक है और समय-समय पर योजनाबद्ध तरीक़े से साम्प्रदायिक एवं फ़ासिस्ट शक्तियां नियोजित हिंसा करवाती हैं । हम सब लोग इस तरह की घटनाओं को रोकने और पीड़ितों को न्याय दिलाने के लिए प्रयासरत हैं ।'

राजस्थान में भी पिछले तीन सालों में अल्पसंख्यकों-ईसाइयों, मुसलमानों, दलितों एवं महिलाओं के ख़िलाफ़ हिंसा और अत्याचार की बहुत-सी घटनाएं सामने आयी हैं । उदयपुर के सराड़ा क़स्बे में मुसलमानों के लगभग 65 घर व दुकानें जलायी और लूटी गयी । जोधपुर ज़िले के बालेसर क़स्बे में मुस्लिम समुदाय की दुकानों व घरों को आग लगायी गयी व लूटा गया, ईदगाह तोड़ी गयी । सूरवाल (सवाई माधोपुर) के पुलिस अधिकारी फूल मुहम्मद को ज़िन्दा जला देने की घटना हुई । भरतपुर ज़िले के गोपालगढ़ क़स्बे में मस्जिद पर पुलिस और दंगाइयों के हमले में दस लोग मारे गये तथा तीस से ज़्यादा लोग घायल हो गये ।

इन सब घटनाओं में अल्पसंख्यक और दलितों पर हमले हुए और उनका आर्थिक नुक़्सान हुआ । लेकिन सरकार की ओर से कुछ मामूली– 'ऊंट के मुंह में जीरे की बराबर' मुआवज़े देने के अलावा कुछ भी नहीं किया गया । एक लंबी अवधि गुज़र जाने के बाद भी पीड़ितों को न्याय नहीं मिल सका । अपराधी आज भी आज़ाद घूम रहे हैं और दोषी पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों के ख़िलाफ़ कोई संतोषजनक कार्रवाई आज तक नहीं हो सकी है, जिसकी वजह से अपराधी और दोषी अधिकारियों के हौसले बढ़े हैं और एक के बाद एक घटनाएं होती रही हैं ।

दक्षिणी राजस्थान में बूंदी, श्रीगंगानगर, उदयपुर, बांसवाड़ा व डूंगरपुर आदि में ईसाइयों पर हमले व प्रताड़ना की घटनाएं हुईं । झालावाड़ ज़िले के लोहरथाना, सेमली हाट व महेश नगर में पचास घरों व खेतों में खड़ी फ़सलों व अनाज के घरेलू भंडारों में आग लगा दी गयी, लूटा गया और ट्यूबवेल तोड़े गये और प्रदेश के कई हिस्सों में दलितों पर होने वाली हिंसा व अत्याचार की घटनाएं भी हमारी जानकारी में हैं । हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था में इस प्रकार की घटनाएं दुर्भाग्यपूर्ण हैं ।

इन सब घटनाओं में अल्पसंख्यक और दलितों पर हमले हुए और उनका आर्थिक नुक़्सान हुआ । लेकिन सरकार की ओर से कुछ मामूली–'ऊंट के मुंह में जीरे की बराबर' मुआवज़े देने के अलावा कुछ भी नहीं किया गया । एक लंबी अवधि गुज़र जाने के बाद भी पीड़ितों को न्याय नहीं मिल सका । अपराधी आज भी आज़ाद घूम रहे हैं और दोषी पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों के ख़िलाफ़ कोई संतोषजनक कार्रवाई आज तक नहीं हो सकी है, जिसकी वजह से अपराधी और दोषी अधिकारियों के हौसले बढ़े हैं और एक के बाद एक घटनाएं होती रही हैं ।

ऐसी स्थिति में आम आदमी के बीच अब यह संदेश जा रहा है कि आख़िर भाजपा और कांग्रेस सरकार में फ़र्क़ क्या है ? क्यों बेक़सूर मुसलमानों, दलितों, ईसाइयों तथा महिलाओं को ही बार-बार हिंसा और लूट तथा आगज़नी का शिकार बनाया जा रहा है ? और गृह मंत्रालय राज्य मानवाधिकार आयोग, राज्य अल्पसंख्यक आयोग, राज्य महिला आयोग तथा राज्य अनुसूचित जाति-जनजाति आयोग आख़िर फिर एक मुख्यमंत्री की संवेदनशीलता, पारदर्शिता

एवं जवाबदेह राजनीति का क्यों और कैसे मज़ाक़ उड़ा रहे हैं ?

इस पूरे वातावरण पर विचार करते हुए मुझे लगता है कि कहीं कोई ऐसी भूल और साज़िश हो रही है कि पीड़ितों का पुलिस और प्रशासन से तथा विकास और 'सद्भाव पुरुष' अशोक गहलोत से सामान्य और सीधा वार्तालाप टूट गया है । यह एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है, क्योंकि जब हमारे मुख्यमंत्री गुर्जर, मीणा, जाट, यादव और माली जैसी अनेक मज़बूत जातियों को राजनीति में हिंसाविहीन कर सकते हैं तो फिर इस राजस्थान को साम्प्रदायिक राजनीति से मुक्त क्यों नहीं कर सकते । हमें ऐसा भी लगता है कि कहीं एक बार फिर से अल्पसंख्यक मुसलमान, ईसाई, दलित और महिलाओं के प्रति कांग्रेस अपनी जागरूकता को भूल गयी है और सामाजिक-आर्थिक विकास पर ज़ोर देते-देते उसने साम्प्रदायिक हिंसा का मुक़ाबला करना छोड़ दिया है ।

हमें याद रहना चाहिए कि आज़ादी के 65 साल बाद भी धर्म और जाति आधारित साम्प्रदायिकता इस देश और प्रदेश की पहली समस्या है और आज साम्प्रदायिक ताक़तें अनेक वर्षों तक सरकार में रहकर एक समानान्तर राजनैतिक व्यवस्था बन गयी हैं और दिल्ली तथा जयपुर में प्रतिपक्षी दल की भूमिका भी निभा रही है ।

कांग्रेस का यह अंदाज़ भी ग़लत है कि साम्प्रदायिक शक्तियां निष्क्रिय और विभाजित हैं, क्योंकि साम्प्रदायिकता का आधार, जहां धर्म में निहित है वहां राजनीति का केन्द्र भी आज धर्म और जाति में ही स्थापित है । यहां तक कि पूरा देश और प्रदेश ही हिन्दू-मुसलमान की मानसिकता में जीने का आदी हो गया है तथा कांग्रेस के ख़िलाफ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एन०डी०ए०) का संपूर्ण खेल ही जाति-धर्म की राजनीति से ही निरंतर चल रहा है और कांग्रेस को गुजरात, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, गोवा, पंजाब, बिहार, राजस्थान, उड़ीसा जैसे अनेक राज्यों में राजनैतिक चुनौती दे रहा है ।

साम्प्रदायिकता–क्योंकि अब केवल एक भाजपा पार्टी ही नहीं है तथा अब वह अनेक जाति-सम्प्रदायों का केन्द्रीय गठबंधन है, इसलिए कांग्रेस को राजस्थान में भी अल्पसंख्यक एवं दलित उत्पीड़न को अब गंभीरता से लेना चाहिए ।

'साम्प्रदायिकता मुक्त राजस्थान' बनाने की दिशा में हमारी राज्य सरकार के पास आज कौन-सा अभियान और मिशन है, इसे हम नहीं जानते, लेकिन एक आम अल्पसंख्यक और दलित में आज यह भावना ज़रूर घर कर गयी है कि कांग्रेस के राजनीतिक एजेंडे में शायद अल्पसंख्यक और दलितों की सुरक्षा का और महिलाओं के सम्मान का कोई स्थान नहीं है, ऐसा लगता है कि आम आदमी का अब पुलिस और प्रशासन से भरोसा उठ गया है ।

पिछले तीन साल की उपलब्धियों को देखकर हमें कभी-कभी यह भी लगता है कि जैसे कोई राजा भर्तृहरि एक श्रृंगार शतक और नीति शतक लिखने के बाद अपना एक वैराग्य शतक लिख रहा है और पीड़ितों के लिए अब उसके पास मुफ़्त दवा वितरण योजना, जननी सुरक्षा योजना, सुनवाई का अधिकार, दो रुपये किलो के गेहूं और बी०पी०एल० आवास योजना के अलावा शायद देने के लिए कुछ भी नहीं बचा है ।

ऐसे में हमें फिर से यह बात बताना भी ज़रूरी लगता है कि चहुंमुखी विकास की सौग़ात के बाद भी एक आदमी के लिए उसके पीड़ित जीवन में न्याय और समानता का संदेश और प्रशासन ही बेहद ज़रूरी है । फिर राजस्थान में जहां विकास की बाढ़ आ रही है, वहां न्याय का सूखा पड़ रहा है और पुलिस तथा अदालत के चक्रव्यूह में हर तीसरे पीड़ित आम आदमी का जीवन बीत रहा है । समाज और शासन के बीच एक आश्चर्यजनक संवादहीनता है और चारों तरफ़ महंगाई, बेरोज़गारी, अपराध और भ्रष्टाचार की कहानियों का घर-घर पूजा-पाठ चल रहा है ।

ऐसे में इन जटिल स्थितियों को सद्भाव और न्याय की दिशा में ले जाने का कोई सामूहिक प्रयास आज आवश्यक है, क्योंकि यह समय आम चुनाव और सामाजिक-आर्थिक न्याय के संघर्ष का है । राजस्थान में जाति-सम्प्रदाय की राजनीति पहले से अधिक हिंसक है और मुसलमान, दलित, ईसाई तथा महिलाएं आज भी उसके आसान निशाने पर हैं ।

दुर्भाग्य तो यह है कि हज़ारों साल पुराने राजस्थान में सांस्कृतिक सद्भाव और सामाजिक सुधार के लिए आज कोई अभियान नहीं है तथा पूरा प्रदेश ही जाति, साम्प्रदायिक हिंसा और न्याय की धर्मशाला बन गया है । अतः थका-हारा आम आदमी रात-दिन तक ही 'भजन' गा रहा है कि यहां सब कुछ है, लेकिन न्याय नहीं है ।

गठिया का उपचार

गठिया के कारण घुटने के पूर्णरूपेण क्षतिग्रस्त हो जाने की स्थिति में जोड़ प्रत्यारोपण यानी नी रिप्लेसमेंट सफल उपचार है । फिर भी इस संदर्भ में यह जान लेना आवश्यक तथा लाभदायक है कि घुटने की गठिया उम्र के साथ बढ़ने वाली समस्या है जिसमें जोड़ की सतह का कार्टिलेज धीरे-धीरे घिसता जाता है तथा हड्डी की सतह में भी घिसाव आने लगता है । परिणामस्वरूप पीड़ित व्यक्ति का पैर घुटने से टेढ़ा हो जाता है और उसका चलना-फिरना, नीचे बैठकर उठना, सीढ़ी पर चढ़ना-उतरना और लगातार खड़े रहना दिक़्क़ततलब और तकलीफ़देह हो जाता है । यदि शरीर में घुटने की गठिया के लक्षण की शुरुआत होते ही चिकित्सक के परामर्श के अनुसार समुचित उपचार आरंभ कर दिया जाए तो काफ़ी हद तक घुटनों को क्षतिग्रस्त होने से बचाया तथा मर्ज़ को बढ़ने से रोका जा सकता है ।

अधिकांश व्यक्तियों में रोग की प्रारंभिक अवस्था में घुटने के भीतरी भाग में कभी-कभी दर्द होता है तथा उन्हें सीढ़ी पर चढ़ने-उतरने में दिक़्क़त महसूस होने लगती है । तभी उसे समझ लेना चाहिए कि आस्टियो आर्थराइटिस यानी उम्र के साथ होने वाली घुटने की गठिया की शुरुआत हो चुकी है । दरअस्ल इस समय घुटने में साइनोविचल फ्लुइड नामक तरल पदार्थ का बनना कम होने लगता है तथा उसकी चिपक भी कम होने लगती है । इतना ही नहीं, अस्थि संधि यानी जोड़ की सतह बनाने वाले कार्टिलेज के पुनर्नवीनीकरण की प्रक्रिया भी शनैःशनैः न्यून होने लगती है । फलस्वरूप कार्टिलेज घिसकर खुरदुरे होने लगते हैं और इस तरह से घुटनों में गठिया की शुरुआत होने लगती है ।

यदि प्रारंभिक अवस्था में रोग का सही उपचार नहीं कराया गया तो घुटने के जोड़ की सतह और क्षतिग्रस्त होने लगती है तथा शीघ्र ही पीड़ित व्यक्ति घुटने की गठिया की द्वितीय अवस्था में पहुंच जाता है । यदि द्वितीय अवस्था में भी रोग का सही ढंग से उपचार करा लिया जाए तो काफ़ी हद तक बड़े ऑपरेशन से बचा जा सकता है । इस अवस्था में रोगी की स्थिति के अनुसार कांड्रोप्लास्टी, आस्टियो कांड्रल ग्राफ्टिंग, कार्टिलेज ग्राफ्टिंग तथा आटोलोगस स्टेम सेल प्रत्यारोपण जैसे अनेक उपचारात्मक तकनीकों का प्रयोग किया जाता है ।

अगर द्वितीय अवस्था में भी गठिया का समुचित उपचार नहीं कराया गया तो यह जान लीजिए कि आने वाला समय रोगी के लिए और भी कष्टकारी हो सकता है । इस स्थिति में एच०टी०ओ० या आंशिक घुटना प्रत्यारोपण का सहारा लेना पड़ता है । इस क्रम में यह जान लेना आवश्यक है कि उपर्युक्त चिकित्सकीय विधियां कुछ वर्षों के लिए ही कारगर और मुफ़ीद है । तत्पश्चात पूर्ण घुटना प्रत्यारोपण की आवश्यकता पड़ती है । चकित्सा विज्ञान में यह ऑपरेशन क्षतिग्रस्त घुटनों के लिए लगभग 100 प्रतिशत सुरक्षित तथा कारगर माना गया है । यह प्रत्यारोपण लगभग 30 से 40 वर्षों तक कारगर रहने वाला एकमात्र उपचार है । यह ऑपरेशन शरीर में किसी मांसपेशी तथा लिंगामेंट को काटे बग़ैर संभव है । प्रत्यारोपण की इस प्रक्रिया में दर्द नहीं होता और न रक्त बहता है समय रहते ऑपरेशन न कराने पर घुटने की हड्डियां और लिंगामेंट अधिक क्षतिग्रस्त हो जाते हैं तथा रोगी का एकदम से चल फिर सकना रुक जाता है । इस परिस्थिति में यदि ऑपरेशन किसी प्रकार करा लिया गया तो भी वांछित परिणाम नहीं निकलता और न रोगी कभी स्वस्थ हो सकता है ।

● डॉ० अनुराग श्रीवास्तव

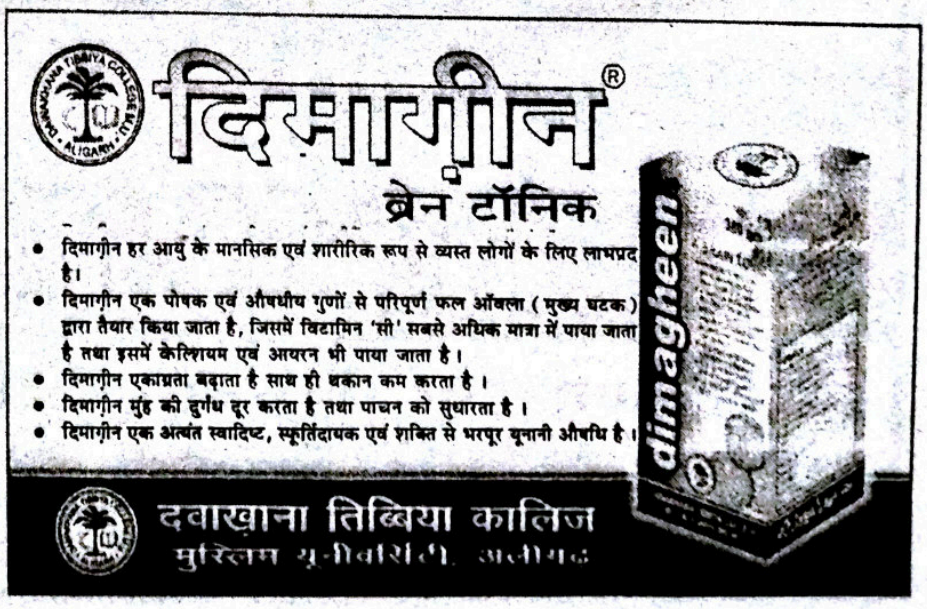

آپ اخبار کس لیے پڑھتے ہیں

کیا ☆ محض تفریح طبع کے لیے یا صرف وقت گزاری کے لیے؟

یا پھر ☆ مخالفوں کو صرف برا بھلا کہہ کر تھوڑی دیر کو خوش ہونے کے لیے؟

اگر ایسا ھے تو اس کا مطلب یہ ہے کہ آپ ملک کے حالات اور ملت کے مسائل کے سلسلے میں سنجیدہ نہیں ہیں

اخبار پڑھنے کا مقصد ھونا چاھئے

☆ حالات وواقعات سے ان کے صحیح تناظر میں باخبر رہنا۔

☆ مخالفتوں کا جواب معقول اور مدلل طریقے سے دینا۔

☆ مسائل پر جذباتی انداز کے بجائے سنجیدگی سے غور کرنا۔

☆ انفارمیشن اور پروپیگنڈے کے فرق کو سمجھنا۔

☆ اسلام اور مسلمانوں کی مخالفت کرنے والوں کی نفسیات کا ادراک کرنا۔

اگر آپ کو ھماری اس بات سے اتفاق ھے تو یقین مانئے

دعوت ہی آپ کا اخبار ہے

دعوت www.dawatonline.com

جو

☆ ملک کے استحکام، سلامتی، ترقی اور خوش حالی کے لیے ٹھوس تجاویز پیش کرتا ہے۔

☆ ملکی اور بین الاقوامی حالات پر بے لاگ رائے کا اظہار کرتا ہے۔

☆ اسلام اور امت مسلمہ کے خلاف کیے جانے والے پروپیگنڈے کا توڑ کرتا ہے۔

☆ برادرانِ وطن کے سامنے اسلام اور مسلمانوں کی صحیح تصویر رکھتا ہے۔

دعوت خود پڑھئے اوروں کو پڑھوایئے۔

دعوت www.dawatonline.com

زرتعاون: سالانہ -/600 روپے، ششماہی -/300 روپے، فی کاپی -/5 روپے

بیرون ملک سالانہ -/10,000 روپے، ششماہی -/5,000 روپے

اپنے قریبی ہاکر سے طلب کیجیے یا ہمیں لکھئے، نمونہ کی کاپی مفت بھیجی جاتی ہے۔

سہ روزہ دعوت میں اشتہار دے کر اپنی تجارت کو فروغ دیجئے

Manager Dawat (Urdu Sehroza)

D-314, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-11 0025

Phone : 09818799113, (011) 26949539, Fax : (011) 26958816

E-mail : dawattrust@yahoo.co.in, dawatnews@indiatimes.com

चीन में मुसलमान

● संकलित

चीन में इस्लाम का इतिहास कोई 1300 साल पुराना है । प्राचीन ग्रंथों के अनुसार, चीन में इस्लाम का आरंभ वर्ष 651 ई॰ में हुआ । ईसा पूर्व वर्ष 97 में ही चीन और अरब देशों के बीच आवाजाही शुरू हो गयी थी । उस वक़्त एक चीनी नागरिक कान ईंग ने सरकारी दूत की हैसियत से फ़ारस जैसे देशों की यात्रा की । इसके पश्चात बड़ी संख्या में चीनी व अरबी समुद्री जहाज़ और व्यापारी एक-दूसरे के यहां गये । चीन के थांग राजवंश में दोनों की आवाजाही में उभार आया । तब बड़ी संख्या में अरबी व्यापारी फ़ारस की खाड़ी में गये भारत और मलाया प्रायद्वीप के ज़रिये दक्षिणी चीन के क्वांगचओ और छवेनचओ जैसे समुद्रतटीय शहर पहुंचे ।

इसके बाद और बड़ी संख्या में अरबी व्यापारी फ़ारस और मध्य एशिया से चीन आये । उन्होंने जो रास्ता तय किया था, वहां आज मशहूर रेशम मार्ग कहलाता है । आज यह मार्ग चीन की अरब देशों व ईरान के साथ दोस्ती का प्रतीक माना जाता है ।

वर्ष 757 यानी चीन के थांग राजवंश में, सैनिक विद्रोह को शांत करने के लिए थांग राजवंश के सम्राट ने अरब से सैनिक सहायता की मांग की थी । यहां व्यवस्था बनाने के बाद अरबी सैनिक चीन में ही बस गये, वे चीन के मुसलमानों का एक हिस्सा माने जाते हैं ।

चीन के थांग और सुंग राजवंश में बड़ी संख्या में अरबी व्यापारी चीन जाने लगे थे । वे सब इत्र, जड़ी-बूटी और आभूषण के व्यवसाय करते थे । चीन जाने वाले अरबी



व्यापारियों की संख्या में बड़ी वृद्धि को देखते हुए अरबी पदाधिकारी ने अपना दूत भी चीन भेजा । 25 अगस्त, 651 को, अरब के तीसरे ख़लीफ़ा उस्मान बीन अफ़्फ़ान ने ऐसा प्रथम औपचारिक मिशन चीन भेजा था । मिशन ने थांग राजवंश के सम्राट से मुलाक़ात के दौरान अपने देश के धर्म और रीति-रिवाज से चीनी सम्राट को अवगत कराया । चीन के प्राचीन ग्रंथों में अरबी मिशन के चीन जाने को इस्लाम के चीन में प्रवेश का प्रतीक माना जाता है ।

सुंग राजवंश के अंत में चंगेज़ ने पश्चिम पर क़ब्जा करने का सैनिक अभियान आरंभ किया । इन अभियान के दौरान बड़ी संख्या में मक़बूज़ा जातियों के मुसलमानों का चीन में स्थानांतरण हुआ । इन जातियों में खोरजम जाति की जनसंख्या सबसे ज़्यादा थी । इन जातियों के लोग बाद में चीन में ह्वेई जाति के पूर्वज बने । वर्ष 1271 में मंगोल जाति ने दक्षिण सुंग राजवंश की सत्ता का तख़्ता उलटकर य्वान राजवंश की सत्ता स्थापित की। य्वान राजवंश काल में चीन भर में ह्वेई जाति के लोग बसने लगे थे और ह्वेई व उइगुर जैसी दसेक जातियों के लोग मुस्लिम बन चुके थे ।

चीन के सिंच्यांग उइगुर स्वायत प्रदेश के पश्चिमी भाग में 10 वीं सदी से ही बड़ी संख्या में तुर्क लोग इस्लामी धर्म के अनुयायी बन गये थे ।

वर्ष 1990 के आंकड़ों के अनुसार, चीन में ह्वेई, उइगुर, कज़ाख, तुंगश्यांग, करकज, साला, ताजीक, उजबेक, पाउआन और तातार जैसे दस जातियों के लोग इस्लाम में विश्वास रखते हैं । इनकी कुल संख्या 1 करोड़ 70 लाख है । जिनमें से ह्वेई जाति लोग 86 लाख, उइगूर लोग 21 लाख और कज़ाख लोग 11 लाख 10 हज़ार हैं ।

चीन में अधिकांश मुस्लिम सिंच्यांग उइगूर स्वायत प्रदेश में रहते हैं, शेष निंगश्या ह्वेई जाति स्वायत प्रदेश, भीतरी मंगोलिया स्वायत प्रदेश, कानसू, हनान, छिंगहै, युननान, हपेई, शानतुंग, आनह्वेई, प्रांतों और राजधानी पेइचिंग में रहते हैं । इसके अतिरिक्त अन्य प्रांतों, स्वायत प्रदेशों, केन्द्र शासित शहरों, हांगकांग, ताइवान और मकाओ में भी मुस्लिमों की आबादी है ।

सातवीं सदी के अंत में ह्वेई लोगों ने इस्लाम पर विश्वास रखना शुरू किया । पहले कज़ाख लोग जोरोआस्तर, क्रीस्त धर्म और बौद्ध मत पर विश्वास रखते थे । आठवीं सदी में उन्होंने इस्लाम पर विश्वास रखना शुरू किया ।

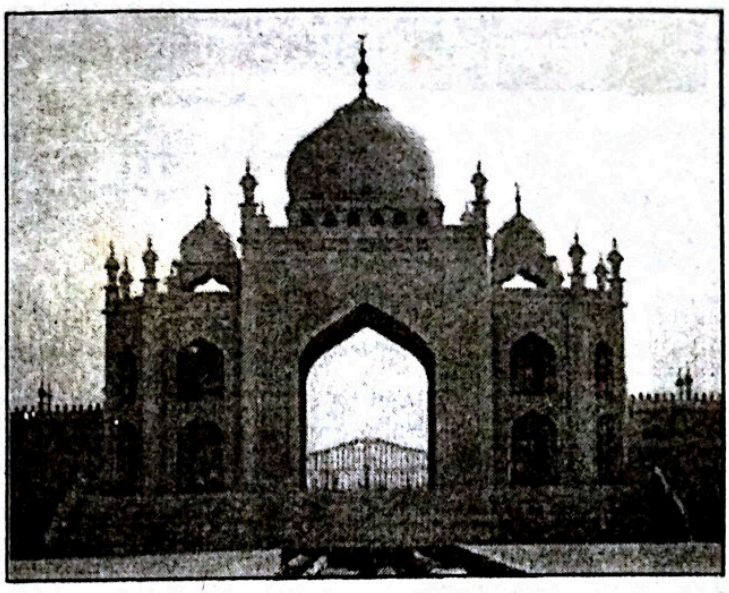

दसवीं सदी के मध्य में उइगुर लोगों ने पहले सामान धर्म और फिर मनी धर्म से निकल कर इस्लाम पर विश्वास रखना शुरू किया । 13 वीं सदी में मध्य एशिया से पश्चिमी चीन के लोग कानसू प्रांत में बड़ी तादाद में जा बसे, उन्होंने मंगोल, ह्वेई और हान लोगों के साथ विवाह रचाना शुरू किया ।

तुंगश्यांग लोग इन्हीं की संतान है । साला लोगों के पूर्वज मध्य एशिया के समरकंद से पश्चिमी चीन के छिंगहै प्रांत में जा बसे थे । उन्होंने हान और तिब्बती लोगों के साथ विवाह किया । 15वीं सदी में साला लोगों ने इस्लाम पर विश्वास शुरू किया । उनका चीन की हर जाति के साथ विवाह होता है, मुस्लिमों के बीच भी विवाह किया जाता है । हालांकि इस प्रकार के विवाह इतने ज़्यादा नहीं होते हैं ।

चीन में मस्जिदों की कुल संख्या 30 हज़ार से अधिक है । चीन के भीतरी और पश्चिमी भाग में मस्जिदों के निर्माण की शैली में फ़र्क़ भी काफ़ी ज़्यादा है । पश्चिम के मस्जिदों में अरबी शैली नज़र आती है, तो भीतरी चीन की मस्जिदें चीन की परम्परागत शैली की हैं । इमाम व आखुनों की संख्या भी कोई 40 हज़ार के ऊपर है ।

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित ।
फोन: 011-26949430
संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।

ADMISSIONS OPEN

SHIFAA SCHOOL OF NURSING

No. 332, Darus-Salam Building, Queen's Road, Bangalore-560032
Recognised by KNC/INC

GNM Course

(Diploma in General Nursing & Midwifery)

- *3½ years course*
- *Only for Girls*
- *Age Limit–18 to 35 years*
- *Reasonable Fees*
- *Minimum Qualification–II PUC (+2)*
- *(Science/Arsts/Commerce)*
- *Patent Hospital–200 Bedded*
- *Spiritual & Safe environment*
- *Near Cantonement Railway Station*

Scholarship for Merritorious Students

For Applications & other Details :

Contact : Co-ordinator, Ms. Zubaida
Mob. No. : 9535059804

Posted on 20-21 November 2012
December 2012
E-mail: kantimonthly@hotmail.com
Publishing Date: 18.11.2012

हिन्दी साहित्यों की त्रैमासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2012-2014
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMEN
License No. U (SE)-73/2012-1

Anjuman College for Women, Bhatkal

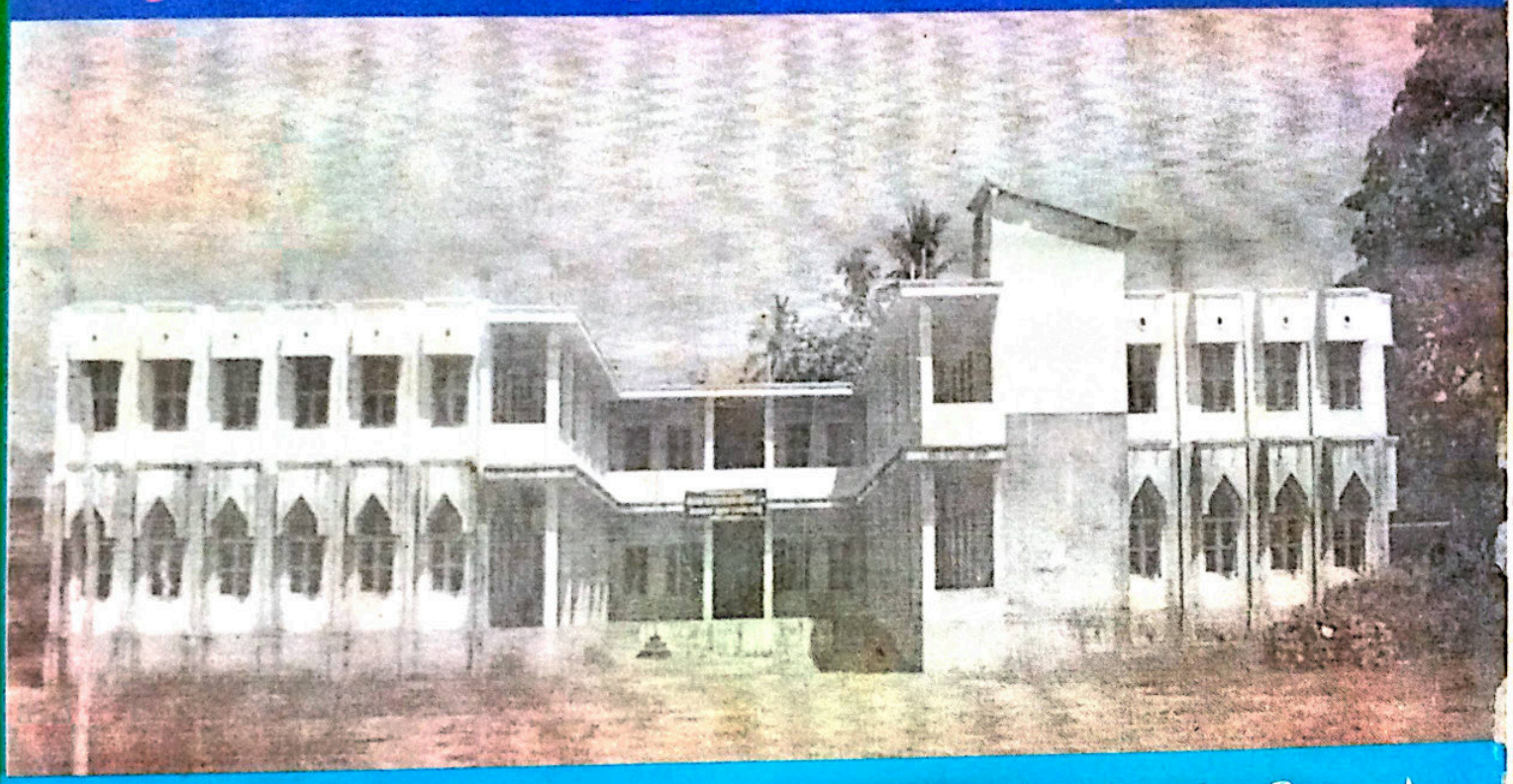

Marrellous Result of B. Sc (6th Sem) May/June 2012 Examination

Total No. of students appeared : 36
Total No. of students passed : 36
Distinction : 35
(Above 70% –17 students & Above 80%–18 students)
1st Class : 01
Pass Percentage : 100%

Highest Scorer :

Nafeesa Huda D/o Mohammed Ansar Damda Abu 4333/4800 90.2%

Principal : (Mrs. Raisa Shaikh)